सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 168, नई दिल्ली, मंगलवार 26 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सबसे कठिन काम है कार्य करने का निर्णय लेना, बाकी सब केवल दृढ़ता है...

03 छात्रों के साथ हुई गुंडागर्दी बताती है कि देश में लोकतंत्र की जगह भाजपा का दमन-तंत्र चल रहा है- आतिशी

06 जेईई मेन और जेईई एडवांस के बीच अंतर

08 पार्टी फंड हड़पने के लिए नवीन के साथ साये की तरह रह रहे हैं पांडियन : बीजेपी बिधायक

राष्ट्रीय खेल महोत्सव 2025 के उपलक्ष्य में,

राष्ट्रीय खेल महोत्सव 2025 के उपलक्ष्य में पीईएफआई (PEFI), युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में राष्ट्रीय गौरव के लिए सवारी।

प्रयागराज से दिल्ली, कानपुर, झांसी, ग्वालियर और आगरा होते हुए - 24 अगस्त से 31 अगस्त तक,

अमर हॉकी आइकन मेजर ध्यानचंद जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए।

आइये विरासत के लिए आगे बढ़ें, आइये भारत के लिए आगे बढ़ें।

हम 31 अगस्त को सुबह 7:30 बजे मेजर ध्यानचंद स्टेडियम, इंडिया गेट पर ग्रैंड फिनाले के लिए दिल्ली पहुंच रहे हैं... हमसे जुड़ें

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टॉल : 2000
कॉर्नर साइड स्टॉल : 3500
तीन साइड ओपन स्टॉल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट × 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
* लाइट व पार्किंग पास

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

शिल्पी सम्मेलन एंड हैरिटेज उत्सव 2025 कर रहा लोगों को आकर्षित

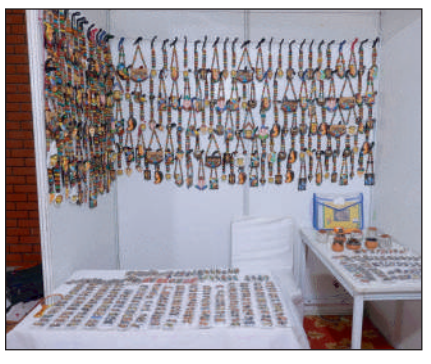

रक्षा द सेवियर की ओर से प्रस्तुत

गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर की ओर से
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है—
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें :
- पुराने कपड़े
- पुराने कंबल
- पुराने जूते-चप्पल
- बच्चों के लिए बैग
- किताबें

आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान :
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

विशेष सूचना
नवरात्रि में माता‌रानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
- दशहरे के दूसरे दिन
- दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
- स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड

स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

संपर्क सूत्र :
इंदु राजपूत – 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

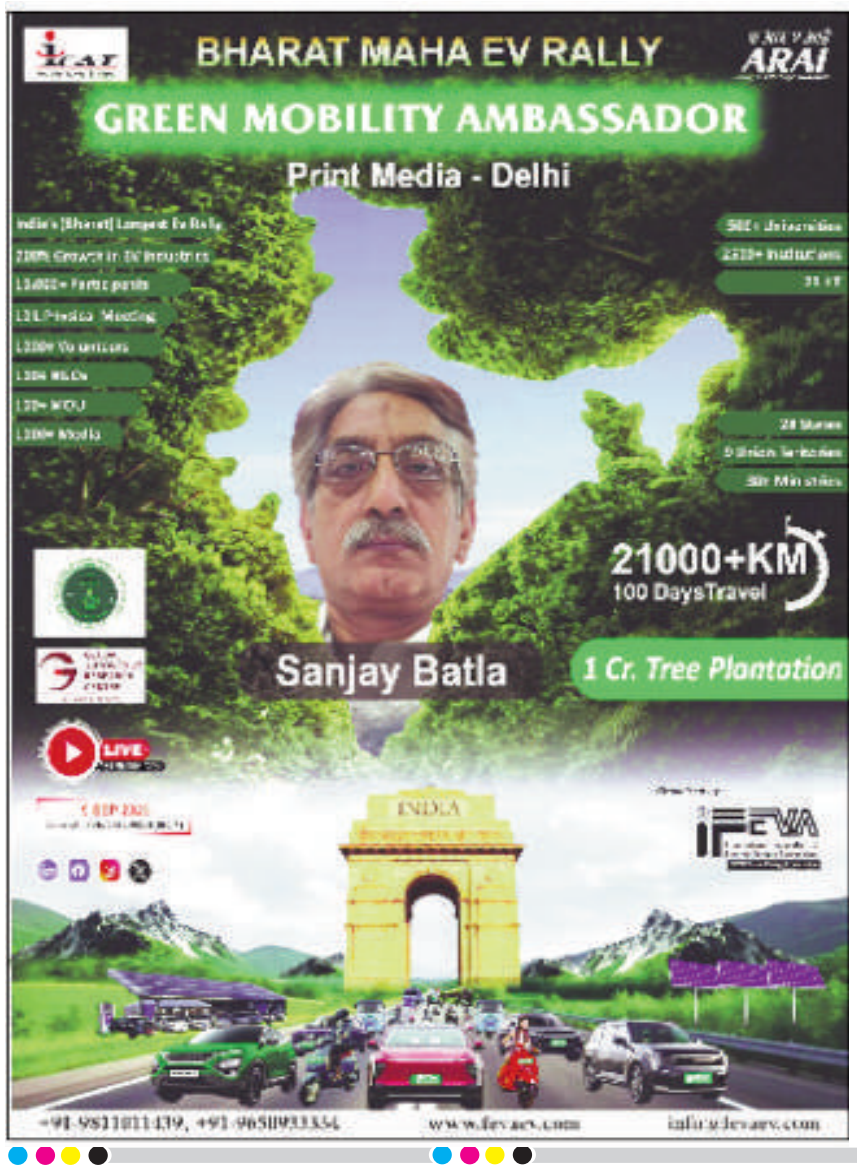

एमसीडी कर्मचारियों अनुराग (एम टी एस) और गजेन्द्र पाल (एस एस/एल आई) के खिलाफ सख्त कार्रवाई के लिए एमडी, एसडीएम पश्चिम दिल्ली, और एसएचओ को शहीद भगत सिंह कालोनी की जनता ने दी लिखित शिकायत

शहीद भगत सिंह कालोनी की जनता ने भाजपा मुख्यालय में वार्ड नंबर 92, पंजाबी बाग की निगम पार्षद और उसके पति के खिलाफ सख्त कार्रवाई के लिए दी लिखित शिकायत

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में हमारी लोकप्रिय और आदरणीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी ने 1 अगस्त से 31 अगस्त तक स्वच्छ दिल्ली अभियान की शुरुआत की है। पार्टी बहुत अच्छा काम कर रही है, लेकिन बड़े दुःख के साथ आपको सूचित करना पड़ रहा है कि वार्ड नंबर 92, पंजाबी बाग वार्ड, जहाँ 1040 फ्लैट (1984 दंगा कॉलोनी), शहीद भगत सिंह कॉलोनी, शिवाजी एन्क्लेव, दिल्ली 110027 आते हैं, हमारे पार्षद ने अभी तक कॉलोनी में कोई काम नहीं करवाया है।

जब भी हम उनसे अनुरोध करते हैं, तो उनका जवाब होता है कि चूँकि उन्हें इस क्षेत्र से वोट नहीं मिले, इसलिए यहाँ कोई काम नहीं करेंगी। इसके अलावा, उनके पति लोगों से बदतमीजी से कहते हैं कि कोई काम नहीं होगा, और जहाँ चाहें शिकायत लिखवा सकते हैं। हमारे लोकप्रिय विधायक श्री कैलाश गंगवाल जी ने यहाँ सफाई का काम शुरू करवाया था, लेकिन उसे भी रोक / रुकवा दिया गया। पार्षद झुग्गी-झोपड़ियों और स्लम कालोनियों की पूरी तरह अनदेखी कर रही हैं। ऐसे में जनता कहाँ जाए?

शुक्रवार को अपने पद का दुरूपयोग करते हुए वार्ड नंबर 92, पंजाबी बाग वार्ड, जहाँ 1040 फ्लैट (1984 दंगा कॉलोनी), शहीद भगत सिंह कॉलोनी, शिवाजी एन्क्लेव में सफाई की आवाज उठाने वालों को एमसीडी भवन विभाग के कर्मचारियों से धमकी दिलवाई की तुम्हारी दुकानों और आफिस पर जो यह शेड लगे हैं इन्हें तोड़ देंगे क्योंकि यह इंक्रोचमेंट (अनाधिकृत कब्जा) एक्ट में आता है।

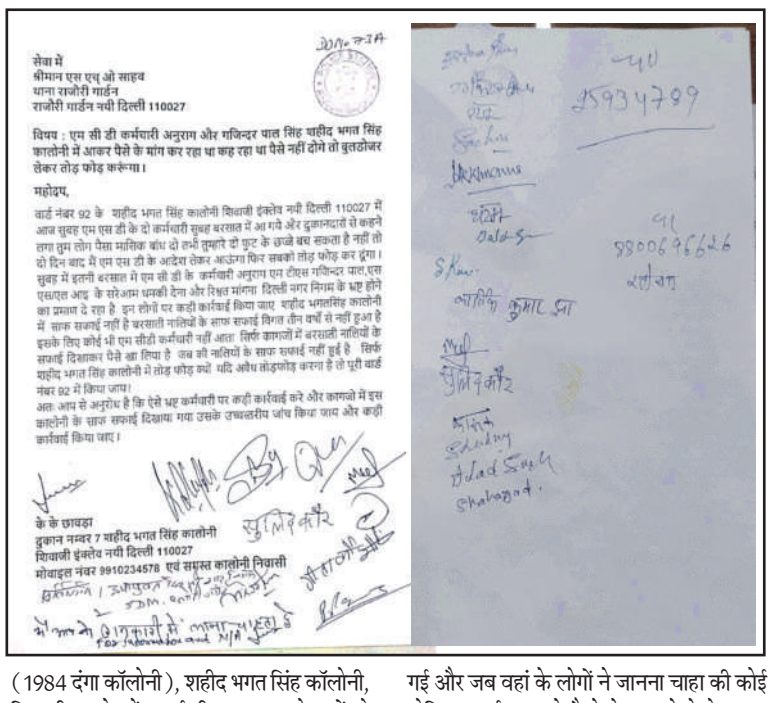

सेवा में
श्रीमान एस एच ओ साहब
थाना राजौरी गार्डन
राजौरी गार्डन नयी दिल्ली 110027

विषय : एम सी डी कर्मचारी अनुराग और गजिन्दर पाल सिंह शहीद भगत सिंह कालोनी में आकर पैसे के मांग कर रहा था कह रहा था पैसे नहीं दोगे तो बुलडोजर लेकर तोड़ फोड़ करेंगा।

महोदय,

वार्ड नंबर 92 के शहीद भगत सिंह कालोनी शिवाजी इंक्लेव नयी दिल्ली 110027 में आज सुबह एम एस डी के दो कर्मचारी सुबह बरसात में आ गये और दुकानदारों से कहने लगा तुम लोग पैसा मासिक बांध दो तभी तुम्हारे दो फुट के छज्जे बच सकता है नहीं तो दो दिन बाद में एम एस डी के आदेश लेकर आऊंगा फिर सबको तोड़ फोड़ कर दूंगा। सुबह में इतनी बरसात में एम सी डी के कर्मचारी अनुराग एम टीएस गजिन्दर पाल,एस एस/एल आई के सरेआम धमकी देना और रिश्वत मांगना दिल्ली नगर निगम के भ्रष्ट होने का प्रमाण दे रहा है इन लोगों पर कड़ी कार्रवाई किया जाए शहीद भगतसिंह कालोनी में साफ सफाई नहीं है बरसाती नालियों के साफ सफाई विगत तीन वर्षों से नहीं हुआ है इसके लिए कोई भी एम सीडी कर्मचारी नहीं आता सिर्फ कागजों में बरसाती नालियों के सफाई दिखाकर पैसे खा लिया है जब की नालियों के साफ सफाई नहीं हुई है सिर्फ शहीद भगत सिंह कालोनी में तोड़ फोड़ क्यों यदि अवैध तोड़फोड़ करना है तो पूरी वार्ड नंबर 92 में किया जाए।
अतः आप से अनुरोध है कि ऐसे भ्रष्ट कर्मचारी पर कड़ी कार्रवाई करे और कागजों में इस कालोनी के साफ सफाई दिखाया गया उसके उच्चस्तरीय जांच किया जाय और कड़ी कार्रवाई किया जाए।

के के छाबड़ा
दुकान नम्बर 7 शहीद भगत सिंह कालोनी
शिवाजी इंक्लेव नयी दिल्ली 110027
मोबाइल नंबर 9910234578 एवं समस्त कालोनी निवासी

उसके बाद फोन द्वारा भी यही धमकी जारी रखवाई गई और जब वहां के लोगों ने जानना चाहा की कोई नोटिस या पूर्व सूचना के कैसे तोड़ सकते हो तो उसका कहना था हम कुछ भी कर सकते हैं। या तो अभी के अभी उतरवा लो या फिर बड़े नुकसान के लिए तैयार हो जाओ और यह सब किया और करवाया जा रहा है निगम पार्षद और उनके पति के कहने पर।

आज सोमवार सुबह ही दो अन्य विभाग के कर्मचारियों के साथ आकर दुकानदारों से सेवा शुल्क की मांग कर दी और नहीं तो बुलडोजर मगवा कर तोड़ने की धमकी।

कालोनी की जनता के इकट्ठे होने पर झूठी शिकायत पुलिस स्टेशन राजौरी गार्डन में करवादी और वहां के गर्म माहौल को देख कर पुलिस फोर्स के साथ आने की धमकी देकर चला गया।

कालोनी की जनता जब क्षेत्र के डीएम को इस बाबत लिखित और मौखिक शिकायत करने पहुंची तो ना तो डीएम से और ना ही एसडीएम से उनकी मुलाकात हो पाई पर बिल्डिंग विभाग के अधिकारी भार्गव से आमना सामना हुआ तो पता चला की इन सभी हरकतों को करवाने में पार्षद और उनके पति के साथ यह अधिकारी भार्गव भी शामिल हैं।

क्षेत्र की जनता द्वारा लिखित शिकायत डीएम, एसडीएम और एसएचओ राजौरी गार्डन को दी और इन सभी के खिलाफ कार्यवाही की मांग की।

क्षेत्र में माहौल गर्म है और कोई भी ऐसी हरकत माहौल को और बिगाड़ सकती है इस लिए डीएम को तत्काल प्रभाव से इन कर्मचारियों के खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिए।

क्षेत्र की जनता की मांग भाजपा मुख्यालय से है की ऐसी पार्षद के खिलाफ पार्टी सख्त कार्रवाई करे और जनता से दुर्व्यवहार करने और अपने पद का दुरूपयोग के साथ पति को भेज जनता को परेशान करने के एवज मे इस्तीफा दिलवाया जाए।

के.के. छाबड़ा अध्यक्ष, सर्व धर्म मित्र मंडल, दिल्ली प्रदेश (रजि.)

हरितालिका तीज आज

हरितालिका तीज एक पावन और भावनात्मक पर्व है, जो भगवान शिव और माता पार्वती के दिव्य मिलन का प्रतीक माना जाता है। यह पर्व विशेष रूप से महिलाओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। हर साल भाद्रपद शुक्ल तृतीया के दिन मनाया जाने वाला यह त्योहार इस बार 26 अगस्त को पूरे श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाएगा। इस दिन विवाहित महिलाएं निर्जला व्रत रखती हैं और अपने पति की लंबी उम्र, सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। वहीं, कई कुंवारी कन्याएं भी उत्तम वर की प्राप्ति के लिए यह व्रत करती हैं। आज के समय में कई पुरुष भी अपनी पत्नियों के साथ यह व्रत रखकर इस पर्व की भावना को और मजबूत बना रहे हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार, इसी दिन माता पार्वती ने कठोर तपस्या कर शिवजी को अपने जीवनसाथी के रूप में प्राप्त किया था। यही कारण है कि यह व्रत स्त्री-शक्ति, श्रद्धा और अटूट प्रेम का प्रतीक बन गया है।

हरतालिका तीज पर बन रहे 4 शुभ योग

==========

हरितालिका तीज पर सर्वार्थ सिद्धि, शोभन, गजकेसरी और पंचमहापुरुष जैसे चार शुभ योग बन रहे हैं। इस व्रत का बहुत महत्व है। परंपरा के अनुसार, हरितालिका तीज का व्रत सौभाग्यवती महिलाओं के लिए अखंड सुहाग का प्रतीक माना जाता है। यह व्रत उनके पति के लंबे जीवन और वैवाहिक सुख-समृद्धि की कामना के साथ रखा जाता है। वहीं, अविवाहित कन्याएं इस व्रत को मनचाहा और योग्य वर पाने की कामना से करती हैं। माना जाता है कि इस व्रत की श्रद्धा और निष्ठा से की गई उपासना का फल जरूर मिलता है।

हरतालिका तीज व्रत का पारण कब करें

==========

हरतालिका तीज का पर्व शिव-पार्वती के अलौकिक प्रेम की स्मृति में मनाया जाता है और यह विशेष रूप से स्त्रियों के लिए अत्यंत श्रद्धा और आस्था का पर्व है। इस वर्ष यह व्रत 26 अगस्त को रखा जाएगा और पारण 27 अगस्त को किया जाएगा।

तीज व्रत में रंगों का महत्व

==========

हरितालिका तीज में रंगों का भी विशेष महत्व है। इस दिन महिलाएं पारंपरिक श्रृंगार करती हैं और शुभ रंगों के वस्त्र धारण करती हैं। लाल रंग देवी पार्वती का प्रिय है, जो प्रेम और शक्ति का प्रतीक है।

हरा रंग हरियाली और समृद्धि का संकेत देता है, जबकि गुलाबी रंग सौम्यता और आपसी समझ का प्रतीक माना जाता है, विशेष रूप से उन दंपतियों के लिए जिनके बीच कोई मतभेद हो। इसके विपरीत, काला, नीला, सफेद और क्रीम रंग वर्जित माने जाते हैं।

हरतालिका तीज की पूजा विधि

==========

हरितालिका तीज के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि से निवृत हो जाएं। इसके बाद साफ-सुथर विशेषकर हरे या फिर रंग के कपड़े पहनें। पूजा स्थल पर चौकी बिछाकर उसपर हरे या लाल रंग का साफ कपड़ा बिछाएं। इसके बाद स्वयं द्वारा बनाई गई माता पार्वती और भगवान शिव की मिट्टी की मूर्ति और शिवलिंग स्थापित करें। सबसे पहले विधि-विधान से गणेश जी का पूजा करें और इसके बाद गौरी-शंकर की पूजा-अर्चना करें और भोग अर्पित करें। माता गौरी को 16 श्रृंगार की सामग्री चढ़ाएं और हरतालिका तीज व्रत कथा सुनें। अंत में आरती करते हुए सभी लोगों में प्रसाद बांटें।

इस तरह करें श्रृंगार

==========

पूजा के दौरान माता पार्वती का सोलह श्रृंगार करना बहुत ही शुभ माना जाता है। इसके लिए सबसे पहले सिंदूर माता को सिंदूर अर्पित करना चाहिए और इसके बाद काजल लगाना चाहिए। अब माता को चूड़ियां चढ़ाएं और लाल चुनरी ओढ़ाएं। अब माता पार्वती को महावर लगाएं और अन्य श्रृंगार की सामग्री जैसे बिछिया, मेहंदी आदि अर्पित करें।

हरतालिका तीज व्रत कथा

==========

पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार कैलाश पर्वत पर माता पार्वती ने भगवान शिव से पूछा कि उन्हें ऐसा कौन-सा पुण्य मिला, जिससे वे शिव को पति रूप में प्राप्त कर सकीं। इस पर भगवान शिव ने उन्हें उनकी ही तपस्या की स्मृति दिलाई। माता पार्वती ने बचपन से ही शिव को अपने मन में पति रूप में स्वीकार कर लिया था और इसी संकल्प के साथ उन्होंने 12 वर्षों तक कठोर तप किया। उन्होंने जंगल में रहकर पेड़ों के पत्ते खाए, अन्न का त्याग किया और हर मौसम की कठिनाइयों को सहा। उनके इस तप को देखकर उनके पिता, हिमालय राज चिंतित हो उठे। उसी समय नारद ऋषि भगवान विष्णु का रिश्ता लेकर आए, जिसे हिमालय राज ने स्वीकार कर लिया। जब पार्वती जी को यह बताया गया, तो वे अत्यंत दुखी हुईं और अपने मन की बात सखियों से साझा की। उन्होंने कहा कि वे तो पहले ही भगवान शिव को पति रूप में स्वीकार कर चुकी हैं और किसी और से विवाह नहीं करेंगी। यह सुनकर सखियों ने उनका अपहरण कर लिया और उन्हें एक गुफा में छुपा दिया। वहीं पार्वती जी ने भाद्रपद शुक्ल तृतीया को हस्त नक्षत्र में मिट्टी से शिवलिंग बनाकर शिव जी की आराधना की और रातभर जागरण किया। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर शिव जी प्रकट हुए और उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार कर लिया। तब से यह व्रत उन महिलाओं द्वारा रखा जाता है जो अपने पति की लंबी उम्र और सुखद वैवाहिक जीवन की कामना करती हैं, और अविवाहित कन्याएं योग्य वर पाने की इच्छा से यह उपवास करती हैं।

पारंपरिक हिंदू मंदिर में प्रवेश करते ही एक गहरी शांति, सकारात्मक ऊर्जा और मानसिक स्थिरता का अनुभव

क्या आपने कभी किसी पारंपरिक हिंदू मंदिर में प्रवेश करते ही एक गहरी शांति, सकारात्मक ऊर्जा और मानसिक स्थिरता का अनुभव किया है? यह केवल धार्मिक आस्था का प्रभाव नहीं होता, बल्कि इसके पीछे एक गहन विज्ञान और ब्रह्मांडीय गणना छिपी होती है। हिंदू मंदिरों को वास्तु शास्त्र, खगोल विज्ञान, गणित, ध्वनि विज्ञान और ऊर्जा सिद्धांतों के आधार पर इस तरह निर्मित किया जाता है कि वे न केवल पूजा के स्थान बनें, बल्कि आत्मिक शुद्धि और ब्रह्मांड से जुड़ाव का माध्यम बन सकें।

हर मंदिर की रचना के केंद्र में होता है वास्तु पुरुष मंडल। यह एक वर्गाकार ग्रिड होता है, जिसे 8x8 यानी 64 या 9x9 यानी 81 भागों में बाँटा जाता है। इन भागों को 'पद' कहते हैं, और हर पद किसी विशेष देवता के अधिकार में होता है। मध्य के पदों में ब्रह्मा का वास माना जाता है, जिसे 'ब्रह्मस्थान' कहा जाता है। यही वह स्थान होता है जहाँ गर्भगृह यानी मंदिर का केंद्रीय कक्ष होता है, जहाँ मुख्य मूर्ति स्थापित की जाती है। यहाँ ऊर्जा का प्रवाह सबसे तीव्र होता है और यही कारण है कि जब कोई श्रद्धालु वहाँ खड़ा होता है, तो उसे शारीरिक रूप से कंपन और मानसिक रूप से शांति का अनुभव होता है।

मंदिर की चारों दिशाओं पर भी विशेष देवताओं का शासन माना जाता है—जैसे पूर्व में इन्द्र, उत्तर में कुबेर, दक्षिण में यम, पश्चिम में वरुण, दक्षिण-पूर्व में अग्नि और उत्तर-पश्चिम में वायु। ये देवता अपनी-अपनी दिशा में विशेष ऊर्जा प्रवाहित करते हैं। मंदिर की रचना इस तरह होती है कि यह ऊर्जा गर्भगृह तक संतुलित रूप से पहुँचती है।

मंदिरों में प्रदक्षिणा करने की परंपरा भी इस ऊर्जा विज्ञान से जुड़ी हुई है। परिक्रमा हमेशा घड़ी की दिशा में की जाती है, जो ब्रह्मांड की प्राकृतिक ऊर्जा की दिशा के समान होती है। जब कोई व्यक्ति गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा करता है, तो उसके शरीर का हृदय चक्र गर्भगृह की ऊर्जा से जुड़ता है और वह धीरे-धीरे आंतरिक संतुलन और शांति की ओर बढ़ता है। यह एक प्रकार का चलित ध्यान होता है, जिसमें हर कदम आत्मा को उसके मूल स्रोत से जोड़ता है।

प्राचीन मंदिर केवल आस्था का केंद्र नहीं होते थे, बल्कि वे खगोलीय गणनाओं पर आधारित ऊर्जा केंद्र होते थे। जैसे कोणार्क का सूर्य मंदिर इस तरह निर्मित है कि सूर्य की किरणें विशेष दिन पर गर्भगृह तक पहुँचती हैं। चिदंबरम मंदिर में ब्रह्मांड की संरचना को ध्यान में रखकर नटराज की मूर्ति स्थापित की गई है, और मंदिर की दीवारों पर ब्रह्मांडीय कंपन का आकलन करने वाले श्लोक खुदे हुए हैं। तंजावुर का बृहदीश्वर मंदिर वास्तु और ध्वनि विज्ञान का अद्भुत उदाहरण है—इसका शिखर इतना ऊँचा होने पर भी उसकी छाया कभी जमीन पर नहीं पड़ती, और मंदिर के भीतर बोली गई कोई भी बात दीवारों से टकराकर प्रतिध्वनित होती है, जिससे मंत्रों की शक्ति कई गुना बढ़ जाती है।

मंदिरों का निर्माण स्थल भी ध्यानपूर्वक चुना जाता था। वे ऐसे स्थानों पर बनाए जाते थे जहाँ पृथ्वी की चुंबकीय ऊर्जा अधिक होती थी—जैसे नदियों के किनारे, पहाड़ियों की गोद में या ऊर्जा केंद्रों के पास। मंदिर का मुख्य द्वार सामान्यतः पूर्व दिशा में रखा जाता था ताकि सुबह की पहली सूर्य किरण सीधे गर्भगृह तक पहुँच सके। मंदिरों में जलकुंड, मंडप, घंटियां, दीप, धूप आदि सभी पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) के संतुलन को बनाए रखने के लिए होते थे। मंडपों की रचना इस तरह की जाती थी कि वहाँ उच्चारण किए गए मंत्रों की ध्वनि गूंजे और शरीर के भीतर के नाड़ियों व चक्रों पर प्रभाव डाले।

प्राचीन काल में मंदिर केवल धार्मिक गतिविधियों का केंद्र नहीं थे। वे ज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा, योग और ध्यान के केंद्र होते थे। यहाँ ध्वनि चिकित्सा, प्राकृतिक उपचार और ऊर्जा संतुलन की विधियों द्वारा मानसिक और शारीरिक रोगों का उपचार किया जाता था। ये मंदिर अपने आप में विश्वविद्यालयों जैसे थे, जहाँ विज्ञान, खगोलशास्त्र, संगीत, कला और दर्शन की शिक्षा दी जाती थी।

इसलिए जब भी आप किसी मंदिर में जाएँ, तो केवल मूर्ति के दर्शन करके लौट न आएँ। मंदिर की बनावट को महसूस करें, उसकी संरचना को समझें, उसकी दिशाओं और ऊर्जा को आत्मसात करें। यह केवल पत्थर और मूर्तियों की रचना नहीं, बल्कि एक जीवंत विज्ञान है—जो आज भी सनातन धर्म की गहराई और वैज्ञानिकता का प्रमाण देता है। मंदिर को महसूस कीजिए, वह आपके शरीर से नहीं, आपकी आत्मा से संवाद करता है।

श्री राम नाम की महिमा

भगवान श्री शंकर जी देवी पार्वती से कहते हैं –

(स्कन्दपुराण, नागरखण्ड)

"राम' यह दो अक्षर मन्त्र जपने पर समस्त पापों का नाश करता है। चलते, खड़े हुए अथवा सोते (जिस किसी भी समय) जो मनुष्य राम नाम का कीर्तन करता है, वह यहाँ कृत कार्य होकर जाता है और अन्त में भगवान हरि का पार्षद बनता है 'राम' यह दो अक्षर का मन्त्र शत कोटि मन्त्रों से भी अधिक महत्त्व रखता है।

राम नाम से बढ़कर जगत में जप करने योग्य कुछ भी नहीं है। जिन्होंने राम नाम का आश्रय लिया है, उनको यमयातना नहीं भोगनी पड़ती।

जो मनुष्य अन्तरात्मस्वरूप से राम नाम का उच्चारण करता है, वह स्थावर-जंगम सभी भूत प्राणियों में रमण करता है। 'राम' यह मन्त्रराज है, यह भय तथा व्याधि का विनाश करने वाला है।

'रामचन्द्र', 'राम', 'राम'-इस प्रकार उच्चारण करने पर यह दो अक्षर का मन्त्रराज पृथ्वी के समस्त कार्यों को सफल करता है। गुणों की खान इस राम नाम का देवता लोग भी भलीभाँति गान करते हैं।

हे देवेश्वरि ! अतएव तुम भी सदा राम नाम का उच्चारण किया करो। राम नाम का जप करता है, वह सारे पापों (पूर्वकृत एवं वर्तमान कृत सूक्ष्म और स्थूल पापों से और समस्त पाप वासनाओं से सदा के लिये) छूट जाता है।

विष्णोरेकैकनामापि सर्ववेदाधिकं मतम्।
तादृङ्नामसहस्त्रेण रामनाम समं स्मृतम्॥

(पद्मपुराण)

'भगवान विष्णु का एक-एक नाम भी सम्पूर्ण वेदों से अधिक माहात्म्य शाली माना गया है। ऐसे एक सहस्र नाम के तुल्य राम नाम कहा गया है।'

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने॥

(पद्मपुराण)

'भगवान शंकर कहते हैं- 'मेरे मन में रमने वाली सुमुखि शिवे ! मैं 'राम, राम, राम' इस प्रकार कीर्तन करता हुआ राम में ही रमता हूँ। दूसरे सहस्र नाम के समान एक राम नाम की महिमा है।'

सीताराम सीताराम,
नमः पार्वती पतये हर हर महादेव

कष्ट हमें उस चीज से होता हैं, जो हमें नहीं मिली, हमें आशा है कि यदि वह मिल जाये तो हमें सुख मिलेगा।

इसलिए गरीब व्यक्ति हमेशा आशा में होता है कि सुख मिलेगा, आज नहीं है तो कल मिलेगा, कल नहीं तो परसों। इस जन्म में नहीं, तो अगले जन्म में मिलेगा, मगर सुख मिलेगा। इस आशा में, भीतर एक थिरकन बनी रहती है। हमें कितना ही कष्ट हो, अभाव हो, वह हम झेल लेतें हैं, कल की आशा के सहारे। भले आज कष्ट है, कल सुख होगा। बस आज भर को गुजार देना है। कल की आशा हमें खींचे लिए चली जाती है। कालांतर में जब एक दिन यही व्यक्ति अमीर हो जाता है। अमीर से मतलब, जो-जो हमने सोचा/चाहा था, कभी आशा की थी, वह सब आज हाथ में आ जाये, तब वह 'आशा' गिर जाती है। जब कल की कामना न रही, तो आज बीतना भारी हो जाता है। इस जगत में इससे बड़ी और कोई दुर्घटना नहीं हो सकती, जब कल की आशा गिर जाती है। तब तत्क्षण मन फ्रस्ट्रेशन/विषाद/विक्षिप्तता से भर जाता है। होश रहे कि हमने अपने जीवन को वर्तमान में कभी जीया ही नहीं। हम तो सदैव या तो बीते हुए कल की याद में रहे या फिर आने वाले कल की चाह में रहें हैं। हमने इतनी आशाएं बांधी, इतने सपने देखे, आज जब वह सब तिरोहित हो जायें तो यह जीवन व्यर्थ लगने लगता है। ध्यान रहे कि गरीब व्यक्ति कष्ट में होता है, दुख में नहीं होता और अमीर आदमी कष्ट में नहीं होता, वह दुख में होता है। 'कष्ट' का अर्थ है 'अभाव' और 'दुख' का मतलब है, 'भाव'। भले ही देखने में हमें 'दुख' और 'कष्ट' समानार्थी लगतें हों लेकिन हैं बिल्कुल विपरीत। 'दुख' समृद्ध व्यक्ति का लक्षण है और 'कष्ट' गरीब आदमी का लक्षण है। दुख आंतरिक हताशा है और कष्ट बाहरी अभाव। जब हाथ में कोहिनूर भी आ जाता है तो वह सिर्फ पत्थर का एक टुकड़ा ही मालूम पड़ता है। अब आगे कोई आशा नहीं दिखायी पड़ती। वास्तव में 'धन' हमें बहुत बड़े विषाद में खड़ा कर देता है, हमें हमारे 'कष्ट' से 'दुख' में गिरा देता है।

जिंदगी - ये कैसा सफर

एक प्रोफेसर अपनी क्लास में कहानी सुना रहे थे, जोकि इस प्रकार है–

एक बार समुद्र के बीच में एक बड़े जहाज पर बड़ी दुर्घटना हो गयी। कप्तान ने शिप खाली करने का आदेश दिया। जहाज पर एक युवा दम्पति थे। जब लाइफबोट पर चढ़ने का उनका नम्बर आया तो देखा गया नाव पर केवल एक व्यक्ति के लिए ही जगह है। इस मौके पर आदमी ने औरत को धक्का दिया और नाव पर कूद गया।

डूबते हुए जहाज पर खड़ी औरत ने जाते हुए अपने पति से चिल्लाकर एक वाक्य कहा।

अब प्रोफेसर ने रुककर स्टूडेंट्स से पूछा – तुम लोगों को क्या लगता है, उस स्त्री ने अपने पति से क्या कहा होगा? ज्यादातर विद्यार्थी फ़ौरन चिल्लाये – स्त्री ने कहा – मैं तुमसे नफरत करती हूँ!

प्रोफेसर ने देखा एक स्टूडेंट एकदम शांत बैठा हुआ था, प्रोफेसर ने उससे पूछा कि तुम बताओ तुम्हे क्या लगता है?

वो लड़का बोला – मुझे लगता है, औरत ने कहा होगा – हमारे बच्चे का ख्याल रखना!

प्रोफेसर को आश्चर्य हुआ, उन्होंने लडके से पूछा – क्या तुमने यह कहानी पहले सुन रखी थी?

लड़का बोला- जी नहीं, लेकिन यही बात बीमारी से मरती हुई मेरी माँ ने मेरे पिता से कही थी।

प्रोफेसर ने दुखपूर्वक कहा – तुम्हारा उत्तर सही है।

प्रोफेसर ने कहानी आगे बढ़ाई – जहाज डूब गया और स्त्री मर गयी, पति किनारे पहुंचा और उसने अपना बाकि जीवन अपनी एकमात्र पुत्री के समुचित लालन-पालन में लगा दिया। कई सालों बाद जब वो व्यक्ति मर गया तो एक दिन सफाई करते हुए उसकी लड़की को अपने पिता की एक डायरी मिली। डायरी से उसे पता चला कि जिस समय उसके माता-पिता उस जहाज पर सफर कर रहे थे तो उसकी माँ एक जानलेवा बीमारी से ग्रस्त थी और उनके जीवन के कुछ दिन ही शेष थे।

ऐसे कठिन मौके पर उसके पिता ने एक कड़ा निर्णय लिया और लाइफबोट पर कूद गया। उसके पिता ने डायरी में लिखा था – तुम्हारे बिना मेरे जीवन को कोई मतलब नहीं, मैं तो तुम्हारे साथ ही समंदर में समा जाना चाहता था। लेकिन अपनी संतान का ख्याल आने पर मुझे तुमको अकेले छोड़कर जाना पड़ा।

जब प्रोफेसर ने कहानी समाप्त की तो, पूरी क्लास में शांति थी।

इस संसार में कईयों सही गलत बातें हैं लेकिन उसके अतिरिक्त भी कई जटिलतायें हैं, जिन्हें समझना आसान नहीं। इसीलिए ऊपरी सतह से देखकर बिना गहराई को जाने-समझे हर परिस्थिति का एकदम सही आकलन नहीं किया जा सकता।

कलह होने पर जो पहले माफ़ी मांगे, जरुरी नहीं उसी की गलती हो, हो सकता है वो रिश्ते को बनाये रखना ज्यादा महत्वपूर्ण समझता हो।

दोस्तों के साथ खाते-पीते, पार्टी करते समय जो दोस्त बिल पे करता है, जरुरी नहीं उसकी जेब नोटों से ठसाठस भरी हो, हो सकता है उसके लिए दोस्ती के मायने पैसों से अधिक अहमियत रखते हों।

जो लोग आपकी मदद करते हैं, जरुरी नहीं वो आपके एहसानों के बोझ तले दबे ही हों। वो आपकी मदद करते हैं क्योंकि उनके दिलों में दयालुता और करुणा का निवास है।

श्रीमल्लिकार्जुन

श्रीमल्लिकार्जुन ! एक ऐसा तीर्थ जहाँ मल्लिका अर्थात माता पार्वती और अर्जुन अर्थात भगवान भोलेनाथ दोनों सङ्ग ही विराजते हैं। यह एक ऐसा तीर्थ है जहाँ भगवान भोलेनाथ किसी भक्त को दर्शन देने नहीं गए थे, बल्कि अपने रूठे पुत्र को मनाने एक सामान्य पिता की तरह गए थे। भगवान भोलेनाथ और माता पार्वती वहाँ बिल्कुल माता-पिता के भाव के साथ ही विराजते हैं। इस कारण वहाँ का महात्म्य और बढ़ जाता है क्योंकि संतान के लिए माता-पिता को मना लेना ईश्वर को मनाने से ज्यादा सहज और आसान है।

आंध्रप्रदेश के श्रीशैल पर्वत पर अवस्थित मल्लिकार्जुन भगवान शिव का दूसरा ज्योतिर्लिंग है। यहाँ की कथा यह है कि माता-पिता से रूष्ट हो कर भगवान कार्तिकेय कैलाश त्याग कर इस स्थान पर रहने लगे थे। तब पुत्र को मनाने के लिए भगवान भोलेनाथ वहाँ गए, और लोककल्याण के हेतु लिंग स्वरूप में विराजमान हुए।

कुमार रुष्ट क्यों हुए थे? तो कथा वही है कि रूपहले किसका विवाह होऱ के विषय पर छिड़े द्वंद में पिता ने कहा कि जो पहले समस्त संसार की परिक्रमा कर के आएगा उसी का पहले विवाह कर देंगे। भगवान गणेश ने बुद्धि लगाई और संसार की परिक्रमा करने के स्थान पर माता-पिता की ही परिक्रमा कर विजेता हो गए। उधर भगवान कार्तिकेय जब परिक्रमा कर के लौटे तो देखा, अनुज का विवाह हो चुका है। वे रुष्ट हो गए। अब बेटा रुष्ट हो जाय तो उसके लिए माता-पिता क्या नहीं कर देते? अपने बेटे को मनाने पहुँचे मल्लिकार्जुन अपने हर भक्त को उसी दृष्टि से देखते हैं, उसकी पीड़ा को उसी भाव से हरते हैं।

इस कथा में जीवन के दो महत्वपूर्ण सूत्र हैं। पहला यह कि ईश्वर भी मानते हैं कि माता-पिता का स्थान समस्त संसार से ऊपर होता है। यदि वे प्रसन्न नहीं हैं तो समझिये आपके ईश्वर भी आप पर प्रसन्न नहीं हैं।

दूसरा यह ! कि माता-पिता का प्रेम उस संतान पर

अधिक होता है जो किसी भी क्षेत्र में पीछे छूट गया हो। और जब भगवान शिव और माता पार्वती तक ऐसा मानते हैं, तो सामान्य जन को भी अपने कम सफल बेटे के साथ अधिक स्नेह का भाव रखना चाहिये। मनुष्य को सबसे अधिक ऊर्जा माता-पिता के स्नेहपूर्ण व्यवहार से ही मिलती है।

विकिपीडिया बता रही है कि सातवाहन राजाओं के समय का एक अभिलेख है मन्दिर में, जिसके आधार पर कहा जाता है कि यह मंदिर ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में भी अवस्थित था। यह प्रमाण तो उनके लिए है जो साक्ष्य मांगते फिरते हैं, हमारा प्रमाण हमारे पुराण हैं जो कहते हैं कि महादेव वहाँ सतयुग से हैं। दक्षिण के मंदिरों पर आक्रांताओं के प्रहार तनिक कम हुए हैं, इसी कारण वहां सौंदर्य बचा हुआ है। मल्लिकार्जुन परिसर में असँख्य प्राचीन मूर्तियां, शिवलिंग और सुंदर कलाकारी वाले मन्दिर हैं जिनका एक एक स्तम्भ आप घण्टों निहार सकते हैं। आप अपने पूर्वजों की स्थापत्य कला और मूर्तिकला देख कर निहाल हो सकते हैं।

घने वन में विराजते हैं मल्लिकार्जुन महादेव ! रास्ते में 27 किलोमीटर आपको बाघों के लिए रिजर्व क्षेत्र के बीच से गुजरना होता है। मतलब भोले बाबा के सारे गण उपस्थित हैं उस क्षेत्र में। अन्य तीर्थस्थलों की अपेक्षा शान्ति है वहाँ तो जब भी संभावना बने, घूम आइये जगतपिता की देहरी से... वे सदैव आपके साथ हैं।

भगवान शिव को अत्यंत प्रिय वस्तुएं

भगवान शिव तुरंत और तत्काल प्रसन्न होने वाले देवता हैं। इसीलिए उन्हें आशुतोष कहा जाता है। भगवान शिव को प्रिय 11 ऐसी सामग्री जो अर्पित करने से भोलेनाथ हर कामना पूरी करते हैं। यह 11 सामग्री हैं : जल, बिल्वपत्र, आंकड़ा, धतूरा, भांग, कर्पूर, दूध, चावल, चंदन, भस्म, रुद्राक्ष .....

जल : शिव पुराण में कहा गया है कि भगवान शिव ही स्वयं जल हैं शिव पर जल चढ़ाने का महत्व भी समुद्र मंथन की कथा से जुड़ा है। अग्नि के समान विष पीने के बाद शिव का कंठ एकदम नीला पड़ गया था। विष की ऊष्णता को शांत करके शिव को शीतलता प्रदान करने के लिए समस्त देवी-देवताओं ने उन्हें जल अर्पित किया। इसलिए शिव पूजा में जल का विशेष महत्व है।

बिल्वपत्र : भगवान के तीन नेत्रों का प्रतीक है बिल्वपत्र। अतः तीन पत्तियों वाला बिल्वपत्र शिव जी को अत्यंत प्रिय है। प्रभु आशुतोष के पूजन में अभिषेक व बिल्वपत्र का प्रथम स्थान है। ऋषियों ने कहा है कि बिल्वपत्र भोले-भंडारी को चढ़ाना एवं 1 करोड़ कन्याओं के कन्यादान का फल एक समान है। भगवान के तीन नेत्रों का प्रतीक है बिल्वपत्र।

आंकड़ा :शास्त्रों के मुताबिक शिव पूजा में एक आंकड़े का फूल चढ़ाना सोने के दान के बराबर फल देता है।

धतूरा : भगवान शिव को धतूरा भी अत्यंत प्रिय है। इसके पीछे पुराणों मे जहां धार्मिक कारण बताया गया है वहीं इसका वैज्ञानिक आधार भी है। भगवान शिव को कैलाश पर्वत पर रहते हैं। यह अत्यंत ठंडा क्षेत्र है जहां ऐसे आहार और

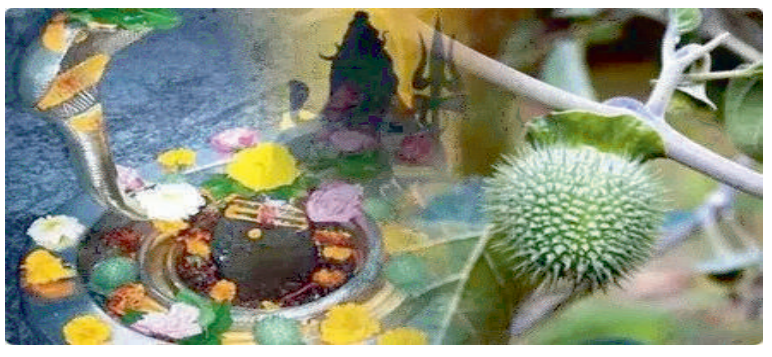

औषधि की जरुरत होती है जो शरीर को ऊष्मा प्रदान करे। वैज्ञानिक दृष्टि से धतूरा सीमित मात्रा में लिया जाए तो औषधि का काम करता है और शरीर को अंदर से गर्म रखता है। जबकि धार्मिक दृष्टि से इसका कारण देवी भागवत पुराण में बतया गया है। इस पुराण के अनुसार शिव जी ने जब सागर मंथन से निकले हलाहल विष को पी लिया तब वह व्याकुल होने लगे तब अश्विनी कुमारों ने भांग, धतूरा, बेल आदि औषधियों से शिव जी की व्याकुलता दूर की। उस समय से ही शिव जी को भांग धतूरा प्रिय है। शिवलिंग पर केवल धतूरा ही न चढ़ाएं बल्कि अपने मन और विचारों की कड़वाहट भी अर्पित करें।

भांग : शिव हमेशा ध्यानमग्न रहते हैं। भांग ध्यान केंद्रित करने में मददगार होती है। इससे वे हमेशा परमानंद में रहते हैं। समुद्र मंथन में निकले विष का सेवन महादेव ने संसार की सुरक्षा के लिए अपने गले में उतार लिया।

भगवान को औषधि स्वरूप भांग दी गई लेकिन प्रभु ने हर कड़वाहट और नकारात्मकता को आत्मसात किया इसलिए भांग भी उन्हें प्रिय है। भगवान शिव को इस बात के लिए भी जाना जाता हैं कि इस संसार में व्याप्त हर बुराई और हर नकारात्मक चीज़ को अपने भीतर ग्रहण कर लेते हैं और अपने भक्तों की विष से रक्षा करते हैं।

कर्पूर :भगवान शिव का प्रिय मंत्र है कर्पूरगौरं करूणावतारं.... यानी जो कर्पूर के समान उज्जवल हैं। कर्पूर की सुगंध वातावरण को शुद्ध और पवित्र बनाती है। भगवान भोलेनाथ को इस महक से प्यार है अतः कर्पूर शिव पूजन में अनिवार्य है। दूध : श्रावण मास में दूध का सेवन निषेध है। दूध इस मास में स्वास्थ्य के लिए गुणकारी के बजाय हानिकारक हो जाता है। इसीलिए सावन मास में दूध का सेवन न करते हुए उसे शिव को अर्पित करने का विधान बनाया गया है।

अक्षत : चावल को अक्षत भी कहा जाता है और अक्षत का अर्थ होता है जो टूटा न हो। इसका रंग सफेद होता है। पूजन में अक्षत का उपयोग अनिवार्य है। किसी भी पूजन के समय गुलाल, हल्दी, अबीर और कुंकुम अर्पित करने के बाद अक्षत चढ़ाए जाते हैं। अक्षत न हो तो शिव पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती। यहां तक कि पूजा में आवश्यक कोई सामग्री अनुप्लब्ध हो तो उसके एवज में भी चावल चढ़ाए जाते हैं।

चंदन : चंदन का संबंध शीतलता से है। भगवान शिव मस्तक पर चंदन का त्रिपुंड लगाते हैं। चंदन का प्रयोग अक्सर हवन में किया जाता है और इसकी खुशबू से वातावरण और खिल जाता है। यदि शिव जी को चंदन चढ़ाया जाए तो इससे समाज में मान सम्मान यश बढ़ता है।

भस्म : इसका अर्थ पवित्रता में छिपा है, वह पवित्रता जिसे भगवान शिव ने एक मृत व्यक्ति की जली हुई चिता में खोजा है। जिसे अपने तन पर लगाकर वे उस पवित्रता को सम्मान देते हैं। कहते हैं शरीर पर भस्म लगाकर भगवान शिव खुद को मृत आत्मा से जोड़ते हैं। उनके अनुसार मरने के बाद मृत व्यक्ति को जलाने के पश्चात बची हुई राख में उसके जीवन का कोई कण शेष नहीं रहता। ना उसके दुख, ना सुख, ना कोई बुराई और ना ही उसकी कोई अच्छाई बचती है। इसलिए वह राख पवित्र है, उसमें किसी प्रकार का गुण-अवगुण नहीं है, ऐसी राख को भगवान शिव अपने तन पर लगाकर सम्मानित करते हैं। एक कथा यह भी है कि पत्नी सती ने जब स्वयं को अग्नि के हवाले कर दिया तो क्रोधित शिव ने उनकी भस्म को अपनी पत्नी की आखिरी निशानी मानते हुए तन पर लगा लिया, ताकि सती भस्म के कणों के जरिए हमेशा उनके साथ ही रहे।

F. No. 01-02/2025-Admn
Government of India
National Disaster Management Authority
NDMA Bhawan, A-1, Safdarjung Enclave, New Delhi-110029
Tel. No. 26701700

Advertisement for the position of Young Consultant in National Disaster Management Authority (NDMA) on contract basis.
NDMA invites applications from Indian national having requisite qualification and experience for following position:-

Sl. No.	Name of Position	Post in Nature	No. of Vacancy	Educational Qualification	Post Qualification Experience	Max. Age Limit
1.	Young Consultant for Mitigation Project	Contrac-tual	3 (Three)	Essential:- Post Graduate Degree in Disaster Management/ Mitigation (Full time degree for at least 2 years)	• Minimum 03 months of Internship/ work experience in relevant field. • Experience in Disaster Management/ Mitigation related subjects. • Field experience in the project with substantial use of disaster risk reduction and mitigation will be given more weightage in the selection process. • Both the educational qualifications and work experience must prove the credentials of the applicant as an established expert in the field.	35 Years for Young Consultant.

2. Remuneration Band : Rs. 35,000/- for Young Consultant, Remuneration in respect of retired Government employee engaged as a Consultant shall be regulated as per Ministry of Finance, Department of Expenditure O.M. No. 3-25/2020-E.III.A dated 09th December, 2020.
3. The detailed terms and conditions and eligibility criteria (educational qualifications, age, experience etc) for engagement of above position are indicated in the Term of References (ToR) and may be seen on NDMA website at http://ndma.gov.in.
4. Essential /desirable educational qualifications and experiences will be verified with original certificates.
5. Interested individuals may apply for the position online through NDMA website within 20 days from the date of publication of advertisement in the Employment News.
6. Applications will be considered only once applicants apply through NDMA job portal (http://ndma.gov.in). No other means of application will be considered. For any assistance to apply online, kindly call @ 9958136496/ 9873997934.

Important Note: Incomplete application will not be considered and NDMA reserves the right to reject such applications without assigning any reason.

(Abhishek Biswas)
Under Secretary (Admn)
EN 19/15

दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने दिल्ली में पर्यटन को बढ़ाने के लिए किया सेमिनार का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन नें दिल्ली में पर्यटन को बढ़ाने के लिए एक सेमिनार, स्पीकर हॉल, कंस्टीटूशन क्लब ऑफ़ इंडिया, रफ़ी मार्ग दिल्ली में किया.

इसमें मुख्य अतिथि श्री कपिल मिश्रा जी, पर्यटन मंत्री दिल्ली सरकार थे.

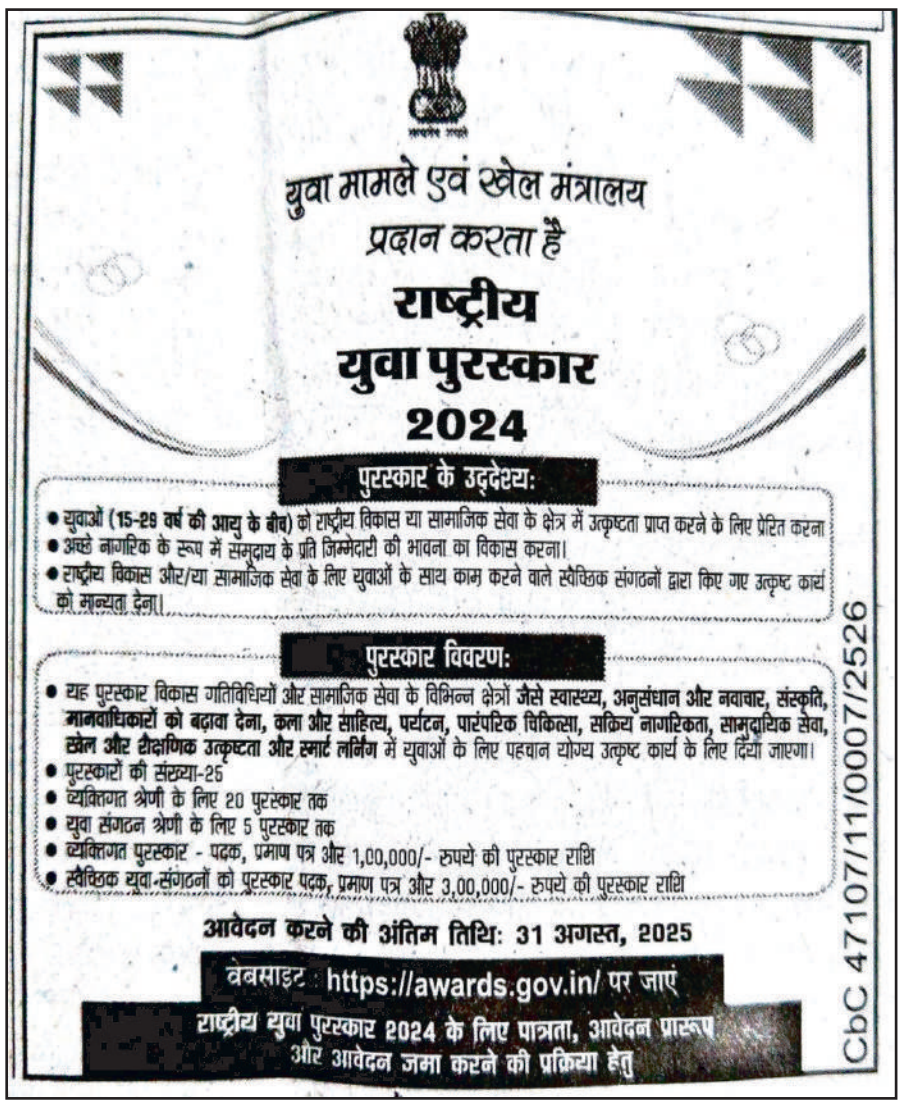

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री संजय सम्राट नें दिल्ली में पर्यटन को बड़ाने के काफी सुझाव पर्यटन मंत्री जी को दिए और टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स की समस्याओ से भी अवगत कराया.

संजय सम्राट नें मंत्री जी से शिकायत करी की 10 सालो से हम टैक्सी बसों में पैनिक बटन के नाम हो रहें भ्रष्टाचार से पीड़ति हैं. आज भी हमारी टैक्सी बसों वालो से 9000 से 22000 रुपए लिए जा रहें हैं. यें पैनिक बटन किसी तरह भी काम नहीं करता.

बल्कि इसमें भ्रस्टाचार की आवाज श्री वीरेंदर सचदेवा जी, अध्यक्ष, दिल्ली बीजेपी नें भी उठाई थी. लेकिन आज तक पेनिक बटन में हो रहें भ्रष्टाचार पर लगाम नहीं लगी.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के सीनियर मेंबर श्री अमरजीत सहगल नें आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की टैक्सी बसों में स्पीड लिमिट डिवाइस की शिकायत करी, अमरजीत सहगल का कहना हैं की हमारी टूरिस्ट टैक्सी बसों की 80 किलो मीटर प्रति घंटा हैं लेकिन प्राइवेट गाड़ियों की स्पीड 120 किलो मीटर प्रति घंटा हैं. इससे देसी विदेशी पर्यटको की जान माल का भी खतरा हैं.

संजय सम्राट नें BS 4 डीजल बसों को समय से पेहले बंद करने के मुद्दे को भी उठाया.

सम्राट का कहना एक तरफ तो सुपीम कोर्ट गाड़ियों की उम्र को 20 साल कर रहा हैं दूसरी तरफ कमिसन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट नें 1 नवम्बर 2026 से BS 4 डीजल आल इंडिया टूरिस्ट परमिट बसों को बंद करने का फरमान जारी कर दिया हैं.

जो को पूरी तरह अनूचित हैं.

सम्राट नें पर्यटन मंत्री श्री कपिल मिश्रा जी से मांग करी की CAQM के आदेश को निरस्त करवाया जाए.

आज टूरिज्म के सेमिनार में श्री कपिल मिश्रा जी नें ट्रांसपोर्टर्स को अस्वासन दिया की वो जल्दी ही इन समस्याओ से मुक्ति दिलवाएंगे.

उन्होंने ट्रांसपोर्टर्स को यें भी बोला की दिल्ली में कुछ नये पर्यटन स्थल बनाये जाएंगे.

बल्कि दिल्ली दर्शन में प्रधानमंत्री म्यूजियम को भी और नये संसद भवन को भी पर्यटको के लिए पूरी तरह खोला जाएगा.

और पर्यटको को पूरी साहूलित दिल्ली का पर्यटन विभाग देगा.

आज की मीटिंग में एसोसिएशन के और भी सदस्य शामिल थे जिनमे जेल सिंह, गुरमीत सिंह, दलजीत सिंह, विशाल जैन, मंजीत सिंह, जितेंदर सिंह, और समीर भारद्वाज.

श्री कपिल मिश्रा जी नें आज ट्रांसपोर्टर्स कीसमस्याओ को बड़े ध्यान से सुना. उन्होंने जल्दी ही एक मीटिंग दिल्ली की मुख्यमंत्री से भी कराने की बात की जिस से दिल्ली सरकार की मुख्यमंत्री के नेतृत्व मे एक मीटिंग श्री नितिन गडकरी जी भी हो सके. क्योकि स्पीड लिमिट डिवाइस और पैनिक बटन (व्हीकल लोकेशन ट्रैकिंग डिवाइस) यें दोनों मोटर व्हीकल एक्ट में आते हैं.

आज ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन नें अपनी मांगो का ज्ञापन भी श्री कपिल मिश्रा जी को भी दिया.

क्यूनेट ने प्रीमियम न्यूट्रीप्लस मोनोफ्लोरल शहद – रामतिल और तुलसी वेरिएंट्स को पेश करके भारत में अपने वेलनेस पोर्टफोलियो को और बड़ा कर लिया है

मुख्य संवाददाता

100% शुद्ध और बिना प्रोसेस किए हुए शहद के ये वेरिएंट, ग्रामीण मधुमक्खी पालने वालों से प्राप्त किए गए हैं, जो बेहतरीन स्वाद के साथ-साथ सेहत के लिए अनेक संभावित लाभों से भी भरपूर हैं।

विश्वस्तर पर सबसे बड़े रूप में काम करने वाली डायरेक्ट-सेलिंग कंपनियों में से एक क्यूनेट, ने अपने प्रीमियम प्रोडक्ट न्यूट्रीप्लस मोनोफ्लोरल शहद की रेंज भारत में पेश की है। इसमें दो बेहतरीन वेरिएंट - रामतिल (Guizotia abyssinica) और तुलसी (Holy Basil) हैं। ग्रामीण मधुमक्खी पालने वालों से नैतिक और बिना पर्यावरण को नुकसान पहुचाए तरीके से प्राप्त, ये शहद 100% शुद्ध, प्राकृतिक और बिना प्रोसेस किए हुए हैं, इनसे ग्राहकों को प्रामाणिक स्वाद के साथ संभावित स्वास्थ्य लाभ भी मिलते हैं।

मुख्य रूप से एक ही पराग (नेक्टर) स्रोत से प्राप्त, न्यूट्रीप्लस मोनोफ्लोरल शहद अपने प्राकृतिक पोषक तत्व और एंजाइम बनाए रखता है, इस कारण से यह प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने, रोजमर्रा की थकान को दूर करने और पूरे स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद कर सकता है। हर बैच का न्यूक्लियर मैग्नेटिक रेजोनेंस (NMR) परीक्षण होता है। यह दुनिया भर में मान्यता प्राप्त गोल्ड-स्टैंडर्ड परीक्षण है, इससे शहद की शुद्धता, प्रामाणिकता और कहां से आ रहा है, इस बात की जांच की जाती है।

न्यूट्रीप्लस रामतिल मोनोफ्लोरल शहद को रामतिल फूलों से मधुमक्खियों द्वारा जमा किए गए पराग से प्राप्त किया जाता है। यह मूल रूप से इथियोपिया का है और भारत के कुछ हिस्सों में उगाया जाता है। यह तिलहन फसल है और शहद को गहरा एम्बर रंग, भरपूर लेकिन हल्का नटी स्वाद और मिट्टी जैसी महक देती है। इस पराग को इसके खास स्वाद और सेहत से जुड़े संभावित फायदों के लिए महत्व दिया जाता है।

न्यूट्रीप्लस तुलसी मोनोफ्लोरल शहद को तुलसी के फूलों के पराग से प्राप्त किया जाता है। यह भारतीय स्वास्थ्य परंपराओं में बहुत सम्मान पाने वाले पौधे की पवित्र महक और गुणों को समेटे हुए है। इसमें हल्की हर्बल मिठास और सुहानी सी खुशबू होती है और यह फ्लैवोनॉइड्स और एंटीऑक्सिडेंट्स से भरपूर होता है। इसमें इम्युनिटी (प्रतिरक्षा प्रणाली) ठीक रखने, सांस से जुड़ी बीमारियों को दूर करने और तनाव कम करने में मददगार गुण होते हैं।

इस विशेष वेरिएंट की कीमत 4,160 रुपये है और इसे तीन (प्रत्येक 500 ग्राम) के सेट में पेश किया गया है। कई शहदों को व्यावसायिक रूप से प्रोसेस किया जाता है लेकिन न्यूट्रीप्लस मोनोफ्लोरल शहद को बिलकुल भी प्रोसेस नहीं किया जाता है।

क्यूनेट इंडिया ने अब न्यूट्रीप्लस मोनोफ्लोरल शहद को दो प्रीमियम वेरिएंट – रामतिल और तुलसी – में पेश किया है। ये केवल क्यूनेट इंडिया ईस्टोर पर उपलब्ध हैं। अभी खरीदें।

पम्मा ने जसविंदर भल्ला की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए फिल्मफेयर अवॉड्र्स जाने वाले कलाकारों की निंदा

मुख्य संवाददाता

नेशनल अकाली दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष परमजीत सिंह पम्मा ने मशहूर पंजाबी कलाकार जसविंदर भल्ला की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए पंजाबी इंडस्ट्री के कई कलाकारों की भी निंदा की है उन्होंने कहा बड़े दुख की बात है एक तरफ तो इतने मशहूर कलाकार जसविंदर सिंह भल्ला की मृत्यु पर कई कलाकार आंसू बहा रहे थे और शाम को ही पंजाबी फिल्मफेयर अवॉड्र्स 2025 में नाच गाना करके खुशियां मना रहे थे।

पम्मा ने कहा ऐसे कलाकारों ने यह साबित कर दिया है उनके लिए पंजाबी कलाकारों का परिवार पहले नहीं है उनके लिए पैसा और शोहरत पहले महत्वपूर्ण रखता है जबकि इस कार्यक्रम को अभी स्थगित करना चाहिए था।

दूसरी तरफ पंजाबी फिल्मफेयर अवॉड्र्स 2025 मीडिया से भी वहां पर जिस प्रकार का व्यवहार हुआ वह भी शर्मनाक घटना है। क्योंकि जिस हालत में पंजाबी इंडस्ट्री चल रही है उसको मीडिया के जरिए ही प्रचार करके लोगों के घरों तक पहुंच रहे हैं।

युवा मामले एवं खेल मंत्रालय
प्रदान करता है
राष्ट्रीय युवा पुरस्कार 2024

पुरस्कार के उद्देश्य:
• युवाओं (15-29 वर्ष की आयु के बीच) को राष्ट्रीय विकास या सामाजिक सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना
• अच्छे नागरिक के रूप में समुदाय के प्रति जिम्मेदारी की भावना का विकास करना।
• राष्ट्रीय विकास और/या सामाजिक सेवा के लिए युवाओं के साथ काम करने वाले स्वैच्छिक संगठनों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्य को मान्यता देना।

पुरस्कार विवरण:
• यह पुरस्कार विकास गतिविधियों और सामाजिक सेवा के विभिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, अनुसंधान और नवाचार, संस्कृति, मानवाधिकारों को बढ़ावा देना, कला और साहित्य, पर्यटन, पारंपरिक चिकित्सा, सक्रिय नागरिकता, सामुदायिक सेवा, खेल और शैक्षणिक उत्कृष्टता और स्मार्ट लर्निंग में युवाओं के लिए पहचान योग्य उत्कृष्ट कार्य के लिए दिया जाएगा।
• पुरस्कारों की संख्या-25
• व्यक्तिगत श्रेणी के लिए 20 पुरस्कार तक
• युवा संगठन श्रेणी के लिए 5 पुरस्कार तक
• व्यक्तिगत पुरस्कार - पदक, प्रमाण पत्र और 1,00,000/- रुपये की पुरस्कार राशि
• स्वैच्छिक युवा-संगठनों को पुरस्कार पदक, प्रमाण पत्र और 3,00,000/- रुपये की पुरस्कार राशि

आवेदन करने की अंतिम तिथि: 31 अगस्त, 2025
वेबसाइट https://awards.gov.in/ पर जाएं
राष्ट्रीय युवा पुरस्कार 2024 के लिए पात्रता, आवेदन प्रारूप और आवेदन जमा करने की प्रक्रिया हेतु
CbC 47107/11/0007/2526

अमरप्रीत कौर के घर पर सुखमनी साहिब जी का पाठ किया गया। सारी संगत ने शबद भी पढ़े और लंगर भी बाँटा।

"छात्रों के साथ हुई गुंडागर्दी बताती है कि देश में लोकतंत्र की जगह भाजपा का दमन-तंत्र चल रहा है"

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली के रामलीला मैदान में SSC परीक्षा में हुई गड़बड़ियों को ठीक करने की मांग को लेकर धरना दे रहे छात्रों पर भाजपा सरकार की दिल्ली पुलिस ने जमकर बर्बरता दिखाई। पुलिस के लाठीचार्ज की सोशल मीडिया पर वायरल हो रहीं तमाम वीडियो को साझा कर आम आदमी पार्टी के नेताओं ने भाजपा पर जमकर हमले किए। ₹आप₹ के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल, दिल्ली प्रदेश संयोजक सौरभ भारद्वाज, वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया और नेता प्रतिपक्ष आतिशी समेत अन्य वरिष्ठ नेताओं ने इसे भाजपा सरकार की तानाशाही और गुंडागर्दी बताया। आम आदमी पार्टी ने SSC छात्रों के साथ खड़े होने और उनकी हर संभव मदद का भरोसा दिया है।

उधर, ₹आप₹ मुख्यालय पर प्रेस वार्ता कर सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली में कई हफ्तों से चल रहा SSC स्टूडेंट्स का प्रदर्शन रविवार को रामलीला मैदान पर हो रहा था। कई हफ्तों से SSC छात्र और उनके टीचर अपनी आवाज उठा रहे हैं। वहां कुछ छात्र और उनके शिक्षक शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे। इनमें छोटी-छोटी लड़कियां, नौजवान लड़के और टीचर शामिल थे। लेकिन केंद्र सरकार के अधीन दिल्ली पुलिस ने बेहद शर्मनाक और प्रजातंत्र को कलंकित करने वाला कृत्य है। पुलिस ने पहले टेंट की लाइट काट दी, अंधेरा कर दिया, ताकि अंधेरे में बच्चों पर हमला किया जाए और कोई वीडियो न बन पाए। इसके बाद सादे कपड़ों में पुलिसवालों ने छात्रों के साथ बर्बरता की, मारा-पीटा। बच्चों ने अपने फोन की लाइट जलाकर वीडियो रिकॉर्ड किए, जो सोशल मीडिया पर वायरल हैं।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि मां-बाप अपने बच्चों को 12 साल स्कूल में पढ़ाते हैं ताकि बच्चा पढ़-लिखकर डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड अकाउंटेंट, क्लर्क, स्टेनो या एसएससी पास करके छोटी-मोटी सरकारी नौकरी पा ले। लोग गांव-कस्बों में अपनी सारी पूंजी ट्यूशन और कोचिंग में लगा देते हैं। बच्चे 12वीं पास करने के बाद 18-18 घंटे पढ़ाई करते हैं, नीट की परीक्षा देते हैं और पता चलता है कि नीट में संगठित धांधली हो रही है। यह कोई छोटी-मोटी चीटिंग नहीं, बल्कि सुनियोजित भ्रष्टाचार है। नालायक लोग डॉक्टर बनाए जा रहे हैं और लायक लोग बाहर कर दिए जा रहे हैं।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि SSC परीक्षाओं में भी यही हो रहा है। दो-चार साल से मेहनत करने वाले बच्चे बर्बाद होकर घर बैठे हैं और जिन्होंने पैसे देकर सांठगांठ की, वे बाबू और अफसर बन रहे हैं। देश का युवा सड़कों पर अपने हक के लिए लड़ रहा है, और भाजपा की केंद्र सरकार और दिल्ली पुलिस उन्हें डंडों-लाठियों से पीट रही है। यह बेहद शर्मनाक है।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि यहां तक कि आचार्य भिक्षु अस्पताल के डॉक्टर, जो सोचते थे कि भाजपा के विधायक से अंग्रेजी में बात हो जाएगी, वे भी पिटे और उनकी एफआईआर तक दर्ज नहीं हुई। पत्रकार भी नहीं बचे। जहां मौका मिला, पुलिस ने उन्हें भी पीटा। "आप" नेता भी कई बार पिटे। मार्शल भी पिटे, हम तो मंत्री रहते सड़क पर घसीटे गए।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि आज जो लोग चादर तानकर सो रहे हैं, वे समझ लें कि सबका नंबर आएगा। बीजेपी ने 1 अप्रैल 2025 से प्राइवेट स्कूलों की फीस 30-80 फीसद बढ़ाकर मिडिल क्लास को तोहफा दिया। एक भी स्कूल की ऑडिट रिपोर्ट पब्लिक नहीं की गई। एक भी स्कूल की फीस रोल बैक नहीं हुई। शिक्षा मंत्री आशीष सूद की टाउन हॉल में पेरेंट्स ने सवाल पूछे, तो उन्हें धमकाया गया। मंत्री सूद बोले, "मैंने टेंट लगाया, खाना खिलाया, तो मैं सुनाऊंगा, तुम्हारी नहीं सुनूंगा।" यह तानाशाही है। तानाशाही आने वाली नहीं है, बल्कि यही तानाशाही है। सबकी आवाज दबाई जा रही है। आम आदमी पार्टी SSC छात्रों के साथ हैं और उनकी हरसंभव मदद करेगी।

वरिष्ठ नेता और पंजाब के प्रभारी मनीष सिसोदिया ने एक्स पर कहा कि दिल्ली के रामलीला मैदान में भाजपा की 'लाठी-लीला'। SSC के छात्रों और शिक्षकों पर बेरहमी से लाठियाँ चलवाईं, उन्हें पकड़-पकड़ कर घसीटा। रोज़गार देने में सबसे पीछे, लेकिन युवाओं पर लाठियाँ बांटने में मोदी सरकार नंबर 1 है।

नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने एक्स पर कहा कि दिल्ली के रामलीला मैदान में SSC के छात्रों और शिक्षकों पर बीजेपी सरकार ने पुलिस के डंडे बरसवाए। सवाल पूछने वाले युवाओं को सुना नहीं गया, बल्कि उन्हें ज़मीन पर घसीट-घसीट कर पीटा गया। ये गुंदागर्दी बताती है कि देश में लोकतंत्र की जगह बीजेपी का दमन-तंत्र चल रहा है। सवाल पूछने वालों की आवाज़ ही कुचल दी जाती है। देश में बीजेपी की खुली तानाशाही चल रही है।

व्यक्ति के जीवन में व्याप्त तीनों तापों का नाश करती है श्रीमद्भागवत : भागवताचार्य कृष्ण गोपाल सुवेदी महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रुक्मणि विहार, सैक्टर-1 स्थित भक्ति धाम में भक्ति धाम वैलफेयर एंड चैरिटेबल ट्रस्ट, पटियाला/वृन्दावन के आठवें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में चल रहे अष्ट दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव में व्यासपीठ से विश्वविख्यात भागवताचार्य कृष्ण गोपाल सुवेदी महाराज ने अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा देश के विभिन्न प्रांतों से आए समस्त भक्त-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण की महिमा बताते हुए कहा कि श्रीमद्भागवत केवल एक ग्रंथ ही नहीं अपितु स्वयं अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण का वांग्मय स्वरूप है।इसके श्रवण करने से व्यक्ति के जीवन में व्याप्त तीनों तापों का नाश हो जाता है।साथ ही उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण विश्व में ऐसे धार्मिक आयोजन होते रहने चाहिए।इन्ही से प्राचीन भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति पल्लवित व पोषित होती है।श्रीधाम वृन्दावन की पावन भूमि वह दिव्य भूमि है,जहां जन-जन के आराध्य ठाकुर श्रीराधा-कृष्ण के चरण पड़े थे।इस दिव्य भूमि में श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा श्रवण करने से अन्य स्थानों की तुलना में शतगुणा अधिक फल प्राप्त होता है।

महोत्सव में भक्ति धाम वैलफेयर एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष के. एल. बंसल, उपाध्यक्ष नरेश गोयल, मुख्य सलाहकार डॉ. आर. के. गर्ग एवं महामंत्री संदीप कुमार सिंगला, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, राम शरण गुप्ता, कर्म चंद्र गोयल, अशोक बंसल, मुकेश बंसल, सुधीर सिंगला, रूपाली सिंगला आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

"शिक्षा, संस्कार और समाज की जिम्मेदारी : बदलते छात्र-शिक्षक संबंध और सही दिशा की तलाश"

आज शिक्षा केवल अंक और नौकरी तक सीमित हो गई है। नैतिक मूल्य और संस्कार बच्चों की प्राथमिकता से गायब होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप शिक्षक-छात्र संबंधों में खटास बढ़ रही है और अनुशासनहीनता सामने आ रही है। यदि परिवार, समाज, शिक्षक और प्रशासन मिलकर सही कदम नहीं उठाएँगे तो आने वाली पीढ़ी गलत दिशा में बढ़ सकती है। शिक्षा को केवल ज्ञान का माध्यम नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और जीवन-मूल्य का आधार बनाना होगा, तभी हम कह पाएंगे कि हमारे छात्र सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

प्रियंका सौरभ

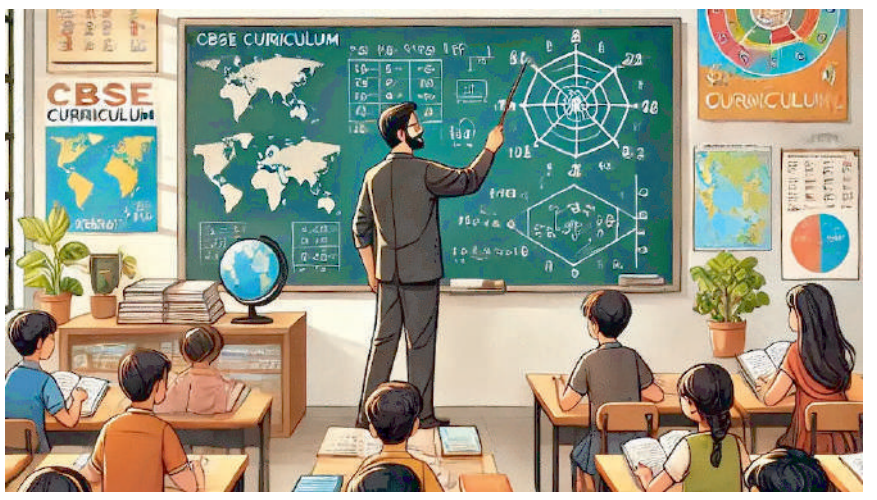

समाज का दर्पण कहलाने वाला विद्यालय आज एक गहरी चिंता का विषय बन गया है। जहाँ पहले शिक्षा का अर्थ केवल ज्ञान नहीं बल्कि संस्कार, अनुशासन और नैतिकता था, वहीं अब कुछ घटनाएँ यह सोचने पर मजबूर कर रही हैं कि हमारे छात्र आखिर किस दिशा में जा रहे हैं। हाल ही में हरियाणा के भिवानी जिले के ढाणा लाडनपुर गाँव के राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल में हुई घटना, जहाँ एक छात्र ने अपने ही शिक्षक पर हमला कर दिया, यह सवाल और गंभीर हो जाता है। यह घटना सिर्फ एक शिक्षक और एक छात्र के बीच का विवाद नहीं बल्कि पूरे शिक्षा-तंत्र और समाज के लिए चेतावनी है।

भारतीय परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी उच्च स्थान दिया गया है – गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः। लेकिन आज की वास्तविकता यह है कि कई जगहों पर शिक्षक-छात्र संबंधों में खटास बढ़ती जा रही है। पहले शिक्षक की डांट को भी विद्यार्थी प्यार और मार्गदर्शन मानते थे, आज वही डांट अपमान या प्रताड़ना लगती है। मोबाइल और इंटरनेट ने छात्रों को स्वतंत्रता तो दी है, लेकिन साथ ही उनमें अहंकार और अनुशासनहीनता भी बढ़ाई है।

किसी भी बच्चे के व्यक्तित्व की नींव घर पर रखी जाती है। अगर घर में अनुशासन, संस्कार और मर्यादा का माहौल होगा तो बच्चा वही सीखेगा। लेकिन आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में माता-पिता बच्चों को समय नहीं दे पा रहे। टेलीविज़न, मोबाइल और सोशल मीडिया बच्चों के 'गुरु' बन गए हैं। नशे और हिंसा जैसी प्रवृत्तियों तक छात्रों की पहुँच आसान हो चुकी है। नतीजा यह कि जब शिक्षक बच्चे को सही राह दिखाने की कोशिश करता है, तो छात्र उसे रोक-टोक या बंधन मानकर विद्रोह कर बैठता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा संकट यह है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी और अंक तक सीमित रह गया है। नैतिक शिक्षा, जीवन मूल्य और चरित्र निर्माण पर जोर लगभग समाप्त हो गया है। बच्चों को 'क्या बनना है' यह तो सिखाया जा रहा है, लेकिन 'कैसा इंसान बनना है' यह कहीं खो गया है। प्रतियोगिता की दौड़ में छात्रों पर दबाव इतना बढ़ गया है कि उनमें सहनशीलता और धैर्य की जगह अधीरता और आक्रामकता ने ले ली है।

एक छात्र का अपने शिक्षक पर हमला करना केवल एक व्यक्ति पर हमला नहीं है, बल्कि यह पूरी शिक्षा प्रणाली और समाज के लिए शर्मनाक है। इसके दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। शिक्षक छात्रों को अनुशासित करने से कतराएँगे, विद्यालय की गरिमा को आघात पहुँचेगा और समाज में गलत संदेश जाएगा कि यदि छात्र ही शिक्षक का आदर नहीं करेंगे तो समाज में वरिष्ठों और बड़ों के प्रति सम्मान कैसे बना रहेगा।

इस तरह की घटनाएँ केवल विद्यालय स्तर की समस्या नहीं हैं, बल्कि यह कानून-व्यवस्था से भी जुड़ी हैं। ऐसे मामलों में तुरंत और सख्त कार्रवाई होनी चाहिए ताकि छात्र और अभिभावक दोनों यह समझें कि अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं होगी। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि ऐसे बच्चों के पुनर्वास और परामर्श की भी व्यवस्था हो।

अगर हमें छात्रों को सही दिशा में ले जाना है तो केवल सजा या डर से यह संभव नहीं होगा। इसके लिए बहुआयामी कदम उठाने होंगे। परिवार को बच्चों के साथ संवाद बढ़ाना होगा और घर में अनुशासन और संस्कार का वातावरण बनाना होगा। शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है, पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा, मूल्य-आधारित शिक्षा और चरित्र निर्माण की गतिविधियाँ अनिवार्य की जानी चाहिए। शिक्षक को भी बच्चों की मानसिकता को समझते हुए संवाद की शैली बदलनी होगी। डांट या डर की बजाय समझाना और विश्वास दिलाना होगा। विद्यालयों में काउंसलिंग कक्ष अनिवार्य होने चाहिए और आक्रामक प्रवृत्ति वाले बच्चों को समय पर मनोवैज्ञानिक सहायता दी जानी चाहिए। समाज और मीडिया को भी अपनी भूमिका निभानी होगी, हिंसक और नकारात्मक सामग्री के प्रभाव को कम करना होगा और सकारात्मक आदर्श प्रस्तुत करने होंगे।

"छात्र किस दिशा में जा रहे हैं?" यह सवाल केवल एक घटना से उपजा हुआ प्रश्न नहीं है, बल्कि पूरे समाज की स्थिति पर एक गहरा चिंतन है। यदि आज ही हम बच्चों को अनुशासन, सम्मान और संस्कार की सही राह नहीं दिखाएंगे तो आने वाली पीढ़ी में शिक्षक-छात्र संबंध और समाज की संरचना दोनों कमजोर हो जाएँगे। समाधान परिवार, विद्यालय, समाज और प्रशासन—सभी के संयुक्त प्रयास में छिपा है। शिक्षा केवल डिग्री दिलाने का माध्यम न होकर चरित्र निर्माण और जीवन मूल्य का संस्कार बने, तभी हम कह पाएंगे कि हमारे छात्र सही दिशा में जा रहे हैं।

जनपद बदायूं के विकासखंड सलारपुर गांव में नाला नहीं होने के कारण सड़क पर बह रहा गंदा पानी

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं: विकासखंड सलारपुर गाँव में ग्राम प्रधान द्वारा नाला न बनवाने पर ग्रामीणों में आक्रोश है। वे इस बात से नाराज़ हैं कि उनकी शिकायत के बावजूद, नाली निर्माण का काम नहीं हो रहा है,

जहां पानी की निकासी के लिए आज तक ग्राम प्रधान द्वारा कोई भी नाली नहीं बनवाई गई है, जिसके चलते घरों का गंदा पानी घरो के सामने रास्ते पर जमा हो रहा है। गंदा पानी जमा होने के कारण अनेक तरह की बीमारी उत्पन्न होने की सम्भावना बनी हुई है।पानी की निकासी के लिए नाली बनवाने के लिए ग्राम प्रधान से कई बार आग्रह कर चुके हैं, लेकिन सुनवाई नहीं की जा रही। इससे ग्रामीणों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

सरकार का स्वच्छता भारत मिशन विकासखंड सलारपुर में दम तोड़ता दिखाई दे रहा है नालियों की सफाई के अभाव में गांव के रास्तों पर जल भराव कीचड़ की स्थिति बनी हुई है इससे जहां गांव में संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा है तो वही ग्रामीणों को रास्ते पर चलने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है यहां आपको बताते चलें मामला जनपद बदायूं के विकासखंड सलारपुर का है लगभग 2 महीने से नाली की सफाई न होने से गांव में रोड पर जलभराव कीचड़ की समस्या बनी हुई है हैरान होने की बात तो यह है की यहां पर नाला नहीं बनवाया है पर किसी भी उच्च अधिकारी ने इस और ध्यान नहीं दिया है जिस कारण नाला ना होने से रास्ते हमेशा जलमग्न रहते हैं और कीचड़ की भरमार रहती है विकासखंड सलारपुर गांव में नाली भी है, तो उसकी नियमित सफाई नहीं होने से समस्या जस की तस बनी रहती है जलभराव व कीचड़ के बीच जहां संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा बना रहता है वहीं ग्रामीणों को आने-जाने में भी मुश्किल झेलनी पड़ रही है स्वच्छता के नाम पर विकासखंड सलारपुर गांव में अभियान तो चलाए जाते हैं लेकिन जमीन स्तर पर इसका असर देखने को नहीं मिलता है वर्तमान में कई ग्रामों में अस्वच्छता पसरी हुई है कहीं पर सड़कों पर गंदा पानी बह रहा है तो कहीं नाली ही नहीं बनी हुई है वही बीमारियों का खतरा बना रहता है सड़कों पर सार्वजनिक स्थान पर पसरा हुआ है जानकारी के अनुसार विकासखंड सलारपुर में गंदगी फैली हुई है ग्राम पंचायत द्वारा सफाई व्यवस्था पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है वही विभागीय अधिकारियों द्वारा भी केवल स्वच्छता सर्वेक्षण तक इस और ध्यान दिया गया बाद में स्वच्छता ध्यान नहीं दिया जाता है इसमें नाला न होने के कारण यह दिन देखना पड़ रहा है शिकायत करता मुशर्रफ अली, बैसर अली, पुत्तन साबिर ,साजिद ,फैशन ,वीरेंद्र ,राजपाल, इकलाश,असलमआदि ग्रामीणों का आरोप है अभी भी नाला नहीं बना तो प्रदर्शन में तेजी लाएंगे

और इसमें ग्राम प्रधान जाहिद अली से बात की तो उन्होंने कहा कि इसमें हम दो तीन दिन में रोड़ा डल बनाएंगे।

फैटी लिवर हृदय विफलता का कारण हो सकता है

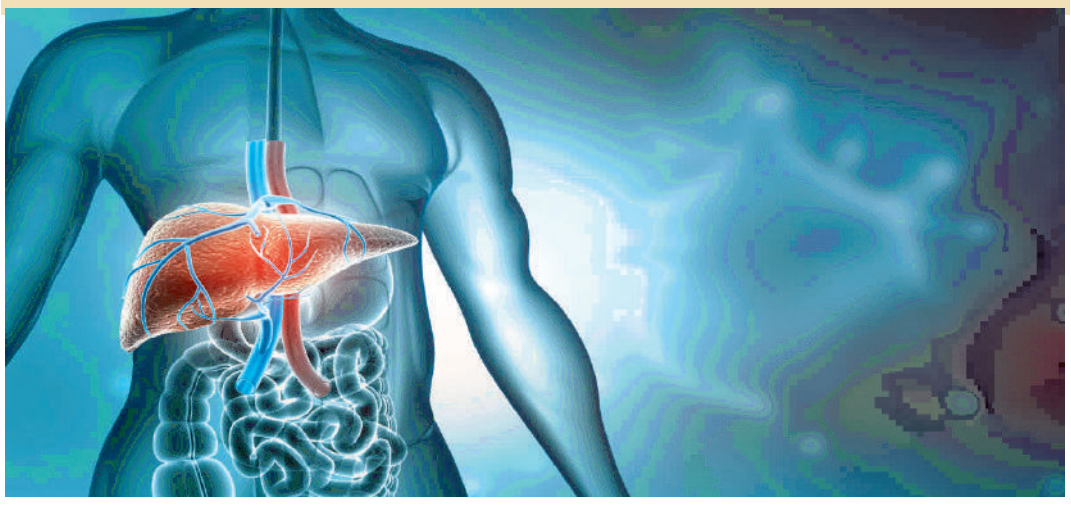

विस्तृत जानकारी:

साझा जोखिम कारक: गैर-अल्कोहलिक फैटी लिवर रोग (NAFLD) और हृदय विफलता में सामान्य जोखिम कारक जैसे मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और मेटाबॉलिक सिंड्रोम शामिल हैं, जो शरीर में सूजन और इंसुलिन प्रतिरोध को बढ़ाते हैं।

तंत्र:

लिवर में अतिरिक्त वसा सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव पैदा कर सकती है, जो हृदय को नुकसान पहुंचाती है। NAFLD से प्रो-इंफ्लेमेटरी साइटोकिन्स का उत्पादन बढ़ सकता है और लिपिड चयापचय बदल सकता है, जिससे हृदय पर दबाव पड़ता है और बाएं निलय की कार्यक्षमता प्रभावित हो सकती है।

सबूत:

Hepatology और Journal of the American College of Cardiology जैसे पत्रिकाओं में प्रकाशित अध्ययनों (2023 तक) से पता चलता है कि NAFLD हृदय विफलता के जोखिम को बढ़ाता है, जो अन्य हृदय जोखिम कारकों से स्वतंत्र है। उदाहरण के लिए, 2021 के एक मेटा-विश्लेषण में पाया गया कि NAFLD रोगियों में हृदय विफलता का जोखिम 1.5-2 गुना बढ़ जाता है।

हृदय विफलता के प्रकार:

NAFLD कम इजेक्शन फ्रैक्शन (HFrEF) और संरक्षित इजेक्शन फ्रैक्शन (HFpEF) दोनों प्रकार की हृदय विफलता से जुड़ा है, जिसमें HFpEF अधिक आम है क्योंकि मेटाबॉलिक तनाव हृदय को प्रभावित करता है।

प्रबंधन:

जीवनशैली में बदलाव (वजन कम करना, स्वस्थ आहार, व्यायाम) और संबंधित स्थितियों (मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल) को नियंत्रित करके फैटी लिवर का जोखिम कम किया जा सकता है। लिवर और हृदय स्वास्थ्य की नियमित निगरानी महत्वपूर्ण है।

आज का युवा तकनीकी रूप से आधुनिक है, लेकिन मानसिक स्तरपर अक्सर पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित है

भारत का ज्ञान-सागर अनंत है, वैदिक साहित्य केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं थे,बल्कि उनमें जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़ा विज्ञान समाहित था

एडवोकेट किशन सनमुख दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है। इसकी जड़ें हज़ारों वर्षों पुरानी परंपराओं, ज्ञान और संस्कृति में गहराई से जुड़ी हुई हैं।यहाँ वेद, उपनिषद,पुराण, महाभारत,रामायण योग,आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, खगोलशास्त्र और गणित जैसी महान धरोहरें विकसित हुईं।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हूं कि यही वह परंपरा थी जिसने भारत को 'विश्वगुरु' का दर्जा दिलाया। लेकिन दुर्भाग्य यह रहा कि औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों ने हमारी शिक्षा प्रणाली, संस्कृति और इतिहास को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि भारतीय अपनी ही जड़ों से कटते चले गए। आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम अपने युवाओं को अपनी वास्तविक पहचान नहीं बता पाए हैं। जब तक यह स्थिति बनी रहेगी,तब तक हम उसीमानसिक गुलामी में जीते रहेंगे,जिसे अंग्रेज हम पर थोप कर गए थे।भारत का ज्ञान-सागर अनंत है। वैदिक साहित्य केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं थे, बल्कि उनमें जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़ा विज्ञान समाहित था। उपनिषदों ने आत्मा, ब्रह्म और जीवन के गूढ़ रहस्यों की खोज की।आयुर्वेद ने चिकित्सा को प्रकृति के साथ जोड़ा, जहाँ रोग निवारण के साथ- साथ जीवन जीने की कला भी सिखाई गई। सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का पिता कहा गया, वहीं चरक ने संपूर्ण चिकित्सा शास्त्र को व्यवस्थित किया।गणित के क्षेत्र में आर्यभट, वराहमिहिर और भास्कराचार्य ने शून्य, दशमलव, ग्रहों की गति और खगोल विज्ञान पर अद्वितीय कार्य किए। योग की परंपरा ने शरीर, मन और आत्मा को संतुलित करने का मार्ग दिखाया। यदि यह सब हम अपने युवाओं को सिखाएँ, तो वे केवल पश्चिमी विज्ञान और संस्कृति के अनुयायी नहीं, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़े हुए आत्मनिर्भर व्यक्तित्व बनेंगे।

साथियों बात अगर हम भारतीय संस्कृति की विशेषताओं की करें तो, भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी विविधता और समन्वय है। यहाँ अलग- अलग धर्म, जातियाँ, भाषाएँ और परंपराएँ हैं,फिर भी यह विविधता "एकता" के सूत्र में बंधी हुई है। गंगा-जमुनी तहज़ीब से लेकर बौद्ध, जैन,सिख और संत परंपरा तक, हर युग ने भारतीय संस्कृति को और अधिक समृद्ध किया। परिवार व्यवस्था, गुरु-शिष्य परंपरा और सामूहिक जीवन की अवधारणा ने समाज को एकजुट रखा। कला, संगीत, नृत्य और साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवन जीने की प्रेरणा रहे।युवाओं को यदि यह बताया जाए कि उनकी संस्कृति कितनी व्यापक और गहन है, तो उनमें आत्मगौरव की भावना पैदा होगी और वे किसी विदेशी संस्कृति के प्रभाव में आसानी से नहीं बहेंगे।

साथियों बात अगर हम अंग्रेजों द्वारा थोपी गई मानसिकता की करें तो, अंग्रेजों ने भारत को केवल राजनीतिक रूप से ही गुलाम नहीं बनाया,बल्कि मानसिक औरसांस्कृतिक गुलामी भी थोपी।"मैकॉले की शिक्षा प्रणाली"का मुख्य उद्देश्य था कि भारतीय ऐसे लोग बनें,जो रंग- रूप से भारतीय हों लेकिन सोच और मानसिकता से अंग्रेज। इसके लिए उन्होंने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को ध्वस्त किया और अंग्रेजी माध्यम को श्रेष्ठ बनाकर प्रस्तुत किया। भारतीय भाषाओं, साहित्य और दर्शन को पिछड़ा और अवैज्ञानिक कहकर तिरस्कृत किया गया। इतिहास को इस तरह से लिखा गया कि विदेशी आक्रांताओं को महिमा मंडित किया गया और भारतीय उपलब्धियों को या तो छोटा कर दिया गया या नकार दिया गया। इस कारण पीढ़ी दर पीढ़ी भारतीय युवाओं का अपनी परंपरा पर विश्वास कमजोर होता चला गया।

साथियों बात अगर हम युवाओं पर पश्चिमी प्रभाव की करें तो, आज का युवा तकनीकी रूप से आधुनिक है, लेकिन मानसिक स्तर पर अक्सर पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होता है।पश्चिमी फैशन, भोजन,संगीत,सिनेमा और जीवनशैली उसे आकर्षित करते हैं। अंग्रेजों द्वारा थोपी गई मानसिकता का असर आज भी है,जहाँ कई युवा भारतीय परंपरा को पिछड़ा समझते हैं,उन्हें यह बताया ही नहीं गया कि हमारी संस्कृति कितनी महान और वैज्ञानिक है। यदि किसी युवा को यह ज्ञान न हो कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि मानसिक शांति और आत्मविकास का साधन है,तो वह इसे पश्चिमी जिम संस्कृति से तुलना करके ही देखेगा।इसी प्रकार, यदि उसे आयुर्वेद की शक्ति नहीं बताई जाएगी,तो वह केवल आधुनिक दवाइयों पर ही जिंदगी भर निर्भर रहेगा।

साथियों बात अगर हमपरंपरा से कटाव के दुष्परिणामों की करें तो,जब युवा अपनी परंपरा और संस्कृति से कट जाते हैं, तो सबसे बड़ा नुकसान उनकी पहचान को होता है।वेआत्मगौरव खो देते हैं और किसी विदेशी संस्कृति का अंधानुकरण करने लगते हैं।समाज में नैतिक मूल्यों का क्षरण होता है और परिवार व्यवस्था कमजोर पड़जाती है। उपभोक्तावाद और भौतिकवाद जीवन का अंतिमलक्ष्य बन जाता है। ऐसे में राष्ट्र की सामूहिक चेतना भी कमजोर होती है। यदि हम युवाओं को अपनी जड़ों से नहीं जोड़ पाए, तो भविष्य की पीढ़ियाँ भारतीय होने पर गर्व करना ही भूल जाएँगी और

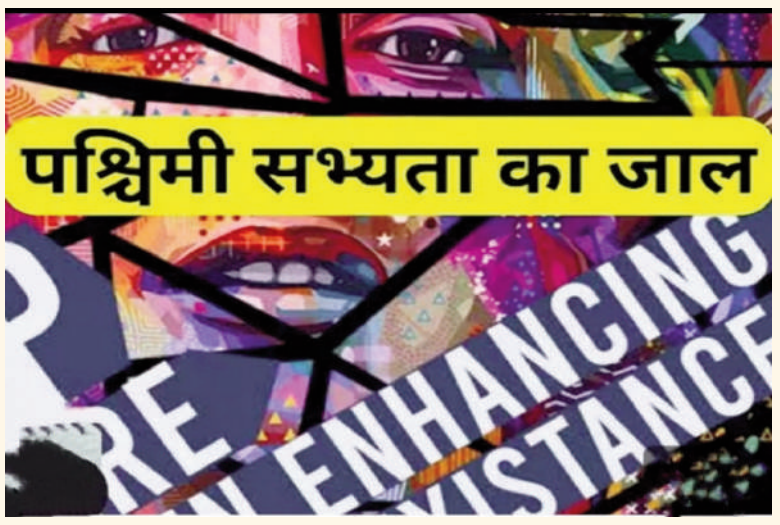

केवल वही रूप देखेंगी, जो अंग्रेज उन्हें दिखाकर गए थे।

साथियों बात अगर हम युवाओं तक परंपरा पहुँचाने की आवश्यकता की करें तो,युवाओं तक परंपरा और संस्कृति पहुँचाने का कार्य केवल शिक्षा संस्थानों का ही नहीं,बल्कि परिवार, समाज और मीडिया का भी है।विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक संदर्भों के साथ पढ़ाया जाए।परिवार में बच्चों को कहानियों,पर्व-त्योहारों और अनुष्ठानों के माध्यम से संस्कृति का अनुभव कराया जाए। मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग भारतीय कला, संस्कृति और परंपराओं को प्रस्तुत करने के लिए किया जाए। यदि यह काम व्यवस्थित ढंग से किया जाए, तो युवा अपनी संस्कृति से जुड़ेंगे और अपने भविष्य को उसी आधार पर गढ़ेंगे।

साथियों बात अगर हम परंपरा और आधुनिकता का संतुलन की करें तो,युवाओं को यह समझाना होगा कि परंपरा का मतलब पुराने ढर्रे पर अटक जाना नहीं है। आधुनिकता और परंपरा में टकराव नहीं, बल्कि संतुलन आवश्यक है। हमें आधुनिक विज्ञान और तकनीक को अपनाना चाहिए, लेकिन साथ ही अपनी सांस्कृतिक जड़ों को भी मजबूती से थामे रहना चाहिए। योग और आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के साथ जोड़ना, भारतीय भाषाओं को तकनीक के साथ विकसित करना, और प्राचीन दर्शन को आधुनिक समस्याओं केसमाधान से जोड़ना इसी संतुलन का उदाहरण है। यह संदेश युवाओं को देना होगा कि वे आधुनिक बनें, लेकिन अपनी पहचान और संस्कृति को भूले नहीं।

साथियों बात अगर हम भविष्य की राह की करें तो भारत का भविष्य उसके युवाओं पर निर्भर है। यदि युवा अपनी परंपरा और संस्कृति से जुड़ेंगे,तो वे आत्मगौरव और आत्मनिर्भरता के साथ राष्ट्र निर्माण करेंगे। यदि वे केवल पश्चिमी ढांचे में ढलेंगे, तो उनकी सोच भी पराधीन रहेगी। इसलिए अब यह समय है कि हम युवाओं को अपने गौरवशाली अतीत से परिचित कराएँ। स्कूलों में भारतीय इतिहास और परंपरा को सही स्वरूप में पढ़ाया जाए, विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा पर शोध हो, और समाज में सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाई जाए। तभी भारत पुनः विश्वगुरु की दिशा में आगे बढ़ सकेगा।इसलिए"जब तक हम युवाओं को अपनी हज़ारों साल पुरानी परंपरा, ज्ञान और संस्कृति को नहीं बताएँगे, हम वैसे ही रहेंगे जैसे अंग्रेजों ने हमें दिखाए हैं",यह कथन केवल एकचेतावनी नहीं, बल्कि हमारे लिए मार्गदर्शन है। युवाओं को यदि अपनी पहचान का ज्ञान नहीं होगा, तो वे कभी भी आत्मगौरव महसूस नहीं करेंगे।आज आवश्यकता है कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक गतिविधियों में इस चेतना को जगाएँ। जब युवा अपनी जड़ों से जुड़े होंगे, तभी भारत वास्तविक अर्थों में स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनेगा। तभी हम अंग्रेजों की बनाई हुई छवि से बाहर निकलकर अपनी असली पहचान पा सकेंगे।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि आज का युवा तकनीकी रूप से आधुनिक है,लेकिन मानसिक स्तरपर अक्सर पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित है।भारत का ज्ञान- सागर अनंत है,वैदिक साहित्य केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं थे,बल्कि उनमें जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़ा विज्ञान समाहित था,जब तक हम युवाओं को अपनी हज़ारों साल पुरानी परंपरा,ज्ञान और संस्कृति को नहीं बताएँगे, हम वैसे ही रहेंगे जैसे अंग्रेजों ने हमें दिखाए हैं।

मारुति ई विटारा की जल्द लॉन्चिंग, कल पीएम मोदी दिखाएंगे हरी झंडी, 100 से ज्यादा देशों में होगी एक्सपोर्ट

मारुति ई विटारा देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल मारुति सुजुकी की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही पहली इलेक्ट्रिक एसयूवी ई विटारा को लॉन्च किया जाएगा। इसके पहले पीएम मोदी कल इस एसयूवी को हरी झंडी दिखाएंगे। मारुति कब तक इस एसयूवी को लॉन्च कर सकती है।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल मारुति सुजुकी जल्द ही अपनी पहली इलेक्ट्रिक कार को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। इसके पहले 26 अगस्त को पीएम मोदी Maruti Suzuki E Vitara को हरी झंडी दिखाएंगे। सरकार की ओर से इस बारे में क्या जानकारी दी गई है। मारुति की ई विटारा को कब तक लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti E Vitara को हरी झंडी दिखाएंगे पीएम मोदी

पीएम मोदी मारुति सुजुकी की पहली इलेक्ट्रिक एसयूवी Maruti E Vitara को कल हरी झंडी दिखाएंगे। गुजरात के हंसलपुर प्लांट में पीएम मोदी का कल दौरा होगा। इस दौरान पीएम मोदी मारुति ई विटारा की प्रोडक्शन लाइन की शुरुआत के मौके पर मौजूद रहेंगे।

सरकार ने दी जानकारी

सरकार की ओर से औपचारिक तौर पर पीएम मोदी के दौरे की जानकारी दी गई है। एक बयान जारी कर बताया गया है कि 26 अगस्त को, प्रधानमंत्री अहमदाबाद के हंसलपुर में मौजूद सुजुकी मोटर प्लांट में दो ऐतिहासिक विकास कार्यों का उद्घाटन करेंगे। ये ऐतिहासिक पहल भारत के हरित परिवहन के वैश्विक केंद्र के रूप में उभरने को दर्शाती है और साथ ही मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत के प्रति प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता को भी आगे बढ़ाती है।मेक इन इंडिया की सफलता के एक प्रमुख उदाहरण के रूप में, प्रधानमंत्री सुजुकी के पहले वैश्विक रणनीतिक बैटरी इलेक्ट्रिक वाहन (बीईवी) ई विटारा का उद्घाटन करेंगे और हरी झंडी दिखाएंगे। इस उपलब्धि के साथ, भारत अब सुजुकी के इलेक्ट्रिक वाहनों का वैश्विक विनिर्माण केंद्र बन जाएगा।

हरित ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में बड़े कदम उठाते हुए, प्रधानमंत्री गुजरात स्थित टीडीएस लिथियम-आयन बैटरी संयंत्र में हाइब्रिड बैटरी इलेक्ट्रोड के स्थानीय उत्पादन की शुरुआत के साथ भारत के बैटरी इकोसिस्टम के अगले चरण का भी उद्घाटन करेंगे। तोशिबा, डेंसो और सुजुकी का संयुक्त उद्यम, यह संयंत्र घरेलू विनिर्माण और स्वच्छ ऊर्जा नवाचार को बढ़ावा देगा। इससे अब अस्सी प्रतिशत से अधिक बैटरी का निर्माण भारत में ही किया जाएगा।

कितने देशों में होगा निर्यात

मारुति की इस मेड इन इंडिया बीईवी का निर्यात यूरोप और जापान जैसे सौ से ज्यादा देशों में किया जाएगा।

क्या है खासियत

Maruti E Vitara एसयूवी में निर्माता की ओर से कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जाएगा। इसमें पैनोरमिक सनरूफ, ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल, वेंटिलेटेड फ्रंट सीटें जैसे फीचर्स दिया गया है। वहीं, पैसेंजर की सेफ्टी के लिए 7 एयरबैग, 360-डिग्री कैमरा, ऑटो-होल्ड के साथ इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक और लेवल 2 ADAS जैसे फीचर्स को दिया जाएगा। इसके साथ ही इसमें 49 kWh पैक और 61 kWh की क्षमता की बैटरी के विकल्प मिलेंगे। जिससे इसे 500 किलोमीटर से ज्यादा की रेंज मिलेगी।

कब होगी लॉन्च

फिलहाल पीएम मोदी मारुति की पहली इलेक्ट्रिक एसयूवी ई विटारा के प्रोडक्शन लाइन को हरी झंडी दिखाएंगे। इसके कुछ समय बाद इस एसयूवी का दुनियाभर में निर्यात किया जाएगा। उम्मीद की जा रही है कि मारुति की ओर से इस एसयूवी को अगले कुछ महीनों में भारतीय बाजार में भी लॉन्च कर दिया जाएगा।

एस्कुडो, ई विटारा, विक्टोरिस मारुति की नई मिड साइज एसयूवी के लिए किन नामों की हो रही चर्चा, जानें कब होगी लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति एसयूवी के नाम देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं की ओर से कई सेगमेंट में कई कारों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। लॉन्च से पहले कई नामों की चर्चा हो रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक किस नाम से नई गाड़ी को तीन सितंबर को लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

भारत में कई सेगमेंट में बेहतरीन वाहनों की बिक्री करने वाली प्रमुख वाहन निर्माता Maruti Suzuki जल्द ही नई एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। लॉन्च से पहले इसके नाम को लेकर काफी ज्यादा चर्चा की जा रही है। मारुति की नई एसयूवी को किस नाम के साथ लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होगी नई एसयूवी

मारुति की ओर से जल्द ही नई एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। नई एसयूवी को भारत में औपचारिक तौर पर तीन सितंबर को लॉन्च कर दिया जाएगा।

क्या होगा नाम

निर्माता की ओर से अभी नई एसयूवी के नाम को लेकर कोई औपचारिक जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है। जिस कारण कई लोग अलग अलग नामों के साथ जानकारी दे रहे हैं।

किन नामों की चर्चा

नई एसयूवी के लॉन्च को लेकर कई तरह के नामों की चर्चा हो रही है। इनमें से पहला नाम ई-विटारा है। मारुति की ओर से ऑटो एक्सपो में भी इस नाम की नई एसयूवी को पेश किया है, जिसके बाद यह उम्मीद की जा रही है कि ई विटारा नाम से ही तीन सितंबर को नई एसयूवी लॉन्च होगी।

दसरे नाम के तौर पर एस्क्यूडो की चर्चा हो रही है। Maruti Escudo नाम इसलिए भी चर्चा में है क्योंकि कुछ लोगों का यह मानना है कि मारुति अपनी पहली इलेक्ट्रिक एसयूवी ई विटारा के नाम को बदल सकती है। तीसरे नाम के तौर पर जिसकी चर्चा हो रही है वह Victoris है।

किस सेगमेंट में होगी लॉन्च

निर्माता ने अभी इसके नाम के साथ ही अन्य जानकारी को भी सार्वजनिक नहीं किया है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि नई एसयूवी को मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में लॉन्च किया जा सकता है। जिसमें पेट्रोल इंजन को दिया जाएगा।

किनसे होगा मुकाबला

मारुति की नई एसयूवी को मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में लॉन्च किया जाएगा। इस सेगमेंट में पहले से ही मारुति की ही ग्रैंड विटारा भी बिक्री के लिए उपलब्ध है। साथ में Hyundai Creta, Kia Seltos, Skoda Kushaq, Volkswagen Taigun, MG Hector, Mahindra Scorpio, Tata Harrier, Honda Elevate जैसी एसयूवी से मुकाबला होगा।

हुंडई वेन्यू फेसलिफ्ट लॉन्च से पहले टेस्टिंग के दौरान दिखी, जानें क्या मिलेंगे नए फीचर्स और कब तक होगी लॉन्च

हुंडई वेन्यू फेसलिफ्ट भारतीय बाजार में कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में कई निर्माताओं की ओर से बेहतरीन उत्पादों को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक जल्द ही निर्माता की ओर से नई एसयूवी के तौर पर वेन्यू के फेसलिफ्ट को लॉन्च किया जा सकता है। टेस्टिंग के दौरान इस एसयूवी की क्या जानकारी सामने आई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। कई निर्माताओं की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों को ऑफर किया जाता है। हुंडई की ओर से भी कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में वेन्यू की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक जल्द ही इस एसयूवी के फेसलिफ्ट (Hyundai Venue Facelift) को लॉन्च किया जा सकता है। इसके पहले एसयूवी को टेस्ट किया जा रहा है। इसकी क्या जानकारी सामने आई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

जल्द लॉन्च होगी Hyundai Venue Facelift

हुंडई की ओर से कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में जल्द ही Hyundai Venue Facelift को लॉन्च किया जा सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता इस एसयूवी को लॉन्च करने से पहले टेस्ट कर रही है।

क्या मिली जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक टेस्टिंग के दौरान इस एसयूवी के कुछ फीचर्स की जानकारी सामने आई है। जिसके मुताबिक इसमें कर्व्ड डिस्प्ले को दिया जा सकता है। इस डिस्प्ले का साइज 10.25 इंच का हो सकता है और कई फीचर्स को क्रेटा के मौजूदा वेरिएंट्स से लिया जा सकता है।

कितना दमदार इंजन

रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी के फेसलिफ्ट वर्जन में इंजन को नहीं बदला जाएगा। इसमें मौजूदा इंजन के विकल्प ही दिए जा सकते हैं। मौजूदा समय में एसयूवी को एक लीटर की क्षमता के टर्बो, 1.2 लीटर नेचुरल एस्पिरेटिड और 1.5 लीटर की क्षमता का डीजल इंजन दिया जाता है।

मिलेंगे बेहतरीन फीचर्स

जानकारी के मुताबिक एसयूवी के फेसलिफ्ट वर्जन में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा सकता है। इसमें पैनोरमिक सनरूफ, कर्व्ड डिस्प्ले, नया एक्सटीरियर, नया इंटीरियर, नए रंगों के विकल्प, ADAS, एंबिएंट लाइट्स, नए अलॉय व्हील्स, वायरलैस फोन चार्जर, एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, की-लैस एंट्री, पुश बटन स्टार्ट, एलईडी हेडलाइट्स, कनेक्टिड लाइट्स, एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज जैसे कई फीचर्स दिए जा सकते हैं।

कब होगी लॉन्च

निर्माता की ओर से अभी इस एसयूवी के फेसलिफ्ट के लॉन्च को लेकर कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसे फेस्टिव सीजन तक लॉन्च किया जा सकता है।

किनसे होगा मुकाबला

हुंडई की ओर से वेन्यू को कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Brezza, Kia Sonet, Kia Syros, Mahindra XUV 3XO, Tata Nexon, Skoda Kylaq और Maruti Fronx जैसी एसयूवी के साथ होता है।

चेन्नई में हुआ इंडियन रेसिंग फेस्टिवल 2025 का समापन, रेसर्स ने एक दूसरे को दी कड़ी चुनौती

IRF 2025 भारत में रेसिंग जैसे खेल को काफी प्रोत्साहित किया जा रहा है। जिस कारण कई युवा इस खेल में जुड़ रहे हैं। हाल में ही चेन्नई में इंडियन रेसिंग फेस्टिवल 2025 के दूसरे राउंड का समापन हुआ। इस दौरान किन युवाओं ने एक दूसरे को चुनौती दी। दूसरे राउंड में किस कैटेगरी में कौन विजेता बना। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। इंडियन रेसिंग फेस्टिवल (IRF) 2025 का दूसरा राउंड मद्रास इंटरनेशनल सर्किट में शानदार अंदाज में संपन्न हुआ। दो दिनों तक चले इस आयोजन में ड्राइवर्स ने ट्रैक पर बेहतरीन रेसक्राफ्ट और हिम्मत का प्रदर्शन किया। पहले दिन बारिश से चुनौतीपूर्ण ट्रैक पर मुकाबला हुआ, तो दूसरे दिन तेज धूप और गर्म ट्रैक ने रफ्तार को परखा।

पहला दिन – मोहसिन का जलवा और रोटगे की जीत

IRL रेस 1: स्पीड डीमन्स दिल्ली के शहन अली मोहसिन ने पोल पोजीशन से शुरुआत करते हुए शानदार जीत दर्ज की। शुरुआत से ही उन्होंने बढ़त बनाए रखी और किसी को मौका नहीं दिया। उनके टीममेट अलिस्टर यूंग भी मजबूत स्थिति में थे, लेकिन आखिरी लैप पर चेन्नई टर्बो राइडर्स के आकिल अलिभाई ने आक्रामक मूव से उन्हें पछाड़ दिया।

विजेता: शहन अली मोहसिन (26:38.876)
रनर-अप: आकिल अलिभाई (26:45.238)
दूसरे रनर-अप: अलिस्टर यूंग (26:45.263)

रेस के बाद मोहसिन ने कहा कि बहुत समय बाद पोडियम पर लौटना शानदार है। टीम ने गाड़ी तैयार करने में बेहतरीन काम किया और अलिस्टर को भी P3 के लिए बधाई।

फॉर्मूला 4 इंडियन – रेस 1: फ्रांस के साचेल रोटगे ने फ्रंट रो से शुरुआत करते हुए आखिरी 5 मिनट में शानदार ओवरटेक किया और जीत दर्ज की। वहीं 10वें स्थान से शुरुआत करने वाले गाजी मोटलेकर ने जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए सात कारों को पीछे छोड़ा और दूसरा स्थान पाया। एनाबेल कैनेडी ने तीसरे पायदान पर जगह बनाई।

विजेता: साचेल रोटगे (26:50.043)
रनर-अप: गाजी मोटलेकर (26:56.072)
दूसरे रनर-अप: एनाबेल कैनेडी (26:56.429)

रोटगे ने कहा ने रेस जीतने के बाद कहा कि मैं इसकी उम्मीद नहीं कर रहा था, लेकिन ट्रैक की स्थिति बेहतर होते ही मुझे मौका मिला और ओवरटेक कर पाया। बेहद खुशी है।

दूसरा दिन – शाह और चंदरिया की धमक

IRL रेस 2: कोलकाता रॉयल टाइगर्स के सोहिल शाह ने पोल पोजीशन से शुरुआत की और पूरे रेस में लय बनाए रखते हुए शानदार जीत हासिल की। बीच में सेफ्टी कार और रेड फ्लैग ने रेस रोकी, लेकिन शाह ने कंट्रोल बनाए रखा।

विजेता: सोहिल शाह
रनर-अप: अक्षय बोहरा (हैदराबाद ब्लैक बर्ड्स)
दूसरे रनर-अप: जॉन लैंकेस्टर (हैदराबाद ब्लैक बर्ड्स)

फॉर्मूला 4 इंडियन – रेस 2: इशान मादेश (कोलकाता रॉयल टाइगर्स) ने 8वें स्थान से शुरुआत कर जबरदस्त वापसी की और जीत अपने नाम की। साचेल रोटगे ने रनर-अप पोजीशन ली और गाजी मोटलेकर तीसरे स्थान पर रहे।

विजेता: इशान मादेश
रनर-अप: साचेल रोटगे
दूसरे रनर-अप: गाजी मोटलेकर

फॉर्मूला 4 इंडियन – रेस 3: इस रेस में इशान मादेश (कोलकाता रॉयल टाइगर्स) ने 8वें स्थान से शुरुआत कर शानदार वापसी की और जीत अपने नाम की। पीछे गाजी मोटलेकर और साचेल रोटगे ने दूसरे स्थान के लिए जबरदस्त मुकाबला किया। आखिर में रोटगे ने बढ़त लेते हुए रनर-अप पोजीशन हासिल की।

विजेता: शेन चंदरिया
रनर-अप: सैशिवा शंकरण (स्पीड डीमन्स दिल्ली)
दूसरे रनर-अप: इशान मादेश (कोलकाता रॉयल टाइगर्स)

फॉर्मूला 4 इंडियन – रेस 4: फ्रांस के साचेल रोटगे ने एक बार फिर रफ्तार का जलवा दिखाया और P3 से शुरुआत कर जीत अपने नाम की।

विजेता: साचेल रोटगे
रनर-अप: लुविवे सांबुडला
दूसरे रनर-अप: सैशिवा शंकरण

आगे का प्लान

चेन्नई राउंड 2 के बाद अब मुकाबला कोयंबटूर के कारी मोटर स्पीडवे पर होगा। IRL में स्पीड डीमन्स दिल्ली लगातार दो जीत के साथ मजबूत दावेदार बन चुकी है। वहीं फॉर्मूला 4 इंडियन में साचेल रोटगे और इशान मादेश के बीच खिताबी जंग और दिलचस्प होती जा रही है।

इंडियन मोटरसाइकिल ने लॉन्च की नई मोटरसाइकिल, 2025 वर्जन में दमदार इंजन के साथ मिलेंगे कैसे फीचर्स, कितनी है कीमत

इंडियन मोटरसाइकिल भारतीय बाजार में कम कीमत वाली मोटरसाइकिल के साथ ही महंगी और दमदार इंजन वाली मोटरसाइकिल को भी काफी पसंद किया जाता है। इंडियन मोटरसाइकिल की ओर से 25 अगस्त को नई मोटरसाइकिल की पूरी रेंज को 2025 अपडेट के साथ लॉन्च किया गया है। निर्माता की ओर से इनमें किस तरह के फीचर्स दिए हैं। कितना दमदार इंजन है। इनकी क्या कीमत है। आइए जानते हैं।

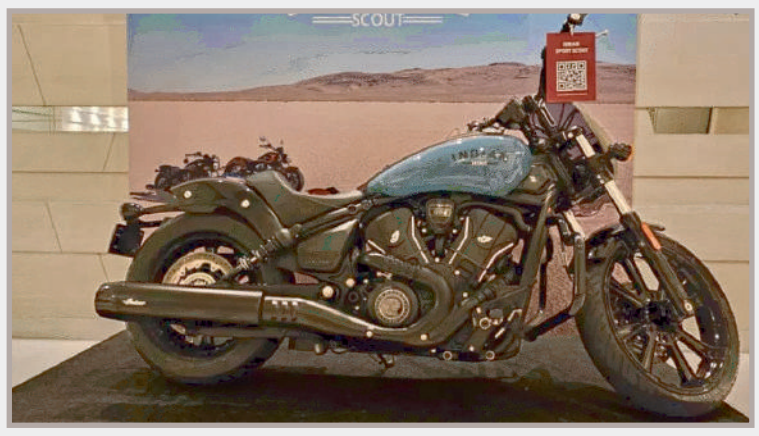

नई दिल्ली। भारत में कई प्रीमियम मोटरसाइकिल की बिक्री करने वाली निर्माता इंडियन मोटरसाइकिल ने अपने कई मॉडल्स को अपडेट करने के बाद लॉन्च कर दिया है। निर्माता की ओर से किन मोटरसाइकिल को अपडेट किया गया है। इनमें किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस कीमत पर इनको लॉन्च किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Indian Motorcycle ने लॉन्च की नई मोटरसाइकिल

इंडियन मोटरसाइकिल की ओर से अपने कई मॉडल्स को अपडेट करने के बाद लॉन्च कर दिया है। निर्माता की ओर से स्काउट सीरीज में करीब आठ मॉडल्स को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया गया है।

किसे मिला अपडेट

इंडियन की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक निर्माता की ओर से कुल आठ मॉडल्स को अपडेट दिया गया है। जिसमें Scout Sixty Bobber, Sport Scout Sixty, Scout Sixty Limited, Scout Bobber, Scout Classic, Sport Scout, 101 Scout और Super Scout शामिल हैं।

कैसे हैं फीचर्स

निर्माता की ओर से इनमें एबीएस, एलईडी लाइट्स, एनालॉग स्पीडोमीटर, यूएसबी चार्जर, राइडिंग मोड्स, 16 इंच व्हील्स, क्रूज कंट्रोल, ट्रैक्शन कंट्रोल, यूएसडी फॉर्क्स जैसे कई फीचर्स दिए हैं।

कितना दमदार इंजन

इंडियन की ओर से मोटरसाइकिल में 999 सीसी की क्षमता का स्पीड प्लस इंजन दिया गया है। जिससे इनको 85 हॉर्स पावर और 87 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इंजन के साथ पांच स्पीड ट्रांसमिशन दिया गया है। इस इंजन से वी-ट्विन इंजन की आवाज और लिक्विड कूल्ड का प्रदर्शन मिलता है।

999 सीसी की क्षमता के इंजन के साथ ही कुछ मॉडल्स को 1250 सीसी की क्षमता का स्पीड प्लस इंजन भी दिया गया है।

कितनी है कीमत

निर्माता की ओर से इन मोटरसाइकिल को 12.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है। यह कीमत इसके स्काउट सिक्सटी बॉबर बाइक की है। इस सीरीज की सबसे महंगी बाइक की एक्स शोरूम कीमत 16.15 लाख रुपये रखी गई है। इन मोटरसाइकिल के साथ इंडियन की ओर से पैकेज के विकल्प भी दिए गए हैं।

संयुक्त परिवार धीरे-धीरे खत्म हो रहे है और बुजुर्गों के लिए जगह कम होती जा है।

विजय गर्ग

कुछ लगे समय पहले अयोध्या में दिल दहला देने वाली एक घटना ने भारत में बुजुर्गों की हो रही दुर्दशा सामने रख दी है। कैंसर से पीड़ित बुजुर्ग महिला को उसके ही परिजन रात के अंधेरे में ई-रिक्शा में लाद कर सड़क किनारे छोड़ गए। महिला इतनी लाचार थी कि न तो बोल सकती थी और न ही चल सकती थी। यह पूरी घटना पास सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई, जिससे पता चलता है कि किस तरह एक असहाय महिला को सड़क पर छोड़ दिया गया। बाद में उसने अस्पताल में दम तोड़ दिया। यह कोई अकेली घटना नहीं है। हमारे समाज में बुजुर्गों के प्रति बढ़ती उपेक्षा और अमानवीयता की एक ऐसी परत है, जिसकी तह में हम नहीं जाते और अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। पारिवारिक मूल्य जो हमें बुजुर्गों का सम्मान करना सिखाते थे, अब किताबों और रीति-रिवाजों तक ही सीमित रह गए हैं। आज के समय में व्यक्तिवाद अपने चरम पर है और जीवन की गति तीव्र हो गई है, ऐसे में बुजुर्गों की देखभाल को अतिरिक्त जिम्मेदारी या बोझ के रूप में देखा जाता है।

हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहां परंपराएं और आधुनिकता आपस में टकरा रही हैं। संयुक्त परिवार धीरे-धीरे खत्म हो रहे है। उसकी जगह ल की संस्कृति ले रही है, जिसमें बुजुर्गों के लिए जगह कम होती जा है। आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत उपलब्धियों की ओर अग्रसर आज की पीढ़ी के लिए समय की कमी और सामाजिक प्रतिबद्धताओं की सीमाएं बुजुर्गों की देखभाल को बोझ बना रही हैं। भारत में बुजुगों की जनसांख्यिकी स्थिति भी सामाजिक चुनौती बन रही है। इस समय भारत में 160 वर्ष और उससे अधिक आयु के लगभग 15 करोड़ तीस लाख लोग हैं और अनुमान कि 2050 तक यह संख्या 34 करोड़ सत्तर लाख तक पहुंच सकती है। वर्ष 2031 तक बुजुर्गों की आबादी कुल जनसंख्या का लगभग 20.1 फीसद तक पहुंचने की संभावना है, जिससे हमारे सामाजिक और आर्थिक बुनियादी ढांचे पर भारी दबाव पड़ सकता है।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की रपट भी यही संकेत देती है कि आने वाले वर्षों में न सिर्फ स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव बढ़ेगा, बल्कि सामाजिक सुरक्षा प्रणालियां और पारिवारिक संरचनाएं भी इस बदलाव से गहराई से प्रभावित होंगी। देश के दक्षिणी और पश्चिमी हिस्सों, खासकर केरल और तमिलनाडु में बुजुर्गों का अनुपात सबसे ज्यादा है, जो दर्शाता है कि इन क्षेत्रों को इस जनसांख्यिकीय बदलाव से निपटने के लिए जल्द से जल्द और प्रभावी रणनीति अपनानी होंगी। स्पष्ट है कि भारत बहुत समय तक युवा राष्ट्र नहीं रह पाएगा। ऐसे में हमारी नीतियों और नजरिए बदलाव जरूरी लेकिन जनसंख्या वृद्धि ही एकमात्र चिंता का विषय नहीं है। बुजुगों के साथ दुर्व्यवहार और उपेक्षा की समस्या भी भारत में एक गहरे संकट के रूप में उभर रही है। कई अध्ययनों से पता चला है कि घर के अंदर बुजुगों की उपेक्षा की दर 47.5 फीसद है, जबकि घर के बाहर यह आंकड़ा 32 फीसद तक पहुंच जाता है।

वर्ष 2022 में 22 शहरों में किए गए एक अध्ययन में 35 फीसद बुजुर्गों ने कहा कि उनके बेटों ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया, 21 फीसद ने बहुओं को दोषी ठहराया, जबकि दो फीसद ने बाहरी सहायकों को दोषी ठहराया। ये आंकड़े बताते हैं कि वृद्ध जनों की सबसे अधिक उपेक्षा उन्हीं लोगों द्वारा की जा रही है, जिनसे उन्हें सबसे अधिक सुरक्षा और स्नेह की अपेक्षा होती है। महिलाओं की स्थिति और भी दयनीय है। पुरुषों की तुलना में वे मानसिक, भावनात्मक और आर्थिक शोषण का अधिक शिकार होती हैं, खासकर विधवा होने पर जब उनकी सामाजिक और पारिवारिक स्थिति और भी कमजोर हो जाती है।

सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता और पहुंच भी बेहद सीमित है। वृद्धावस्था पेंशन योजना के बारे में केवल 55 फीसद, विधवा पेंशन योजना के बारे में 44 फीसद और अन्नपूर्णा योजना के बारे में केवल 12 फीसद बुजुर्गों को ही जानकारी है। ये आंकड़े न केवल नीति निर्माण में खामियों की ओर इशारा करते हैं, बल्कि यह भी दर्शाते हैं कि जागरूकता और क्रियान्वयन स्तर पर हम कितने पीछे हैं। ग्रामीण भारत में स्थिति औ भी भयावह है, जहां स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच नगण्य है और सामाजिक सुरक्षा तंत्र लगभग नदारद है। बुजुर्गों की इस स्थिति का मूल कारण केवल आर्थिक या स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं ही नहीं, बल्कि पारिवारिक और सामाजिक ढांचे में आ रहे बदलाव भी हैं। संयुक्त परिवार जो कभी सामाजिक सुरक्षा की गारंटी हुआ करते थे, आज बिखर चुके हैं। शहरीकरण और वैश्वीकरण के दौर में युवा बेहतर जीवन की तलाश में शहरों और विदेशों का रुख कर रहे हैं, जिससे बुजुर्ग गांवों या छोटे शहरों में अकेले रह जाते हैं।

मध्यम वर्गीय परिवारों को पहले बुजुगों की देखभाल का सबसे मजबूत आधार माना जाता था, अब ये खुद आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। इलाज, देखभाल और पुनर्वास की बढ़ती लागत उन्हें लाचार बना रही है। महिलाओं की बढ़ती कार्य भागीदारी ने पारंपरिक देखभाल चुनौती दी दी है।।पहले महिलाएं घर पर र बुजुगों की देखभाल करती थीं, लेकिन आज उनके पास समय का अभाव है। संपत्ति और उत्तराधिकार को लेकर पारिवारिक विवाद भी बुजुर्गों के लिए अपमानजनक स्थितियां पैदा करते हैं। इन तमाम जटिलताओं के बीच मानसिक स्वास्थ्य ऐसा विषय है, जिस पर न तो समाज खुल कर बात करता है और न ही सरकार पर्याप्त ध्यान देती है। अवसाद, अकेलापन, चिंता और सामाजिक अलगाव जैसे मुद्दे बुजुगों की मूक पीड़ा को और गहरा करते हैं। कई बुजुर्ग अपनी पीड़ा नहीं बताते, क्योंकि उन्हें लगता है कि समाज में उनकी कोई आवाज नहीं है। चुप्पी तब एक सामाजिक अपराध में बदल जाती है, जब उनकी उपेक्षा को सामान्य मान लिया जाता है।

इसका समाधान सिर्फ सरकारी नीतियों से नहीं निकलेगा। इसके लिए एक समग्र, बहुआयामी और संवेदनशील दृष्टिकोण की आवश्यकता है। वृद्ध जनों के लिए राष्ट्रीय नीति का न केवल प्रभावी क्रियान्वयन हो, बल्कि समय पर उसमें संशोधन भी किया जाए ताकि वह वर्तमान सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप हो। सामुदायिक स्तर पर जागरूकता अभियान चला कर सामाजिक सोच में आवश्यक बदलाव लाया जा सकता है। निजी क्षेत्र और गैर-सरकारी संगठनों की भागीदारी से वृद्ध आश्रमों की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है और देखभाल के ऐसे तरीके विकसित किए जा सकते हैं जो पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच संतुलन बना सकें

वृद्ध जनों के साथ दुर्व्यवहार के मामलों में त्वरित न्याय होना चाहिए ताकि समाज को यह स्पष्ट संदेश मिल सके कि उनकी उपेक्षा और शोषण किसी भी कीमत पर स्वीकार्य नहीं है। परिवारों और समुदाय ऐसी संरचनाएं विकसित की जानी चाहिए जो वृद्ध जनों को सम्मानजनक जीवन जीने में सक्षम बना सकें। यदि हम वास्तव में एक विकसित राष्ट्र बनना चाहते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारा विकास समावेशी हो। कोई भी बुजुर्ग असहाय, अकेला और उपेक्षित न रहे।

लुप्त आदत

विजय गर्ग

एक बार एक पोषित दैनिक अनुष्ठान, आज पढ़ना हमारे जल्दबाजी के जीवन के मार्जिन पर खड़ा है। मंद दीपों के तहत स्टोरीबुक के माध्यम से फ़्लिप करने वाले बच्चों से लेकर समाचार पत्रों या उपन्यासों में अवशोषित वयस्कों तक, छवि एक बार सीखने, अवकाश और कल्पना को परिभाषित करती है। वह छवि, दुख की बात है, तेजी से लुप्त होती है। कारणों को देखना मुश्किल नहीं है। डिजिटल डेल्यूज ने स्क्रीन वाले पृष्ठों को बदल दिया है। बच्चों के लिए, YouTube वीडियो, रीलों और नशे की लत गेमिंग ऐप्स के लिए सोने की कहानियों की अदला-बदली की जाती है। वयस्क, इस बीच, सोशल मीडिया पर खंडित समाचार स्निपेट्स के माध्यम से ₹पढ़ने₹ का दावा करते हैं, सगाई के लिए स्क्रॉल करते हुए। एक किताब के साथ बैठने और एक तर्क या कहानी का पालन करने के धैर्य ने अंगूठे के बेचैन फ्लिक को रास्ता दिया है। इस गिरावट के परिणाम गहरे हैं। पढ़ना केवल साक्षरता के बारे में नहीं है-यह एकाग्रता, सहानुभूति और गंभीर रूप से सोचने की क्षमता बनाता है। जब बच्चे पढ़ने की आदतों के बिना बड़े होते हैं, तो वे विचारों के सक्रिय दुभाषियों के बजाय सामग्री के निष्क्रिय उपभोक्ता बनने का जोखिम उठाते हैं। वयस्कों के लिए, पुस्तकों से पीछे हटने से सार्वजनिक प्रवचन समाप्त हो गया है। एक पीढ़ी जो नहीं पढ़ती है, वह उथली राय, ध्रुवीकृत सोच और गलत सूचना के प्रति संवेदनशीलता से ग्रस्त है। विडंबना यह है कि रीडिंग को मारने के लिए दोषी ठहराई गई उसी तकनीक ने भी इसकी पहुंच को लोकतांत्रिक बना दिया है। ई-बुक्स, ऑनलाइन लाइब्रेरी और ऑडियोबुक अब एक बटन के क्लिक पर उपलब्ध हैं। फिर भी, बहुतायत ने सगाई में अनुवाद नहीं किया है। यह सामग्री का अभाव नहीं है बल्कि अनुशासन का नुकसान है जिसने संस्कृति को मिटा दिया है। पढ़ने के लिए समय, मौन और एकांत की आवश्यकता होती है- वस्तुओं को तेजी से विलासिता के रूप में माना जाता है। माता-पिता और स्कूल जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। शैक्षणिक दबाव ने अंकों के लिए एक कोर-पाठ्यपुस्तकों में पढ़ने को कम कर दिया है, परीक्षा के लिए संदर्भ सामग्री। कहानी, साहित्य और कल्पनाशील अन्वेषण को दरकिनार कर दिया गया है। घर पर, माता-पिता भी अक्सर पढ़ने के बजाय स्क्रीन की लत को मॉडल करते हैं, इस लुप्त होने की आदत के लिए कुछ रोल मॉडल वाले बच्चों को छोड़ देते हैं। इसलिए पठन संस्कृति का पुनरुद्धार जानबूझकर किया जाना चाहिए। स्कूलों को पाठ्यक्रम से परे पढ़ने के लिए स्थान बनाने की आवश्यकता है, जहां किताबें साथी हैं और बोझ नहीं हैं। सार्वजनिक पुस्तकालयों, बड़े पैमाने पर छोड़ दिया, जीवंत समुदाय हब के रूप में फिर से कल्पना की जानी चाहिए। परिवार के स्तर पर, छोटे कार्य-सोते पढ़ने, डिजिटल डिटॉक्स घंटे और साझा पुस्तक चर्चा पुस्तकों की अंतरंगता को बहाल कर सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात, समाज को पुराने जमाने के शगल के रूप में नहीं, बल्कि विचारशील नागरिकता की नींव के रूप में पढ़ना चाहिए।

समय से पहले जवान होता बचपन

विजय गर्ग

आज का दौर तकनीक, गति और उपभोक्तावाद का है। यह कहना गलत नहीं होगा कि हम एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जहाँ हर चीज़ पहले से कहीं ज्यादा तेज़ी से बदल रही है दुर्भाग्य से, बचपन भी जिन मासूम उम्रों में बच्चे खिलौनों के साथ खेलते और कहानियां सुनते थे, अब वही उम्र मोबाइल स्क्रीन, यूट्यूब चैनल और इंस्टेंट फूड के घेरे में बीत रही है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि किशोरावस्था के लक्षण, जो सामान्यतः 12 से 15 वर्ष की आयु में दिखाई देने चाहिए, आज 8-9 वर्ष के बच्चों में ही नज़र आने लगे हैं। यह केवल एक प्राकृतिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि एक गंभीर सामाजिक और मानसिक चुनौती है, जिसके दूरगामी दुष्परिणाम हो सकते हैं।

इसके पीछे कई कारण साफ़ तौर पर दिखाई देते हैं- रासायनिक तत्वों से भरा भोजन, हार्मोन युक्त पैकेजिंग, इंटरनेट पर बिना नियंत्रण के उपलब्ध अशोभनीय सामग्री, माता-पिता की व्यस्त जीवनशैली और खेलमैदानों का घटता उपयोग। इसका परिणाम यही है कि बच्चे न केवल शारीरिक रूप से समय से पहले परिपक्व दिखने लगते हैं, बल्कि भावनात्मक अस्थिरता, चिड़चिड़ापन और गलत संगति की ओर भी आसानी से आकर्षित होने लगते हैं। ऐसे में समाज और विशेष रूप से अभिभावकों की जिम्मेदारी कहीं अधिक बढ़ जाती है। बचपन को तेज करने की आवश्यकता नहीं है उसे संरक्षित और संवर्धित करने की आवश्यकता है। इसके लिए कुछ छोटे लेकिन महत्वपूर्ण

कदम अत्यंत आवश्यक हैं, बच्चों के खान-पान में प्राकृतिक और पौष्टिक तत्वों को पुनः स्थान दें। स्क्रीन टाइम को सीमित कर संवाद का समय बढ़ाएं। रोजाना खेलकूद और रचनात्मक गतिविधियों को अनिवार्य रूप से शामिल करें। बच्चों के साथ बैठकर कहानियों, जीवन मूल्यों और अनुभवों पर चर्चा करें। पार्क, मैदान, पुस्तकालय आदि जैसे सकारात्मक वातावरण का हिस्सा बनाएं। आज यदि हम यह सोचकर चुप रहे कि अभी तो सब ठीक है, तो आने वाले वर्षों में हमें एक ऐसी पीढ़ी का सामना करना पड़ सकता है जिसका बचपन अधूरा और यौवन असंतुलित होगा। यह समय सावधान होने का है -क्योंकि खतरे की घंटी बज चुकी है। चलिए, मिलकर निर्णय लें कि बचपन को तेज़ नहीं, सुंदर बनाना है और बच्चों को उम्र से पहले नहीं, अच्छे संस्कारों के साथ समय के अनुसार बड़ा करना

सुपरहैवी केमिस्ट्री आवर्त सारणी को पुनर्व्यवस्थित कर सकती है

विजय गर्ग

सुपरहेवी रसायन पूरी तरह से आवर्त सारणी को पुनर्व्यवस्थित कर सकता है। जबकि सुपरहेवी तत्वों का अध्ययन चुनौतीपूर्ण है और आवधिक रुझानों से दिलचस्प विचलन को प्रकट करता है, ये तत्व अभी भी मौलिक रूप से आवधिक कानून के अंतर्निहित सिद्धांतों का पालन करते हैं। आवधिक कानून क्या है? आवधिक कानून में कहा गया है कि तत्वों के भौतिक और रासायनिक गुण उनके परमाणु संख्या का आवधिक कार्य हैं। यही कारण है कि आवर्त सारणी के एक ही समूह (ऊर्ध्वाधर स्तंभ) में तत्व आम तौर पर समान गुणों को साझा करते हैं, क्योंकि उनके पास समान संख्या में वैलेंस इलेक्ट्रॉन होते हैं। आवर्त सारणी की व्यवस्था परमाणुओं के इलेक्ट्रॉन विन्यास पर आधारित है। भारी तत्व और सापेक्ष प्रभाव सुपरहेवी तत्व 103 (लॉरेनशियम) से अधिक परमाणु संख्या वाले होते हैं। इन तत्वों के रसायन विज्ञान की भविष्यवाणी मुख्य रूप से सैद्धांतिक गणनाओं के माध्यम से की जाती है, क्योंकि वे संश्लेषित और अध्ययन करने के लिए बेहद मुश्किल हैं। उनकी केमिस्ट्री इतनी आकर्षक होने का कारण सापेक्ष प्रभाव है। प्रकाश की गति

के करीब गति से आगे बढ़ने वाले इलेक्ट्रॉनों के लिए सापेक्ष प्रभाव महत्वपूर्ण हो जाते हैं। उच्च परमाणु संख्या वाले परमाणुओं के लिए, नाभिक का मजबूत सकारात्मक आवेश आंतरिक-खोल इलेक्ट्रॉनों को इन उच्च गति पर ले जाने का कारण बनता है। इसके दो बड़े परिणाम हैं:

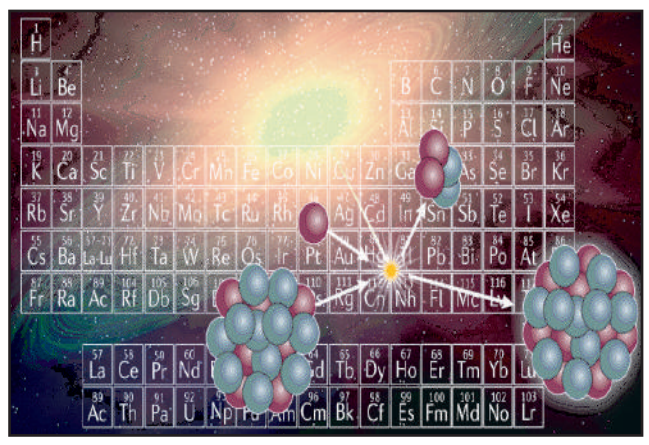

इलेक्ट्रॉन मास वृद्धिः इलेक्ट्रॉनों का द्रव्यमान बढ़ता है, जिससे उनके ऑर्बिटल्स अनुबंध करते हैं।

कक्षीय विभाजनः इलेक्ट्रॉन कक्षों के ऊर्जा स्तर शिफ्ट हो सकते हैं, जिससे हल्के तत्वों के लिए उपयोग किए जाने वाले सरल शेल मॉडल का टूटना हो सकता है। इन प्रभावों के कारण तत्वों को अपने लाइटर कॉन्गेनर्स से सरल एक्स्ट्रापोलेशन द्वारा भविष्यवाणी की तुलना में अलग व्यवहार करने का कारण बन सकता है। उदाहरण के लिए, सापेक्षता प्रभाव समूह 11 में एक तत्व का कारण बन सकता है जो पी-ब्लॉक तत्व की तरह अधिक व्यवहार करता है, या समूह 12 में एक तत्व का कारण बनता है जो एक अप्रत्याशित ऑक्सीकरण स्थिति प्रदर्शित करता है। आवर्त सारणी को पुनर्व्यवस्थित क्यों नहीं किया जाएगा जबकि सापेक्षता प्रभाव आकर्षक विचलन का परिचय देते हैं, वे मौलिक रूप से अंतर्निहित इलेक्ट्रॉन खोल संरचना को नहीं बदलते हैं जो आवधिक कानून को निर्धारित करता है। रासायनिक गुण अभी भी मुख्य रूप से वैलेंस इलेक्ट्रॉनों की संख्या का एक कार्य है। सुपरहेवी तत्वों में अभी भी प्रोटॉन की एक परिभाषित संख्या है, जो आवधिक तालिका पर उनकी स्थिति निर्धारित करती है। एक पूर्ण पुनर्व्यवस्था के बजाय, हम देखने की अधिक संभावना है:

रुझानों का कमजोर होनाः एक समूह के भीतर रुझान कम स्पष्ट या उल्टे भी हो सकते हैं।

विसंगतिपूर्ण व्यवहारः कुछ तत्व अपने समूह के लिए विशिष्ट नहीं ऑक्सीकरण स्थिति या रासायनिक संपत्ति प्रदर्शित कर सकते हैं।

₹स्थिरता के द्वीप₹ः रसायन विज्ञान इन तत्वों के लिए एक ₹समूह₹ को परिभाषित करने के बारे में हमारी समझ को चुनौती देने के लिए काफी विचलित हो सकता है, लेकिन प्रोटॉन काउंट के आधार पर तालिका की समग्र संरचना बनी रहेगी। संक्षेप में, सुपरहेवी रसायन विज्ञान सरल आवधिकता की सीमाओं को प्रकट करता है, लेकिन यह परमाणु संख्या और इलेक्ट्रॉन विन्यास के आधार पर आवधिक तालिका के मौलिक संगठनात्मक सिद्धांत को अमान्य नहीं

कई भारतीय विचारकों का मानना है कि भारत की धर्मनिरपेक्षता तभी बची रह सकती है, जब सरकारें सभी धर्मों से सैद्धांतिक दूरी बनाए रखें, या उन्हें समान रूप से बढ़ावा दें। परंतु वे राजनेताओं से कुछ ज्यादा ही उम्मीद कर रहे हैं। जैसा कि हाल ही में, असम के मुख्यमंत्री (और हिंदुत्व अनुयायी) ने पूछा : "हिमंत बिस्वा सरमा धर्मनिरपेक्ष कैसे हो सकते हैं? मैं एक कट्टर हिंदू हूं। इसी तरह, एक मुसलमान व्यक्ति धर्मनिरपेक्ष कैसे हो सकता है? वह एक कट्टर मुसलमान है।" आज, एक और स्वतंत्रता दिवस के बाद, आइए हम विचार करें क्या वास्तव में हम अपनी धर्मनिरपेक्ष विरासत को समाप्त करना चाहते हैं.

भारत की धर्मनिरपेक्ष संस्कृति संकट में

आधुनिक भारतीय इतिहास का सबसे यादगार पल' आजादी, जो इसी माह 78 साल पहले मिली थी.. हमारे सबसे दर्दनाक पलों में से एक भी था। इतिहास में पहली बार भारत, एक ऐसा देश जहां सहस्र शताब्दियों तक बहुलवाद फलता-फूलता रहा, धार्मिक आधार पर विभाजित हो गया। विभाजन ने हमारे बहुलवादी, बहुसांस्कृतिक समाज पर एक बुरा साया डाल दिया। आज, दुख की बात है कि कई भारतीय धर्मनिरपेक्षता को एक बुरा शब्द मानते हैं, और देश एक हिंदू राष्ट्र बनने पर तुला हुआ है। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, आइए इस स्थिति पर पुनर्विचार करें और धार्मिक सहिष्णुता, समानता और विविध मान्यताओं के सम्मान की अपनी विश्व-प्रसिद्ध विरासत को पुनः प्राप्त करें।

कल्पना कीजिए कि यदि धर्मनिरपेक्षता खत्म हो जाए तो भारत को क्या नुकसान होगा।

लगभग 4000 वर्ष पूर्व, हमारे वैदिक ऋषियों ने यह विचार गढ़ा कि 'सत्य एक है, और ज्ञानी इसे विभिन्न नामों से पुकारते हैं।' इस सरल विचार ने हमारे पूर्वजों को हजारों वर्षों तक अद्वितीय प्रगति और समृद्धि दिलाई। इसने सभी प्रकार के विश्वासों वाले लोगों को सर्वेश्वरवादी (हिंदू), नास्तिक (चार्वाक), भौतिकवादी (आजीविका), अनास्तिक (बौद्ध) और अध्यात्मवादी (जैन) एक साथ रहने और बढने का अवसर दिया। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में, हमारी समृद्धि के चरम पर, सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया, लेकिन एक फरमान सुनाया : "व्यक्ति को दूसरे के धर्म का सम्मान करना चाहिए ऐसा करने से व्यक्ति अपने धर्म को बढने में मदद करता है और साथ ही दूसरे के धर्म की सेवा भी करता है।" बौद्ध धर्म इस भारतीय दर्शन को लगभग पूरे एशिया और अंततः पृथ्वी के हर महाद्वीप तक ले गया। 1937 में, एक चीनी राजनेता, हू शी ने दुख व्यक्त किया कि "चीन को सांस्कृतिक रूप से जीतने के लिए भारत ने सैनिक भेजने के बजाय केवल कुछ धर्म प्रचारक भेजे।"

आठवीं शताब्दी के आसपास मुस्लिम शासकों के हिंसा के आधार पर विजय के बावजूद, ये बहुलवादी परंपराएं जीवित रहीं। औरंगजेब जैसे कुछ मुस्लिम बादशाहों ने अन्य धर्मों पर क्रूरतापूर्वक अत्याचार किए, लेकिन अकबर जैसे अन्य शासकों ने उनका सम्मान किया। अकबर ने अपने मंत्रिमंडल में विभिन्न धर्मों के लोगों को नियुक्त किया और एक समन्वयवादी धर्म (दीन-ए-इलाही) को बढ़ावा दिया।

जब 18वीं शताब्दी में अंग्रेज भारत आए, तब भी हिंदुओं और मुसलमानों के बीच गहरा भाईचारा था। 1857 में उन्होंने मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया और भारत के अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में प्रतीकात्मक रूप से एकजुट हुए। रानी लक्ष्मीबाई और बेगम हजरत महल जैसे हिंदू और मुस्लिम दोनों शासकों ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

भारत की धर्मनिरपेक्ष संस्कृति स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी कायम रही। मोतीलाल नेहरू और मोहम्मद अली जिन्ना, जो क्रमशः कांग्रेस और मुस्लिम लीग का प्रतिनिधित्व करते थे, के बीच 1916 में हुए समझौते को हिंदू-मुस्लिम सहयोग के प्रतीक के रूप में सराहा गया। एक ब्राह्मण और कांग्रेसी नेता गोपाल कृष्ण गोखले ने जिन्ना को 'हिंदू-मुस्लिम एकता का सर्वश्रेष्ठ दूत' कहा था। जब महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया, तो उन्होंने धार्मिक एकजुटता को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। उन्होंने कहा, "मेरा हिंदू धर्म सांप्रदायिक नहीं है। इसमें इस्लाम, ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म और पारसी धर्म सब धर्मों की अच्छाइयां शामिल हैं जो मुझे सबसे अच्छा लगता है।"

परंतु भारत की आजादी के बाद यह प्राचीन रिश्ता गहरे तनाव में आ गया। निर्णायक मोड़ तो एक दशक पहले ही आ गया था, जब जवाहर लाल नेहरू ने 1937 में कांग्रेस पार्टी द्वारा गठित प्रांतीय सरकारों में किसी भी मुस्लिम लीग नेता को जगह देने से इनकार कर दिया था। ऐसा नहीं था कि नेहरू मुसलमानों के खिलाफ थे, वे बस सांप्रदायिक पार्टियों के प्रतिनिधियों को सरकार में नहीं चाहते थे। लेकिन इस कठोर, एकतरफा फैसले ने जिन्ना को क्रोधित और बदले की भावना से भर दिया, और उसके बाद उन्हें राष्ट्रवादी विचारधारा की ओर वापस लाने की हर कोशिश नाकाम रही। जिन्ना ने 'इस्लाम खतरे में है' का नारा बुलंद किया और मुसलमानों को पाकिस्तान नामक एक अलग राष्ट्र के लिए एकजुट किया।

विभाजन ने स्वतंत्र भारत के दो सबसे बड़े समुदायों के बीच सद्भावना को गहरा आघात पहुंचाया। 1990 के दशक में हिंदुत्व मुख्यधारा में आया और अब भारत का प्रमुख राजनीतिक आंदोलन है। आज, कई हिंदू हिंदुत्व के पक्ष में एकजुट हो रहे हैं, जिसका उद्देश्य हिंदू राष्ट्र के रूप में हिंदू आधिपत्य स्थापित करना है।

हिंदुत्व के अनुयायियों को लगता है कि मुस्लिम अल्पसंख्यक भारत के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध नहीं हैं। यह भावना दिन-प्रतिदिन कठोर होती जा रही है और घृणा में बदल रही है। और जैसा कि शत्रुता की भावना में स्वाभाविक है, यह पारस्परिक रूप से फैल रही है। आज, यह अस्वीकार करना कठिन है कि भारत के कई मुसलमान और हिंदू एक-दूसरे से डरते हैं और यहां तक कि एक-दूसरे से नफरत भी करते हैं।

अगर भारत बहुसंस्कृतिवाद के अपने सदियों पुराने मूल्यों को बनाए रखना चाहता है, तो धर्म के आधार पर नफरत का यह नकारात्मक चक्र खत्म होना ही चाहिए। चूंकि हिंदुत्व अब राजनीतिक रूप से प्रबल है, इसलिए जरूरी है कि किसी भी प्रकार के धार्मिक तुष्टिकरण या उत्पीडन पर संवैधानिक रूप से प्रतिबंध लगाया जाए। मैं लंबे समय से यह तर्क देता रहा हूं कि भारत को धर्म और सरकार के बीच सख्त अलगाव (Separation of church and State) अपनाना चाहिए।

कई भारतीय विचारकों का मानना है कि भारत की धर्मनिरपेक्षता तभी बची रह सकती है, जब सरकारें सभी धर्मों से सैद्धांतिक दूरी बनाए रखें, या उन्हें समान रूप से बढ़ावा दें। परंतु वे राजनेताओं से कुछ ज्यादा ही उम्मीद कर रहे हैं। जैसा कि हाल ही में, असम के मुख्यमंत्री (और हिंदुत्व अनुयायी) ने पूछा : "हिमंत बिस्वा सरमा धर्मनिरपेक्ष कैसे हो सकते हैं? मैं एक कट्टर हिंदू हूं। इसी तरह, एक मुसलमान व्यक्ति धर्मनिरपेक्ष कैसे हो सकता है? वह एक कट्टर मुसलमान है।"

आज, एक और स्वतंत्रता दिवस के बाद, आइए हम विचार करें क्या वास्तव में हम अपनी धर्मनिरपेक्ष विरासत को समाप्त करना चाहते हैं?

-भानु धमीजा

जेईई मेन और जेईई एडवांस के बीच अंतर

विजय गर्ग

जेईई मेन और जेईई एडवांस्ड के बीच का अंतर जेईई उम्मीदवारों के लिए अपने कठिनाई स्तर के साथ-साथ समझने का मुख्य उद्देश्य है और इसके लिए संस्थान दरवाजे खोल रहे हैं। जेईई मेन परीक्षा संयुक्त प्रवेश परीक्षा के जेईई उम्मीदवारों के लिए पहला कदम है और यह सरकारी आधिकारिक निकाय द्वारा अच्छी तरह से आयोजित किया जाता है और यह एनटीए (राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी) है। यह 21 आईआईटी, 31 एनआईटी, 26 आईआईआईटी के साथ-साथ अन्य जीएफटीआई में प्रवेश करने के लिए प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है। उस सुविधा के अलावा, जेईई मेन परीक्षा पात्रता उम्मीदवारों को जेईई एडवांस की सबसे कठिन और प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाओं में से एक के लिए बैठने की अनुमति देती है।

दूसरी ओर, जेईई एडवांस परीक्षा जेईई मेन परीक्षा के बाद जेईई उम्मीदवारों के लिए अगला कदम है और यह आईआईटी में से एक द्वारा आयोजित किया जाता है लेकिन घूर्णी आधार पर। केवल शीर्ष 2.5 लाख उम्मीदवार जो इस तरह के रैंक वाले हैं, वे सबसे कठिन जेईई एडवांस परीक्षा में बैठने के लिए पात्र हैं और यह न केवल भारत में बल्कि भारत से बाहर भी अपनी कठिनाई के स्तर के कारण अत्यधिक प्रसिद्ध है। यह परीक्षा उम्मीदवारों को उनकी समस्या को सुलझाने के कौशल के साथ-साथ विश्लेषणात्मक कौशल के आधार पर परीक्षण करती है, जिसमें विभिन्न अवधारणाओं के अच्छे गहन ज्ञान की आवश्यकता होती है। जेईई मेन परीक्षा के विपरीत जो इसकी तुलना में अवधारणाओं की स्पष्टता पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है, जेईई एडवांस्ड परीक्षा अवधारणाओं के उन्नत अनुप्रयोगों के आधार पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है जो इस परीक्षा को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) में प्रवेश हासिल करने के लिए अंतिम सीढ़ी बना रही है।

30 वें संविधान संशोधन विधेयक के खिलाफ सरायकेला जेएमएम ने केंद्र सरकार का फूंका पुतला

झारखंड की सरकार दिल्ली के इशारों पर नहीं वल्कि उसके जनमानस के सुख -दुख पर चलती है: डां0 शुभेन्दु

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला ,सरायकेला मुख्यालय में केंद्र सरकार द्वारा संसद में 130वां संविधान संशोधन विधेयक को एक असंवैधानिक विधेयक बताते हुए झारखंड मुक्ति मोर्चा सरायकेला खरसावॉ जिला कमेटी द्वारा केंद्रीय भाजपा सरकार का पुतला दहन कर विरोध के स्वर ऊंचे किये गये । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे झामुमो जिला अध्यक्ष डॉ शुभेन्दु महतो ने कहा की आज दिल्ली के बंद कमरों में रची जा रही षड्यंत्र हमारे झारखंड की आत्मा, हमारी झारखंडी अस्मिता पर सीधा हमला है। यह साज़िश है एक तथाकथित ₹130वें संविधान संशोधन विधेयक₹ । जो दिल्ली में बैठे हुक्मरानों को यह ताक़त देगा कि वे रांची में बैठी आपकी अपनी, आपके हक़ की सरकार को जब चाहे बर्खास्त कर सकें ! उन्होंने कहा यह कोई कानून नहीं, यह भगवान बिरसा मुंडा के उलगुलान और दिशोम गुरु शिबू सोरेन के दशकों के संघर्ष का घोर अपमान ही है। उन्होंने एक अलग झारखंड राज्य के लिए अपनी जिंदगी नहीं दी थी कि दिल्ली जब चाहे हमारे जनादेश को अपनी जूते में चटाकर मसल दे ।

डॉ महतो ने कहा कि जब से झारखंड में हेमंत सोरेन की नेतृत्व में झारखंड मुक्ति मोर्चा की सरकार बनी है, दिल्ली वालों की आँखों में हम कांटे की तरह चुभ रहे हैं। क्योंकि हम जल, जंगल और ज़मीन की बात करते हैं ।

क्योंकि हम 1932 के खतियान की बात करते हैं, हम यहाँ के मूलवासियों और आदिवासियों के हक़ की बात करते आये हैं ।क्योंकि हमारी सरकार दिल्ली के इशारों पर नहीं, बल्कि झारखंड की जनता की ज़रूरतों पर चलती है।

डॉ महतो ने कहा की सामंती ताक़त हमें बर्दाश्त नही कर सकती । जब ये चुनावी मैदान में हमसे जीत नहीं पाए, तो इन्होंने एजेंसियों का जाल बिछाया, हमारे नेताओं को बदनाम करने की हर कोशिश की और सरकार गिराने के लिए विधायकों की खरीद-फरोख्त का घिनौना खेल खेला। हम सबने देखा है, पूरा देश गवाह है कि कैसे एक चुने हुए आदिवासी मुख्यमंत्री को परेशान करने के लिए दिल्ली ने अपनी पूरी ताक़त झोंक दी थी !जब वो अपने हर षड्यंत्र में नाकाम हो गए, तो अब वे संविधान का चेहरा बदलकर, पिछले दरवाज़े से तानाशाही लाना चाहते हैं।

यह विधेयक कहता है कि झारखंड की जनता जिसे अपना मुख्यमंत्री चुनेगी, उसे हटाने का अधिकार दिल्ली में बैठे कुछ लोग ही तय करेंगे।

डॉ महतो ने कहा कि में उनसे पूछना चाहता हूँ क्या झारखंड दिल्ली का एक कॉलोनी है, राज्य भी ? क्या हमारा वोट, हमारा जनादेश रद्दी का टुकड़ा है?

हमारे संविधान निर्माताओं ने सरकार की जवाबदेही विधानसभा के पटल पर तय की थी, जहाँ आपके चुने हुए विधायक बहस करते हैं, सवाल पूछते हैं।

सिर्फ जे एम एम पर नहीं, यह झारखंड के हर उस नागरिक पर हमला हजिसने तीर-धनुष पर बटन दबाकर अपनी किस्मत खुद लिखने का फैसला किया था।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने हमें सिखाया है कि ₹लड़ना होगा, जीतना होगा।₹ । हमारे पुरखों ने तीर-कमान से अंग्रेज़ों और महाजनों का मुक़ाबला किया था।

टाटा -चाईबासा मार्ग सरायकेला के इस पुतला दहन कार्यक्रम में झारखंड मुक्ति मोर्चा के पूर्व प्रत्याशी ,केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य गणेश चौधरी,जिला सचिव बैद्यनाथ टुडू,केंद्रीय सदस्य बिशु हेंब्रम,जिला उपाध्यक्ष भूंडा बेसरा,जिला उपाध्यक्ष भोला मोहंती,जिला सह सचिव जगदीश महतो, आदित्यपुर महानगर सचिव कृष्णा महतो, अभी मुखी, बीरेंद्र तिवारी,जिला उपाध्यक्ष धर्मु गोप, जिला उपाध्यक्ष शेख फरीद,छात्र मोर्चा जिला अध्यक्ष सुदामा हेंब्रम, हरि लोहार,शैलेंद्र महतो,सुबल महतो,घासीराम सोरेन,अमृत महतो,अमूल्य महतो, रामू त्रिपाठी,प्रकाश महतो,पंकज प्रधान,उमेश भोल,अक्षय मंडल,दिनबंधु महतो, जन्नत हुसैन, अविनाश कवि, कृष्णा राणा, बीजू मोदक, मोहम्मद अरशद जिला सचिव अल्फसंखयक, कपाली नगर अध्यक्ष सय्यद सलाउद्दीन, मोहम्मद नौशाद, आदि उपस्थित रहे।

आस्था, संकल्प, प्रेम, पर्यावरण और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का अनोखा संगम-हरितालिका तीज !

भारत त्योहारों का देश है। यहां प्रत्येक पर्व किसी न किसी धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा से जुड़ा होता है। इन्हीं पर्वों में से एक है हरितालिका तीज। इस बार हरतालिका तीज(बड़ी तीज) 26 अगस्त 2025 मंगलवार को मनाई जाएगी। पाठकों को बताता चलूं कि हरतालिका तीज व्रत हिंदू धर्म में मनाये जाने वाला एक प्रमुख व्रत है। यह भाद्रपद शुक्ल तृतीया का पावन पर्व है, जो वास्तव में नारी-संकल्प, स्त्री संकल्प, अटूट समर्पण और भक्ति का अद्भुत प्रतीक है। यह व्रत स्त्रियों के आत्मबल और अटूट आस्था को दर्शाता है, जिसमें शिव-पार्वती की आराधना के माध्यम से जीवन में सौभाग्य, समर्पण और सकारात्मक ऊर्जा का आह्वान किया जाता है।इस दिन महिलाएं निर्जला व्रत रखकर पति की लंबी उम्र के लिए कामना करती हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि पति-पत्नी के संबंधों की पवित्रता और सौहार्द बनाए रखने का यह एक सुंदर उत्सव है, जो आज भी उतने ही उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

भाद्रपद की शुक्ल तृतीया को हस्त नक्षत्र में भगवान शिव और माता पार्वती के पूजन का विशेष महत्व है।हरतालिका तीज व्रत कुमारी और सौभाग्यवती स्त्रियां करती हैं।मान्यता है कि इस व्रत को सबसे पहले माता पार्वती ने भगवान शंकर को पति के रूप में पाने के लिए किया था। कहते हैं कि इस व्रत करने से महिलाओं को सौभाग्य की प्राप्ति होती है। वैसे तो यह त्योहार पूरे भारत में बड़े ही हर्षोल्लास और खुशियों के साथ मनाया जाता है, लेकिन मुख्य रूप से यह बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश विशेष रूप से उत्तर भारत में मनाया जाता है।नेपाल में इसे तीज महोत्सव के रूप में तीन दिन तक बड़े उत्साह से मनाया जाता है।पाठकों को बताता चलूं कि कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में इस व्रत को 'गौरी हब्बा' के नाम से जाना जाता है। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार इस बार हरितालिका तीज पर सर्वार्थ सिद्धि, शोभन, गजकेसरी और पंचमहापुरुष जैसे चार शुभ योग बन रहे हैं। ये योग इस व्रत को और अधिक फलदायी और मंगलकारी बना रहे हैं। वास्तव में,हरतालिका दो शब्दों से मिलकर बना है-'हरत' और 'आलिका।' 'हरत' का मतलब है 'अपहरण' और 'आलिका' यानी 'सहेली।' यहां पाठकों को बताता चलूं कि, मां पार्वती की सखियों ने उन्हें उनके पिता द्वारा तय विवाह (भगवान विष्णु से) से 'हर' लिया और जंगल में ले गईं, ताकि वे तपस्या कर शिव को पति रूप में प्राप्त कर सकें। इसी कारण इसका नाम हरितालिका तीज पड़ा। पौराणिक कथाओं में विवरण मिलता है कि देवी पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए 108 जन्मों तक तपस्या की थी और 109वें जन्म में, हरितालिका तीज के दिन उनका विवाह भगवान शिव से हुआ।हरितालिका तीज को नारी-संवेदना का पर्व भी कहा जाता है, क्योंकि इस दिन महिलाएँ अपनी इच्छाओं, दुख-सुख और मन की बातें गीतों और सामूहिक नृत्यों के माध्यम से व्यक्त करती हैं।ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ तीज के गीतों में वैवाहिक जीवन की खुशियाँ और पीड़ा दोनों गाती हैं। वास्तव में यह पर्व प्रकृति और श्रृंगार से जुड़ा भारतीय संस्कृति का अनोखा, अद्भुत पर्व है। वास्तव में, यह पर्व वर्षा ऋतु में आता है जब धरती हरियाली से भर उठती है। इसलिए इसे प्रकृति-पूजन का पर्व भी माना जाता है।बहुत-सी जगहों पर महिलाएँ पीपल, बरगद और तुलसी के पौधे के नीचे पूजा करती हैं, जिससे पर्यावरण संरक्षण की परंपरा भी जुड़ी हुई है।इस दिन स्त्रियाँ पारंपरिक सोलह श्रृंगार करती हैं और हरी चूड़ियाँ व हरे वस्त्र धारण करती हैं।हरा रंग प्रकृति, समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक है। सावन और भाद्रपद की हरियाली से इसका गहरा संबंध है। लाल रंग देवी पार्वती का प्रिय है, जो प्रेम और शक्ति का प्रतीक है। हरा रंग हरियाली और समृद्धि का संकेत देता है, जबकि गुलाबी रंग सौम्यता और आपसी समझ का प्रतीक माना जाता है। इसके विपरीत, काला, नीला, सफेद और क्रीम रंग इस दिन वर्जित माने जाते हैं।कुल मिलाकर, हरितालिका तीज सिर्फ पति की लंबी आयु का व्रत मात्र ही नहीं है, बल्कि यह नारी की आस्था, संकल्प, प्रेम, पर्यावरण और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का अनोखा संगम है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

जमशेदपुर में अवैध गन फैक्ट्री,निर्मित आग्नेयास्त्र तथा मादक पदार्थ जप्त, टाटा से बनकर बिहार जाता था गन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

जमशेदपुर। जमशेदपुर के सोनारी थाना अधीन तिलोभट्ठा में पुलिस ने एक अवैध गन फैक्टरी का उद्भेदन किया है जो थाने के समीप चलता था तथा अंतरराज्यीय स्तर पर आग्नेयास्त्रों को खपाता था . पुलिस ने छापेमारी कर वहां से छह गोली ,कट्टा बरामद किया . इसके साथ ही तीन लेथ मशीन को पुलिस जब्त कर क्रेन की मदद से सोनारी थाना ले गयी. इस मामले में पुलिस आरोपी समीर सरदार के कुछ साथी को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है. वहीं समीर की तलाश में शहर के कई जगहों पर देर रात तक छापेमारी की. हालांकि अब तक शातिर बदमाश समीर सरदार फरार है.

समीर सरदार पिछले करीब छह माह से हथियार बनाने का काम कर रहा था. सोनारी तिलोभट्ठा में लेथ पर हथियार बनाने के बाद वह मुंगेर में सप्लाई करता था. वहां फाइनल फिनिसिंग मिलने के बाद उसे बिहार समेत झारखंड के कई जिला में सप्लाई किया जाता था. बिहार में होने वाले चुनाव को लेकर हथियारों की मांग ज्यादा थी. इस कारण समीर सरदार हथियार तैयार कर रहा था. समीर सरदार शहर में भी हथियार की सप्लाई करता था. इसके अलावा वह घर से गांजा की बिक्री भी करता था . सोमवार को पुलिस केस का उद्भेदन करेगी पुलिस सूत्रों के अनुसार समीर सरदार पिछले करीब छह माह से हथियार बनाने का काम कर रहा था. सोनारी तिलोभट्ठा में लेथ पर हथियार बनाने के बाद वह मुंगेर में सप्लाई करता था. वहां फाइनल फिनिसिंग मिलने के बाद उसे बिहार समेत झारखंड के कई जिला में सप्लाई किया जाता.

उधर समीर सरदार और लखीन्द्र सरदार के घर से 1.4 किलो गांजा, एक देशी पिस्टल, दो जिंदा गोली, 2.41 लाख रुपये नकद, सोने की चेन, मोबाइल फोन और इलेक्ट्रॉनिक वेट मशीन बरामद की गई.इसी तरह उनके गोदाम से लेथ मशीन, मिलिंग मशीन, ड्रिलिंग मशीन, ग्राइंडर मशीन, विद्युत मोटर, पिस्टल बनाने के औजार, अधनिर्मित पिस्टल पार्ट और नौ जिंदा गोली भी जब्त की गई। पुलिस ने बरामदगी के बाद सोनारी थाना में केस दर्ज किया है, जिसमें आर्म्स एक्ट और एनडीपीएस एक्ट की धाराएं लगाई गई हैं. पुलिस अब फरार आरोपियों की तलाश में जुट गई है और मामले की जांच तेज कर दी गई है. इस मामले में पुलिस ने सोनारी थाने में समीर सरदार, लखिंद्र सरकार, विजय सरदार और विशाल सरदार के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है. आरोपियों की तलाश में दबिश डाली जा रही है।

हजारीबाग कोयला खनन परियोजना में उग्रवादियों ने तीन हायबा ,तीन पोकलेन जलाये

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। हजारीबाग जिले के चरही स्थित सीसीएल की तापिन नॉर्थ परियोजना में शनिवार देर रात उग्रवादी संगठन टीपीसी (तृतीय प्रस्तुति कमेटी) ने उत्पात मचाया। लगभग 10 की संख्या में पहुंचे हथियारबंद उग्रवादियों ने आउटसोर्सिंग कंपनी आरकेऐस के माइनिंग क्षेत्र में खड़े तीन पोकलेन और तीन हाइवा वाहनों को आग के हवाले कर दिया। इस घटना से कंपनी को करोड़ों रुपये का नुकसान होने का अनुमान है।

घटना रात करीब 12 से 1 बजे के बीच हुई। उग्रवादियों ने कंपनी के सुपरवाइजर मणिकांत कुमार और चालकों के साथ जमकर मारपीट की। पीड़ितों में मो. जाहिद अंसारी, जीवन चौहान, शंभू चौहान, प्रेम कुमार, संजय महतो, अशोक कुमार और मो. अमजद शामिल हैं। उग्रवादियों ने सभी के मोबाइल फोन छीनकर पास की झाड़ियों में फेंक दिए। घटना को अंजाम देने के बाद उग्रवादी संगठन ने मौके पर पोस्टर चिपका कर कंपनी को काम बंद करने की सख्त चेतावनी दी।

आरकेएस कंपनी पिछले चार वर्षों से सीसीएल की इस परियोजना में कोयला खनन का कार्य कर रही है। कंपनी के वाहनों पर हमला और आगजनी की यह घटना अब तक की सबसे बड़ी वारदात मानी जा रही है।

घटना की जानकारी मिलने पर चरही थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाने की कोशिश शुरू की। पुलिस ने घटनास्थल से पोस्टर बरामद किया है और मामले की जांच तेज कर दी है।

वैश्विक व्यवस्था में लड़ाई टैंक व तोप से नहीं, टैरिफ़ वॉर से

डॉ.नर्मदेश्वर प्रसाद चौधरी

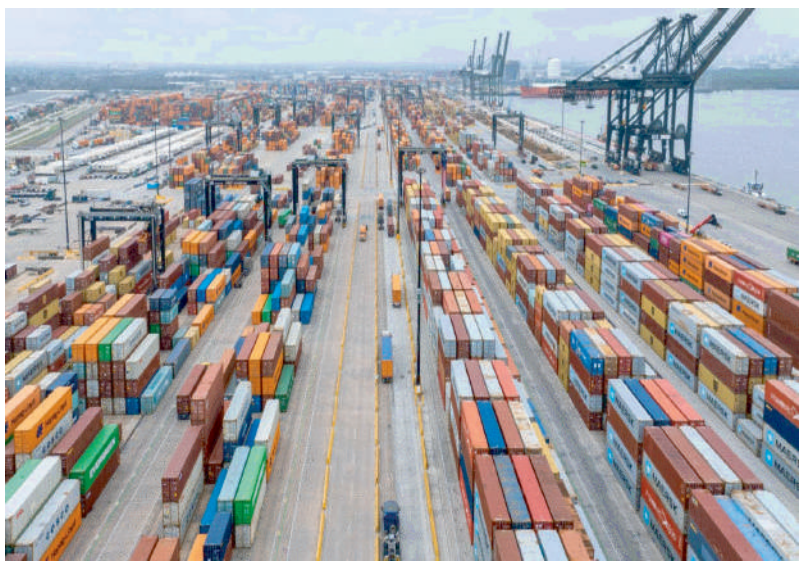

आज दुनिया 21 वीं सदी में प्रवेश कर रही है और 21वीं सदी की वैश्विक व्यवस्था में एक अजीब सा विरोधाभास उभर कर सामने आया है। एक ओर वैश्वीकरण का सपना जिसमें सीमाएं सिर्फ नक्शों तक सीमित हों और बाजारों की पहुँच हर कोने तक हो, वहीं दूसरी ओर टैरिफ़ वॉर जैसी घटनाएं जो उसी सपने की नींव में दरार डालने का काम कर रही हैं। वैश्वीकरण का युग बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में जब शुरू हुआ, तो पूरी दुनिया जैसे एक साझा बाज़ार में बदलने लगी थी पर आज, तीसरे दशक की दहलीज़ पर खड़ी दुनिया यह देख रही है कि अमेरिका , चीन और भारत जैसे आर्थिक महाशक्तियों के बीच शुरू हुआ 'टैरिफ़ युद्ध' केवल दो देशों की बात नहीं रह गया बल्कि एक वैश्विक मानसिकता को दर्शाने लगा है, एक ऐसी मानसिकता, जो संरक्षणवाद की ओर लौटना चाहती है।

अब लड़ाई टैंक और तोप से नहीं, शुल्क और आर्थिक प्रतिबंधों से लड़ी जाती हैं। यह युद्ध जितना चुपचाप चलता है, उतना ही गहरा असर छोड़ता है। कभी एक किसान के सपने पर, कभी एक मज़दूर की रोज़ी- रोटी पर और कभी एक छोटे व्यापारी की उम्मीदों पर। जब कोई देश उदाहरण के लिए अमेरिका, किसी अन्य देश जैसे चीन व भारत से ज़्यादा आयात करता है और बदले में कम निर्यात तो व्यापार का घाटा बढ़ता है। इसे संतुलित करने के लिए टैरिफ़ लगाए जाते हैं लेकिन यह कहानी सिर्फ़ घाटे की नहीं है। इसमें राजनीतिक दबाव, तकनीकी वर्चस्व और बौद्धिक संपदा की लड़ाई भी शामिल है।

अमेरिका का आरोप रहा है कि चीन न केवल अपनी मुद्रा को कृत्रिम रूप से सस्ता बनाए हुए है बल्कि वह अमेरिकी कंपनियों की तकनीक को भी संरक्षणहीन रूप से अपना रहा है। ऐसे में टैरिफ़ एक आर्थिक हथियार की तरह इस्तेमाल हुआ और यह केवल दबाव डालने के लिए, चेताने के लिए।

वहीं, घरेलू राजनीति का भी इसमें रोल कम नहीं है। जब किसी देश के भीतर का उद्योग विदेशी प्रतिस्पर्धा से जूझ रहा होता है, तो टैरिफ़ एक तरह से उसे ₹संजीवनी₹ देने का उपाय माना जाता है। चुनाव आते हैं, वादे किए जाते हैं, और नीतियाँ बनती हैं। कहते हैं, हर नीति का एक चेहरा दिखता है और एक छिपा रहता है। टैरिफ़ वॉर भी कुछ ऐसा ही है। स्थानीय उद्योगों को राहत शुरुआती तौर पर कुछ घरेलू उद्योगों को इसका फायदा ज़रूर मिलता है। जैसे अमेरिका में स्टील उद्योग ने राहत की सांस ली जब चीनी स्टील पर शुल्क लगाया गया। सरकारी राजस्व में वृद्धि टैरिफ़ से सरकारी खज़ाने में कुछ पैसे आते हैं पर क्या यह आर्थिक स्थायित्व की कीमत चुका पाते हैं?

उपभोक्ता पर भार , अंततः महंगे उत्पादों का भार आम आदमी पर ही पड़ता है। खासतौर पर उन पर जो अपनी आय का बड़ा हिस्सा आवश्यक वस्तुओं पर खर्च करते हैं। और सबसे महत्वपूर्ण है वैश्विक उत्पादन श्रृंखलाओं (ग्लोबल सप्लाई चेन) पर इसका असर। आज कोई भी वस्तु एक देश में पूरी नहीं बनती। कंप्यूटर चिप्स हों या मोबाइल फोन, वे कई देशों से गुज़रकर तैयार होते हैं। ऐसे में टैरिफ़ न केवल लागत बढ़ाते हैं, बल्कि उत्पाद की उपलब्धता को भी प्रभावित करते हैं।

भारत ने इस वैश्विक उठा-पटक के बीच एक परिपक्व और संतुलित दृष्टिकोण अपनाया है। टैरिफ़ वॉर में सीधे कूदने के बजाय भारत ने संवाद और कूटनीति को तरज़ीह दी। चाहे WTO हो या द्विपक्षीय वार्ताएं, भारत ने अपने हितों की रक्षा समझदारी से की है। 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसी पहलें सिर्फ़ नारे नहीं बल्कि दीर्घकालिक रणनीति हैं जिसका उद्देश्य है घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहन देना और विश्व पटल पर एक मज़बूत विनिर्माण शक्ति के रूप में उभरना। साथ ही, भारत ने आयात पर आवश्यकतानुसार एंटी-डंपिंग ड्यूटी लगाई। यह व्यापार को अव्यवस्थित करने वालों के लिए एक चेतावनी रही, न कि युद्ध की घोषणा।

टैरिफ़ वॉर एक अल्पकालिक राजनीतिक समाधान तो हो सकता है पर यह स्थायी आर्थिक शांति का रास्ता नहीं बन सकता। यह वह द्वार है, जो देशों को फिर से सीमाओं में कैद कर सकता है। यह समझना ज़रूरी है कि वैश्वीकरण केवल व्यापारिक लाभ का नाम नहीं है बल्कि यह एक साझा भविष्य की उम्मीद है। जब दुनिया के देश एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं, तब एक देश की आर्थिक लड़खड़ाहट पूरी व्यवस्था को डगमगा सकती है। ऐसे में संवाद, सहयोग और विश्वास ही एकमात्र विकल्प हैं।

टैरिफ़ दीवारें बनाते हैं, पर संवाद सेतु बनाता है। हमें दीवारों की नहीं, सेतुओं की ज़रूरत है। ताकि हम मिलकर एक बेहतर आर्थिक विश्व बना सकें। वैश्वीकरण में इसका असर सभी पर पड़ता है।

नर्मदेश्वर प्रसाद चौधरी

दुरियां क्यों बढ़ रही है..।

शोर-शराबे से आहत हुई लोकसभा
जब काम नहीं हो रहा तो
विकास का क्या होगा
देश में राजनीतिक दूरियां क्यों बढ़ रही है।
जब नीतियों का खाका नहीं तैयार
संसाधनों का प्रबंधन हो गया बेहाल
संसद जनता की नहीं बन रही आवाज
देश में राजनीतिक दूरियां क्यों बढ़ रही है।
पक्ष हो या फिर विपक्ष
राष्ट्र के
मजबूत होते हैं पहिए
जब इनमें नहीं हो तालमेल फिर कैसे
चलेंगी राजनीति की यहां रेल
जनहित के मुद्दों पर क्यों नहीं हो रहीं बहस
देश में राजनीतिक दूरियां क्यों बढ़ रही है।
राज्यसभा व लोकसभा की संसदीय प्रणाली
क्यों ध्वस्त हो रही है
जो लक्ष्य 120 घंटे की चर्चा का
वह सिर्फ 37 घंटे में ही सिमिट गया
कार्यवाही बाधित कर क्यों विरोध ?
ऐसा क्यों हो रहा है
देश में राजनीतिक दूरियां क्यों बढ़ रही है।।

हरिहर सिंह चौहान

बीजेपी और फाइव स्टार चॉकलेट

शिवानन्द मिश्रा

आपको वो पुराना Five Star Chocolate का ऐड याद होगा ?

"कभी कुछ ना करके भी देखों" ।

एक बुज़ुर्ग महिला सड़क किनारे खड़ी होती है। उनकी छड़ी गिर जाती है। वो बगल में खड़े लड़के से कहती हैं – "बेटा, छड़ी उठा दो।" लेकिन लड़का Five Star खाने में इतना बिज़ी होता है कि उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं देता। मजबूरी में वो बुज़ुर्ग महिला खुद झुककर छड़ी उठाने जाती है। तभी ऊपर से मकान का हिस्सा टूटकर गिर जाता है – ठीक उसी जगह जहां वो खड़ी थीं। अब महिला समझ जाती है कि अगर उस लड़के ने छड़ी उठा ली होती और वो वहीं खड़ी रहतीं तो उनकी मौत तय थी। वो मुस्कुराकर कहती हैं – "Thank You Beta" और आगे बढ़ जाती हैं।

यही ऐड आज की राजनीति पर सटीक बैठता है। जबसे राहुल गांधी और कांग्रेस को एहसास हुआ है कि वो लंबे समय तक सत्ता से दूर रहने वाले हैं, तबसे उनका हर एजेंडा बस हंगामा खड़ा करना और देश में हिंसा भड़काने की कोशिश रह गया है। पहले CAA के बहाने देशभर में आंदोलन खड़ा किया गया। महीनों तक दिल्ली और आसपास के इलाके बंधक बने रहे। उम्मीद थी कि मोदी सरकार कभी न कभी घैर्य खोकर बल प्रयोग करेगी लेकिन सरकार फाइव स्टार चॉकलेट खाती रही। नतीजा यह हुआ कि आंदोलनजीवी धीरे-धीरे थकने लगे। कभी बिरयानी, कभी दिहाड़ी, कभी मुफ्त Wi Fi और चाय – इन्हीं लालचों में धरने चलते रहे। फंडिंग करने वाले भी धीरे-धीरे डरकर पीछे हटने लगे। फिर आया कोरोना, सरकार ने बिना लाठी, बिना गोली, बस फंडिंग के स्रोत को पकड़कर आंदोलन को वहीं खत्म कर दिया।

दिल्ली की अर्थव्यवस्था को जितना नुकसान धरनों से हुआ, उससे कहीं ज़्यादा विदेशी फंडिंग भारत की अर्थव्यवस्था में फंस कर सरकार के हाथ लग गई। फिर खड़ा हुआ किसान आंदोलन – एक और आंदोलन।

जिन कृषि कानूनों की मांग महेन्द्र सिंह टिकैत पूरी ज़िंदगी करते रहे – वही कानून मोदी सरकार लेकर आई थी लेकिन,भूपेन्द्र सिंह हुड्डा गैंग और खालिस्तानी इसमें कूद पड़े।

दिल्ली बॉर्डर पर DJ, दारू, पिज़्ज़ा, वख़ना – सबका इंतजाम हुआ। "भर जा मोदी" के नारे लगे। महिलाओं से दुष्कर्म की खबरें आईं।

दलित सिक्ख की हत्या हुई। 26 जनवरी को लाल किले पर हमला हुआ। पुलिसवालों को खाई में धकेला गया लेकिन मोदी सरकार फिर फाइव स्टार चॉकलेट खाती रही।

धीरे-धीरे समाज खुद समझ गया कि यह आंदोलन असल में गुंडई है। हरियाणा और पंजाब के सामान्य किसानों ने किनारा कर लिया। विदेशी फंडिंग का नेटवर्क खुल गया। और आंदोलन अपनी मौत मर गया।

खालिस्तानी – कनाडा और पाकिस्तान से फंडिंग लेकर खेल खेलते रहे। कभी पंजाब में हिंसा। कभी कनाडा में मंदिरों पर हमला। कभी प्रधानमंत्री के काफिले को घेरना। वीडियो गेम और म्यूज़िक वीडियो बनाकर PM की हत्या का सपना दिखाना लेकिन मोदी सरकार फिर फाइव स्टार चॉकलेट खाती रही।

कभी-कभार सुनाई दिया कि "अज्ञात हमलावर" ने किसी बड़े खालिस्तानी को निबटा दिया। धीरे-धीरे आंदोलन स्थगित हो गया – बिना 10-20 हज़ार मौतों के।

असली सच ये है कि –

कोई भी आंदोलन जो लंबे समय तक खिंचता है, उसका उद्देश्य पार्टी या नेता पैदा करना होता है लेकिन वो तभी जन्म लेता है जब सरकार हिंसक दमन करे। सरकार हिंसा करेगी = आंदोलन नेता पैदा करेगा। सरकार धैर्य रखे = आंदोलन बिना असर के खत्म। यही कारण है कि राहुल गांधी एंड कम्पनी बार-बार मोदी सरकार को उकसाते हैं। वे चाहते हैं कि सरकार हिंसा करे और आंदोलन से "हीरो" पैदा हो लेकिन मोदी जी अति-धैर्यवान, जितेंद्रिय, और दृढ़ हैं। वे फाइव स्टार खाकर मुस्कुरा देते हैं।

न CAA से कोई नेता पैदा हुआ, न किसान आंदोलन से। न खालिस्तानी से। अब राहुल गांधी गैंग नया खेल खेल रहा है – वोटर लिस्ट सुधार के नाम पर आंदोलन। उन्हें लगता है कि वो बांग्लादेश जैसा माहौल बना देंगे लेकिन उन्हें समझ नहीं है कि मोदी जी शेख हसीना नहीं हैं। शेख हसीना ने बांग्लादेश में आंदोलनकारियों को जवाब देने का फैसला किया और हिंसा हुई। नतीजा – छोटे छोटे छात्र लीडर नेता बन गए। शेख हसीना को सत्ता और देश दोनों छोड़ना पड़ा। वही गलती मोदी जी कभी नहीं करेंगे। राजनीति में "कुछ न करना" भी बहुत बड़ा काम होता है और "कुछ न बोलना" भी बहुत बड़ा जवाब।

राहुल गांधी और कांग्रेस रोज़ नौटंकी करते रहेंगे, लेकिन मोदी सरकार का सबसे बड़ा जवाब यही होगा – मौन + धैर्य।

कभी कभी राजनीति में भी फाइव स्टार चॉकलेट खा कर कुछ ना करना ही सबसे बड़ी रणनीति होती है।

रंगारेड्डी ने दिखाई है देश के हर जिले को राह

अमरपाल सिंह वर्मा

क्या कभी आपने सोचा है कि एक छोटा सा जिला भी देश का सबसे अमीर इलाका बन सकता है? आम तौर पर यही धारणा है कि दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और गुरुग्राम ही तरक्की और दौलत के असली ठिकाने हैं लेकिन हाल ही में तेलंगाना के रंगारेड्डी जिले ने इस सोच को बदल दिया है। हैदराबाद के निकट बसा रंगारेड्डी जिला प्रति व्यक्ति 11.46 लाख रुपये की जीडीपी के साथ पूरे देश में नंबर एक पर पहुंच गया है। इस उपलब्धि ने जहां रंगारेड्डी को गौरवान्वित किया है, वहीं देश के अन्य जिलों को भी प्रेरणा दी है। अब सवाल है कि जब रंगारेड्डी ऐसा कर सकता है तो बाकी जिले क्यों नहीं कर सकते?

रंगा रेड्डी जिले का गठन 15 अगस्त 1978 को हैदराबाद शहरी तालुका के कुछ हिस्से को अलग करके और पूर्ववर्ती हैदराबाद जिले के शेष तालुकाओं के संपूर्ण ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को मिलाकर किया गया था। इस जिले का नाम पहले हैदराबाद (ग्रामीण) था, जिसे बाद में बदल कर आंध्रप्रदेश के पूर्व सीएम के.वी. रंगा रेड्डी के नाम पर रंगा रेड्डी जिला कर दिया गया लेकिन सरकार की रुचि, आम लोगों की मेहनत और सुनियोजित विकास ने इस इलाके की तकदीर ही बदल कर दी है।

रंगारेड्डी की कायापलट किसी जादू की छड़ी का कमाल नहीं है। रंगारेड्डी की आर्थिक सफलता का श्रेय इसके फलते-फूलते आईटी कॉरिडोर, मजबूत दवा उद्योग और विशाल प्रौद्योगिकी पार्कों को है। इस विकास ने इस जिले को निवेश और रोजगार के लिए आकर्षण का केंद्र बना दिया है जिसे साबित होता है कि अगर ईमानदारी और मेहनत से प्रयास किए जाएं तो सब कुछ संभव है। अगर किसी इलाके में सडकें अच्छी हों, बिजली-पानी की कमी न हो और उद्योग स्थापना के लिए अनुकूल एवं सकारात्मक वातावरण तथा सुविधाएं हों तो कौन उद्यमी वहां नहीं जाना चाहेगा? रंगारेड्डी में यह सब कुछ मिला तो वहां निवेश करने वाले बढ़ते चले गए। पड़ोस में बसे हैदराबाद ने सोने में सुहागे का काम किया लेकिन इस सफलता का श्रेय स्थानीय पढ़े-लिखे और कुशल युवाओं को भी है। जैसे ही मौके आए, उन्होंने उन्हें पकड़ने में देर नहीं की।

रंगारेड्डी ने एक मिसाल कायम कर देश के बाकी जिलों को राह दिखाई है। हमारे देश का हर जिला कोई न कोई खासियत रखता है। कहीं जमीन उपजाऊ है, कहीं खनिज भरे पड़े हैं, कहीं पर्यटन की विपुल संभावना है। बड़ा सवाल है कि फिर भी अधिकांश जिले आगे क्यों नहीं बढ़ पा रहे? इसकी मुख्य वजह यह है कि हम कई जगह अपनी ताकत पहचान ही नहीं पाते हैं। कभी प्रशासनिक दिक्कतें इतनी होती हैं कि निवेशक उधर झांकना ही पसंद नहीं करते हैं। कहीं स्थानीय नेतृत्व की सीमित सोच के कारण विकास को पंख नहीं लग पाते हैं।

रंगारेड्डी की सफलता बहुत कुछ सिखाती है। रंगारेड्डी का संदेश है कि सबसे पहले अपनी ताकत पहचानो। फिर युवाओं को मौका दो। युवाओं को सरकारी नौकरी का सपने दिखाना बंद कर उन्हें उद्यमिता की राह पर लाया जाए। निवेशकों को ऐसा विश्वसनीय वातावरण मिलना चाहिए जिससे वे दूरदराज के छोटे जिलों में भी पैसा लगाने में संकोच न करें। इसके साथ-साथ शिक्षा और कौशल विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि इसके बिना युवाओं के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।

रंगारेड्डी की तर्ज पर हर जिले को ऊंचाइयों पर ले जाना संभव है बशर्ते, स्थानीय नेतृत्व भी इसमें अहम भूमिका निभाए। अगर स्थानीय जन प्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी ठान लें कि हमें अपने जिले की तस्वीर बदलनी है तो यह मुमकिन है। आज रंगारेड्डी इसका बड़ा उदाहरण है। गुरुग्राम, बेंगलुरु, मुंबई या नोएडा जैसे शहर सालों से निवेश के गढ़ रहे हैं लेकिन रंगारेड्डी ने साबित किया है कि अगर ध्यान दिया जाए तो छोटे जिले भी इनसे मुकाबला कर सकते हैं। छोटे इलाकों को कमतर नहीं आंकना चाहिए। एक ओर जहां बड़े शहरों की भीड़, महंगाई और अव्यवस्था निवेशकों को परेशान करती है वहीं छोटे जिलों में अगर भरोसा और सुविधाएं मिले तो निवेशक खुद खिंचे चले आते हैं।

रंगारेड्डी ने साबित किया है कि विकास किसी बड़े शहर की बपौती नहीं है। सही रणनीति, पारदर्शिता और युवाओं की ऊर्जा के दम पर कोई भी जिला देश का नया आर्थिक चेहरा बन सकता है। जरूरत इस दिशा में सोचने, योजनाएं बनाने और उन्हें यथार्थ के धरातल पर उतारने की है।

श्रीलंकाई अधिकारी प्रशिक्षण के लिए ओडिशा पहुँचे

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: पड़ोसी देश श्रीलंका के तीस अधिकारी आज ओडिशा पहुँचे। वे भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के तत्वावधान में और ओडिशा सरकार के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के समन्वय से पाँच दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। इस अवसर पर, उनका माननीय मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी से मिलने का कार्यक्रम है। विभिन्न स्थानों के अपने भ्रमण के दौरान, उन्हें ओडिशा की कला-संस्कृति-इतिहास-बौद्ध विरासत से अवगत कराया जाएगा।

उन्हें स्थानीय राजस्व अधिकारी प्रशिक्षण संस्थान में प्राकृतिक आपदाओं के दौरान और आपदाओं से पहले और बाद में मीडिया की भूमिका पर प्रशिक्षण दिया जाएगा। वे हॉकी विश्व कप के दौरान लागू की गई सफल मीडिया रणनीति पर कलिंग स्टेडियम में प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। श्वेत पैगोडा के शांतिपूर्ण आकर्षण से मंत्रमुग्ध होकर, वे कोणार्क की कालातीत वास्तुकला और मराल-मालिनी-नीलाम्बु-चिल्का की अद्वितीय सुंदरता का आनंद लेंगे। राज्य संग्रहालय के भ्रमण के दौरान, वे ओडिशा की समृद्ध कला, जीवंत संस्कृति, समृद्ध विरासत और गौरवशाली इतिहास के बारे में जानेंगे। वे बुनाई के क्षेत्र में ओडिशा की बुनाई की मनमोहक सुंदरता का अनुभव करेंगे।

इन श्रीलंकाई अधिकारियों ने आज केआईटी विश्वविद्यालय का दौरा किया। अधिकारियों के समूह का स्वागत सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के निदेशक अनुज दास पटनायक, निदेशक (तकनीकी) गुरबीर सिंह, अतिरिक्त प्रशासनिक सचिव बिष्णुप्रिया साहू, उप निदेशक सुचेता प्रियदर्शिनी और सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के अन्य अधिकारियों ने किया।

पूर्वी सिंहभूम एवं सरायकेला का उपायुक्त ने लिया अन्न -वस्त्र दाताओं का जायजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला/घाटशिला ,इस देश का वास्तविक रीढ़ किसान ही थे, है, और आगे भी रहेंगे कारण लोग लोहा पत्थर,युरेनियम, मैंगनीज नहीं वल्कि अनाज ही खाते आये है और आगे भी खायेंगे । पर उनका जायजा विगत तीस वर्षों से कोई सरकार वैसा नहीं लिया है जैसा कि लालबहादुर से लेकर इंदिरा सरकार ने आजादी के बाद पंचवर्षीय योजना आरंभ के दिनों से 1975 तक यहां से लेती रही ।ऐसा भी हुआ है 60- 70 के दशकों में ताइवान का तायचुंग , आई आर 8 धान का प्रभेद हो कटक राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट तब एक साधारण कार्यालय से मिलता था । वही कनाडा से आयातित स्वामीनाथन का हरित क्रांति गेंहू समेत नील, उजली , पीली क्रांति का प्रयोग भूमि यही सरायकेला ही हुआ करता था ।बैंकों का राष्ट्रीय करण के साथ किसान को जोडा गया तब सरायकेल का यही स्टेट बैंक शाखा ही था- 1967 में , जिसके वित्त पोषण अवलोकन हेतु बम्बई से अधिकारी सरायकेला से बैलगाड़ी में बैठकर भंडारी साही गांव पहुंचे थे साथ में योजना आयोग के अधिकारी भी ।

सरायकेला खरसावां एवं सिंहभूम पूर्वी जिला औधोगीकरण होने के कारण किसानों की प्रति व्यक्ति आय भला आज कौन पुछता है ?परन्तु पूर्वी सिंहभूम उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी एवं सरायकेला उपायुक्त नितिश कुमार सिंह ने सोमवार को अपने इलाके के घाटशिला प्रखंड के धरमबहाल पंचायत अंतर्गत फुलडूंगरी गांव में समेकित बिरसा ग्राम विकास योजना के तहत संचालित कृषक पाठशाला का निरीक्षण किया वही सरायकेला के राजनगर डूमूरडीहा , चापड़ा पहुंचकर तसर , मशरूम, फलदार पौधा की खेती का मुआइना नितिश कुमार सिंह ने किया । दोनों ने किसानों के आय वृद्धि ,उत्पादन वृद्धि , रोजगारोन्मुख कार्यों का निरीक्षण भी भली भाती किया ।

इस अवसर पर जमशेदपुर उपायुक्त ने किसानों से संवाद स्थापित कर पाठशाला के लाभ, सम्भावनाओं एवं योजनाओं से जुड़कर उठाए जाने वाले कदमों पर चर्चा की। उपायुक्त ने किसानों से केसीसी (किसान कृषि ऋण) के आच्छादन की जानकारी ली तथा वंचित किसानों को इससे जोड़ने की प्रक्रिया बताई। उन्होंने कहा कि कृषक पाठशाला किसानों को उन्नत खेती, नई तकनीक एवं एफपीओ से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है। उन्होंने पदाधिकारियों एवं एनजीओ प्रतिनिधियों को निर्देश दिया कि आसपास के 9 गांवों के किसानों को एफपीओ से जोड़ें तथा किसानों को सक्रिय रूप से इन गतिविधियों में भागीदारी हेतु प्रोत्साहित करें। मौके पर कुछ किसानों द्वारा लैम्प्स में धान बिक्री के बाद भुगतान की दूसरी किश्त नहीं मिलने की शिकायत की गई, जिसपर उपायुक्त ने संज्ञान लेते हुए समयबद्ध कार्रवाई का आश्वासन दिया । इस क्रम में उन्होने कृषक पाठशाला में संचालित गतिविधियों तथा फसलों का अवलोकन किया तथा व्यवस्थित तरीके से कृषक पाठशाला का संचालन एवं किसानों को कृषि की उन्नत तकनीक से अवगत करने का निर्देश दिया ।

इसी क्रम में फुलडूंगरी में संचालित नोटबुक निर्माण कार्य से जुड़ी स्वयंसहायता समूह की महिलाओं से उपायुक्त ने संवाद किया। उन्होंने नोटबुक की गुणवत्ता की सराहना की तथा सप्लाई चेन, विपणन एवं डिजाइन सुधार पर चर्चा की।

उधर सरायकेला उपायुक्त नितिश कुमार सिंह ने आज औचक क्षेत्र भ्रमण के क्रम में राजनगर प्रखंड अंतर्गत राजनगर पंचायत स्थित कृषक पाठशाला का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान पाठशाला की आधारभूत संरचना, प्रशिक्षण कार्यक्रम, किसानों की सहभागिता एवं संचालित गतिविधियों की विस्तृत समीक्षा की गई। संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश दिया गया कि खाली पड़े पशु शेड में शीघ्र पशुओं की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, फलदार पौधों के बीच इंटर क्रॉपिंग को प्रोत्साहित किया जाए तथा बतख पालन (अंडा एवं मांस उत्पादन दोनों) को पुनः प्रारंभ कर किसानों की आय वृद्धि सुनिश्चित की जाए।

इसी क्रम में डुमरडीहा पंचायत स्थित चापड़ा तसर बागान का भी निरीक्षण किया निरीक्षण के दौरान स्थानीय लाभुकों से तसर उत्पादन की संपूर्ण प्रक्रिया जैसे – कोकून का संकलन, धागा निर्माण, विपणन की स्थिति एवं आय संवर्धन की संभावनाओं पर विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि तसर उत्पादन से जुड़े किसानों को तकनीकी सहयोग एवं विपणन तंत्र की सुदृढ़ व्यवस्था उपलब्ध कराई जाए, ताकि ग्रामीण स्तर पर अधिक से अधिक लोगों को रोजगार एवं आय संवर्धन के अवसर प्राप्त हो सकें।

धन, पद और शोहरत क्षणिक हो सकते हैं, पर आदर और सम्मान अमर धरोहर हैं

जीवन का वैभव धन, पद या शक्ति से नहीं मापा जाता, इसकी वास्तविक गरिमा उन मूल्यों से जन्म लेती है जो मनुष्य अपने भीतर सँजोकर रखता है। इन्हीं मूल्यों में आदर और सम्मान दो ऐसे रत्न हैं, जो किसी भी व्यक्तित्व को आभा से भर देते हैं।आदर हृदय का वह दीपक है, जिसकी लौ सामने वाले के अस्तित्व को प्रकाशित कर देती है। यह नम्रता का फूल है, जो विनम्र शब्दों से नहीं बल्कि विनम्र दृष्टि से खिलता है। जब हम अपने बुज़ुर्गों के अनुभव, गुरुओं की शिक्षा, बड़ों के मार्गदर्शन और छोटों की मासूमियत को सच्चे मन से स्वीकारते हैं, तभी आदर की भूमि हरी-भरी होती है। यही आदर रिश्तों की जड़ों में नमी भरता है और विश्वास की बेल को हरा-भरा बनाए रखता है। जिसे आदर मिला, वह महज़ सम्मानित नहीं हुआ, बल्कि वह हमारी आत्मा का अंग बन गया। सच तो यह है कि जहाँ आदर है, वहीं महानता स्वतः जन्म लेती है।सम्मान उस सौंधी महक की तरह है जो व्यक्ति की प्रतिष्ठा को चारों ओर बिखेर देता है। यह समाज का दर्पण है, जिसमें व्यक्तित्व की छवि साफ़ दिखाई देती है। दूसरों के श्रम, विचार और योगदान को स्वीकार करना, उनके अस्तित्व को मान्यता देना ही सच्चा सम्मान है। सम्मान मिलने पर आत्मा को गरिमा का अनुभव होता है और सम्मान देने वाला स्वयं और भी महान बन जाता है। यही कारण है कि जिस समाज में आपसी सम्मान पनपता है, वहाँ सहयोग, संवेदना और मेल-जोल स्वाभाविक रूप से गहराता है।आदर और सम्मान दोनों साथ मिलकर मानवीय जीवन का स्वर्णिम संगीत रचते हैं। आदर अंतरात्मा का स्पर्श है और सम्मान बाह्य जगत का आलोक। दोनों का संयोग ही पूर्णता है। आदर व्यक्ति की आत्मा में महानता का बीज बोता है और सम्मान उस बीज से उगे वृक्ष को समाज में छाया और फल प्रदान करता है। यही संतुलन रिश्तों को जीवंत बनाता है और समाज को एकता की डोर में बाँधता है।आज जब जीवन की गति तेज़ है और भावनाओं की गहराई कहीं खोती सी लगती है, ऐसे समय में आदर और सम्मान को संजीवनी की तरह अपनाने की आवश्यकता है। यही वे मूल्य हैं जो इंसान को उसकी सबसे सुंदर पहचान देते हैं। धन, पद और शोहरत क्षणिक हो सकते हैं, पर आदर और सम्मान अमर धरोहर हैं।वास्तव में, आदर वह महानता है जो भीतर को रौशन करती है और सम्मान वह प्रतिष्ठा है जो बाहर जगमगाती है। यही दोनों मिलकर मनुष्य को सम्पूर्ण और जीवन को सार्थक बनाते हैं।

डॉ.मुश्ताक अहमद शाह
सहज हरदा मध्य प्रदेश

हानिकारक ऑनलाइन गेमिंग पर प्रतिबंध: एक दूरदर्शी और विवेकपूर्ण क़दम

शम्स आग़ाज़

दुनिया तेजी से डिजिटल क्रांति की ओर बढ़ रही है। जीवन के हर क्षेत्र शिक्षा हो या स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था हो या राजनीति, मनोरंजन हो या सामाजिक संबंध सभी पर तकनीक का गहरा प्रभाव पड़ा है। इसी तकनीकी माहौल में, ऑनलाइन गेमिंग एक नई इंडस्ट्री और मनोरंजन का प्रभावी माध्यम बनकर उभरी है।शुरुआत में ये गेम्स केवल समय बिताने के लिए बनाए गए थे, लेकिन समय के साथ इनमें पैसे की बाज़ी और जुए जैसे नकारात्मक तत्व जुड़ते चले गए। इस प्रवृत्ति ने पूरी एक पीढ़ी को अपनी चपेट में ले लिया। खेल, जो एक स्वस्थ गतिविधि होनी चाहिए थी, अब कई व्यक्तियों और परिवारों के लिए संकट का कारण बन गई है।

भारत जैसे युवा आबादी वाले देश में, ऑनलाइन मनी गेम्स ने बहुत तेज़ी से अपनी जड़ें जमा लीं। ये गेम्स आसानी से अमीर बनने जैसे आकर्षक वादे करते थे, लेकिन इन वादों के पीछे छिपी सच्चाई यह थी कि असली जीत हमेशा उन कंपनियों की होती थी जो ये प्लेटफॉर्म चलाती हैं। आम उपयोगकर्ता अक्सर आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और नैतिक नुकसान उठाता है।कई युवा इन गेम्स के आदी हो गए। ये गेम्स नशे की तरह व्यक्ति को बार-बार अपनी ओर खींचते हैं। जीत की आशा उसे और खेलने के लिए प्रेरित करती है, और हार की स्थिति में नुकसान की भरपाई की लालसा उसे फिर से खेलने पर मजबूर करती है। इस तरह खिलाड़ी एक ऐसे चक्रव्यूह में फंस जाते हैं, जिसका अंत अक्सर कर्ज, पारिवारिक समस्याएं, और दुखद रूप से आत्महत्या जैसी घटनाओं में होता है।

आंकड़ों के अनुसार, भारत में लगभग 45 करोड़ लोग किसी न किसी स्तर पर इन गेम्स से प्रभावित हैं, जबकि 20 हजार करोड़ रुपये से अधिक का आर्थिक नुकसान दर्ज किया गया है। ये केवल आंकड़े नहीं हैं, बल्कि लाखों परिवारों की बर्बादी की कहानी है।

ऐसे में सरकार के पास इस खतरे को रोकने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था। अतः 21 अगस्त 2025 को संसद ने ऑनलाइन गेमिंग (प्रमोशन और रेग्युलेश) बिल 2025 पारित किया जो कि एक क्रांतिकारी और विवेकपूर्ण कदम है। यह कानून न केवल अवैध मनी गेम्स पर प्रतिबंध लगाता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि कौन से खेल वैध हैं और कौन से अवैध।

विधेयक के अनुसार, किस्मत पर आधारित गेम्स, ₹कौशल आधारित₹ कहे जाने वाले वे गेम्स जिनमें पैसे का लेनदेन शामिल हो, और इन दोनों का कोई भी मिश्रण सबको अवैध घोषित कर दिया गया है। इसके विपरीत, ई-स्पोर्ट्स, शैक्षणिक और सामाजिक गेम्स को बढ़ावा देने की बात कही गई है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सरकार का उद्देश्य मनोरंजन पर रोक नहीं बल्कि शोषण से सुरक्षा है।

इस कानून में कड़ी सज़ाओं का भी प्रावधान है। यदि कोई व्यक्ति या कंपनी ऐसे अवैध गेम्स चलाए या उनका प्रचार करे, तो उसे तीन साल तक की जेल और एक करोड़ रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। इसी तरह, अगर कोई

व्यक्ति या संस्था इन गेम्स के प्रचार अभियान में भाग लेती है, तो उसे दो साल तक की जेल और पचास लाख रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। बार-बार अपराध करने पर यह सज़ा पाँच साल की जेल और दो करोड़ रुपये तक का जुर्माना हो सकती है। ये अपराध गैर-जमानती और गंभीर माने जाएंगे, और पुलिस बिना वारंट गिरफ्तारी कर सकेगी।

इसके साथ ही, बैंक, यूपीआई और अन्य वित्तीय संस्थाओं को भी यह निर्देश दिया गया है कि वे इन अवैध गेम्स से जुड़े लेनदेन की अनुमति न दें। सरकार को अवैध वेबसाइट्स और ऐप्स को ब्लॉक करने का अधिकार होगा। साथ ही, एक ऑनलाइन गेमिंग प्राधिकरण भी गठित की जाएगी जो गेम्स का पंजीकरण करेगी, उन्हें श्रेणियों में विभाजित करेगी, और यह तय करेगी कि कौन सा गेम वैध है और कौन सा नहीं।

यह कानून भारत की सामाजिक और आर्थिक प्रगति के लिए कई स्तरों पर मील का पत्थर साबित हो सकता है। सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि परिवार आर्थिक बर्बादी से बचेंगे। युवा अपनी ऊर्जा रचनात्मक और सकारात्मक क्षेत्रों में लगाएंगे। राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे कम होंगे क्योंकि इन गेम्स का संबंध मनी लॉन्ड्रिंग और अन्य अपराधों से भी था। डिजिटल अर्थव्यवस्था को स्थिरता मिलेगी और ई-स्पोर्ट्स और शैक्षणिक गेम्स के ज़रिए नए रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

एक अहम सवाल यह भी है: क्या भारत का यह कदम अन्य देशों के लिए मिसाल बन सकता है? वास्तव में, कई देश पहले से ही इस समस्या से निपटने की कोशिश कर रहे हैं। चीन ने बच्चों के लिए गेमिंग समय की सीमा तय की है। सिंगापुर और दक्षिण कोरिया में भी कड़े नियम हैं। यूरोप के कई देशों ने लूट बॉक्सेस पर रोक लगाई है क्योंकि उन्हें जुए के समान माना जाता है। भारत ने इस विधेयक के ज़रिए एक कदम आगे बढ़ाया है। पूरे मनी गेम्स सिस्टम पर सख्त नियंत्रण स्थापित करके। इस तरह भारत न केवल अपने युवाओं की रक्षा कर रहा है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक नेतृत्वकारी भूमिका निभा रहा है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, ये गेम्स मानव मस्तिष्क के उस हिस्से को सक्रिय करते हैं जो इनाम और सज़ा के सिस्टम को नियंत्रित करता है। बार-बार जीत और हार की अस्थिरता व्यक्ति को ऐसे बांध लेती है जैसे कोई नशा हो। इसी वजह से इन गेम्स के पीड़ित अक्सर अवसाद, चिंता और अकेलेपन का शिकार हो जाते हैं। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह कानून केवल कानूनी नहीं, बल्कि चिकित्सा और मानसिक स्वास्थ्य के लिहाज़ से भी एक महत्वपूर्ण कदम है।

अदालतों ने भी समय-समय पर इस मुद्दे पर विचार किया है। कई बार उच्च न्यायालय और सुप्रीम कोर्ट में यह सवाल उठाया गया कि क्या ऑनलाइन रम्मी, पोकर या फैंटेसी गेम्स सिर्फ खेल हैं या जुआ? विभिन्न फैसलों में कहा गया कि यदि पैसे का लेनदेन शामिल हो, तो ये जुए की श्रेणी में आ सकते हैं। संसद ने इस विधेयक के ज़रिए इस भ्रम को समाप्त कर दिया है और स्पष्ट किया है कि पैसे से जुड़े गेम्स अवैध हैं।

ध्यान देने वाली बात यह भी है कि ऑनलाइन मनी गेम्स ने ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में भी अपनी पहुँच बना ली थी। सस्ते स्मार्टफोन और इंटरनेट पैकेज के कारण छोटे शहरों और गांवों के युवा भी इन जालों में फंस गए। शिक्षा और रोजगार के सीमित अवसरों की वजह से ये गेम्स उनके लिए अमीरी का सपना बन गए, लेकिन अंततः गरीबी और बदहाली ने उन्हें घेर लिया। यह विधेयक इन युवाओं को यह संदेश देता है कि सफलता का असली रास्ता मेहनत और शिक्षा है, न कि सट्टेबाज़ी।

इसी तरह, महिलाएं विशेष रूप से गृहिणियाँ भी इन खेलों की शिकार बनीं। खाली समय में इन ऐप्स पर आना, शुरुआती जीत, और फिर लगातार नुकसान ने कई घरों में कलह पैदा कर दी। रिपोर्ट्स के अनुसार, इन गेम्स ने पारिवारिक संबंधों में दरार डाल दी, तलाक के मामलों में वृद्धि हुई और घरेलू हिंसा के आंकड़े बढ़े। यह कानून न केवल युवाओं, बल्कि महिलाओं और परिवारों को भी सुरक्षा प्रदान करता है।

इसके अलावा, इस विधेयक ने डिजिटल कंपनियों और विज्ञापन एजेंसियों को भी स्पष्ट संदेश दिया है कि समाज को बर्बाद कर के लाभ कमाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। तकनीकी क्षेत्र में नैतिक मानदंडों की स्थापना आज के समय की आवश्यकता है। यह विधेयक इस सच्चाई को रेखांकित करता है कि डिजिटल प्रगति और मानवीय कल्याण एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।

इस कानून के लागू होने से एक बड़े सामाजिक परिवर्तन की उम्मीद की जा रही है। परिवार अपनी बचत सुरक्षित रख पाएंगे, युवा अपनी ऊर्जा शिक्षा और रचनात्मक गतिविधियों में लगाएंगे, और देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। इसके अतिरिक्त, डिजिटल प्लेटफार्मों पर पारदर्शिता और नैतिकता के मानक स्थापित होंगे, जिससे सामाजिक बुराइयों और आर्थिक शोषण का अंत संभव होगा।यह कानून न केवल व्यक्ति के कल्याण का संरक्षक है, बल्कि भारत को एक जिम्मेदार, सुरक्षित और विकसित डिजिटल समाज में बदलने की दिशा में एक ठोस कदम है।

पार्श्वनाथ पंचवटी में 31 अगस्त को होंगे आरडब्ल्यूए चुनाव, पारदर्शिता व सौहार्द बनाए रखने पर जोर

वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह की अध्यक्षता में हुई अहम बैठक, गणमान्य नागरिकों ने की भागीदारी

आगरा, संजय साग़र सिंह। पार्श्वनाथ पंचवटी रेज़िडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) के आगामी 31 अगस्त को प्रस्तावित पदाधिकारी चुनाव को लेकर रविवार को एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रशासनिक एवं चुनाव समिति के अध्यक्ष उपेंद्र सिंह ने की। इस अवसर पर चुनाव प्रक्रिया को पारदर्शी, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण बनाने को लेकर विभिन्न दिशा-निर्देश तय किए गए।

बैठक में बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिकों ने भागीदारी की। प्रमुख रूप से आर. पी. सिन्हा, आर. के. त्रिखा, देवेंद्र गुप्ता, पवन शर्मा, कपिल कथूरिया, डॉ. अरुण सिंह, नरेंद्र सिंह, श्रीमती सुमन लता यादव, मुकेश गुप्ता, गिरधारी लाल भगत्यानी, आर. एस. कोटिआ, पृथ्वी सिंह रावत, डॉ. संजीव आनंद, माधव कटारा, श्रीमती सुमन शर्मा, धर्मेंद्र सारस्वत, दीपक गुप्ता, एल. आर. पाठक, मोहन पाराशर, राजेश गौतम एवं मोहम्मद इस्लाम जैसे प्रतिष्ठित सदस्य उपस्थित रहे।

बैठक में यह संकल्प लिया गया कि चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता और लोकतांत्रिक मर्यादाओं का पूर्ण पालन सुनिश्चित किया जाएगा। निवासियों एवं प्रत्याशियों से भी सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखने की अपील की गई।

"साफ नीयत, पारदर्शी चुनाव – यही हमारी पहचान₹ को मूल मंत्र बनाते हुए समिति ने यह स्पष्ट किया कि लोकतांत्रिक परंपराओं को सुदृढ़ करना ही संगठन का लक्ष्य है।

शून्य हूँ मैं

शून्य हूँ मैं, न कोई आकार,
दिखने में तो बस हूँ बेकार।
साथ किसी के पीछे खड़ा,
बना दूँ दस, सौ, हजार।।

रहकर साथ यूँ लगे लगाऊँ,
गिरते को भी ऊँचाइयाँ दिलाऊँ।
पर गलती से यदि टकराये,
मूल्य सभी का मिटा ही जाऊँ।।

सिखा रहा जग को यह पाठ,
सही जगह रहो तो बढ़ेगा साथ।
मैं शून्य हूँ, पर अर्थ महान,
मैं साथ खड़ा तो दूँ सम्मान।।

सौरभ संदेश मेरा ये मानो,
सही स्थान पर रह पहचानो।
योग्यता, अनुशासन, साथ सही,
तभी बढ़ेगी शक्ति अनंत कहीं।।

डॉ. सत्यवान सौरभ

पार्टी फंड हड़पने के लिए नवीन के साथ साये की तरह रह रहे हैं पांडियन : बीजेपी बिधायक सरोज

मनोरंजन सासमल , वरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: पार्टी फंड हड़पने के लिए पांडियन नवीन के साथ साये की तरह रह रहे हैं। आज भाजपा विधायक सरोज पाढ़ी ने ऐसी ही एक विस्फोटक टिप्पणी की। उन्होंने कहा, कोई नहीं कह सकता कि बीजद पार्टी फंड के लिए नवीन पटनायक का क्या होगा। आम तौर पर चर्चा यही है कि पार्टी फंड के लिए नवीन की जान भी जा सकती है।पांडियन किसी को भी नवीन के करीब नहीं आने दे रहे हैं ताकि कोई उनके करीब आ जाए। इसीलिए पांडियन ने नवीन के साथ रहने वालों को अपने आवास से दूर रखा है।

भाजपा विधायक सरोज पाढ़ी ने कहा, जहाँ राज्य की जनता या बीजद का कोई भी नेता पांडियन को स्वीकार नहीं करता, वहाँ पांडियन द्वारा नवीन को जबरन रोके रखने के पीछे क्या स्वार्थ है, यह स्पष्ट हो गया है। बीजद कोष में 1000 करोड़ रुपये से ज़्यादा हैं और सबकी नज़र है। अगर नवीन पांडियन दंपत्ति को ज़िम्मेदारी देते हैं, तो वे उस पैसे के मालिक बन जाएँगे। इसीलिए पांडियन दंपत्ति अपने गुट के साथ बीजद में प्रवेश करने की योजना बना रहे हैं। राजा स्वैन जैसे वरिष्ठ नेता का पांडियन द्वारा इस तरह इस्तेमाल करना किसी को भी पच नहीं रहा है। सुनने में आया है कि नवीन पटनायक के भाई ने आते ही पांडियन को डाँटा है। उन्होंने साफ़ कहा, पार्टी में जो होगा, हम समझ जाएँगे। आपने कहा, आप कौन हैं?

ग्राम पंचायत प्रीत नगर में लोगों को आ रही सभी समस्याएं जल्द होगी हल: करमजीत सिंह रिंटू

अमृतसर, 25 अगस्त (साहिल बेरी)

इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन एवं नॉर्थ विधानसभा क्षेत्र से ₹आप₹ के इंचार्ज कर्मजीत सिंह रिंटू ने आज ग्राम पंचायत प्रीत नगर के लोगों की समस्याएं सुनी। करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि ग्राम पंचायत प्रीत नगर में लोगों को आ रही सभी समस्याओं का जल्द हल करवा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पंजाब की आम आदमी पार्टी की सरकार लोगों को प्रत्येक तरह की सुविधाए उपलब्ध करवा रही है। उन्होंने कहा कि नशो पर काबू पाने के लिए सभी तरह के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रीत नगर क्षेत्र में सीवरेज डिसिल्टिंग और गलियों को बनवाने का कार्य शुरू करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में आने वाले दिनों में कम्युनिटी हॉल का भी निर्माण शुरू करवा दिया जाएगा। जहां-जहां भी स्ट्रीट लाइट की कमी है, वहां पर नई स्ट्रीट लाइट लगवा दी जाएगी।करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि पंजाब सरकार के अच्छे कार्यों के कारण ग्राम पंचायत प्रीत नगर द्वारा आम आदमी पार्टी में शामिल होकर जो उत्साह दिखाया है, उसके लिए वह सभी के धन्यवादी हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार की सभी योजनाओं को लोगों तक पहुंचाया जा रहा है। इस अवसर पर रितेश शर्मा, बख्शीश सिंह, सुखदेव सिंह, कुलदीप सिंह, सुविंदर सिंह, जगरूप सिंह, कमलदीप कौर और भारी संख्या में क्षेत्र के लोग मौजूद थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023